—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
— सहायक —
मु० ग़ुफ़रान नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522-2740406
फैक्स : 0522-2741231
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/—
वार्षिक	रु० 100/—
विशेष वार्षिक	रु० 500/—
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त
व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

H.I.Computer Institute - 9335214913

हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

जनवरी, 2008 वर्ष 6 अंक 11

क़त्ल मोमिन का किया जिसने सुनो
नार है उस का ठिकाना जान लो
कुफ़्र से इस्लाम लाया या वो हो
हब्शी वो हिन्दा सा जैसा दोस्तो
और जो राहे ख़ुदा में क़त्ल हो
वो है ज़िन्दा उस को मुर्दामत कहो
हो शहीदों से मुझे उल्फ़त मुदाम
रहमतें उतरा करें उन पर मुदाम

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक नज़र में

❐ इनसानीयत	सम्पादकीय	3
❐ कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मंज़ूर नोमानी	5
❐ बैबी तस्लीमा	इदारा	6
❐ प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	7
❐ भारत का संक्षिप्त इतिहास	स० अबूज़फर नदवी	9
❐ मक्का की स्पेलिंग	इदारा	11
❐ उड़न तश्तरी की सच्चाई	अनुवादक अब्दुर्रहीम सिद्दीकी	13
❐ गाजर विटामिन का बेहतरीन स्टाक	इदारा	14
❐ हज़रत अबू बक्र (रज़ि०)	इरफान फारूकी नदवी	15
❐ आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा	20
❐ चायनामा	कमर उस्मानी	22
❐ शरीअ़त के ख़िलाफ़ फ़ैसला क़बूल नहीं	सुमय्या इम्तियाज़	23
❐ मौलाना अब्दुल करीम पारिख	शाहिद हुसैन	24
❐ अंग प्रत्यारोपण और इस्लाम	ग्रहीत	26
❐ पथरी का सबब चिकनी गिजा	इदारा	27
❐ सर्दियों में क्यों हाल बेहाल हो जाता है	विनय राणा	28
❐ नअ़त	कारी हिदायतुल्लाह सिद्दीकी	29
❐ मानवता की अर्थी	साकिब अब्बासी	30
❐ बन्दों के हुक़ूक़	मौ० आशिक इलाही	31
❐ गणतंत्र दिवस	मु० हसन अंसारी	33
❐ एक गुमनाम स्वतंत्रा सैनानी	एम० हसन अन्सारी	35
❐ हज़रत हुसैन रज़ियल्लाह अ़न्हु	इब्नि हजर अस्कलानी	38

❐❐❐

(सम्पादक का लेखकों से सहमत होना आवश्यक नहीं है)

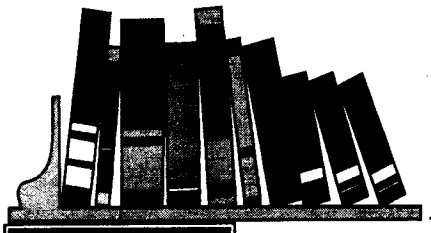

इन्सानीयत (मानवता)

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

सुब्ह् नाश्ते के साथ अख़बार भी देखता हूं एक हेडिंग पर नज़र टिक गई, "देवी के हुक्म पर बाप ने की बेटी से शादी" "दिमाग़ चकरा गया फिर सोचा कोई जंगली होगा अल्लाह की लअ़नत हो उस पर । ख़बर पढ़ी तो ज़ालिम का नाम हफ़ीज़ुद्दीन अ़ली लिखा था। फिर दिमाग़ को झटका लगा। आगे था कि देवी ने ख़्वाब (स्वप्न) में उस से कहा था। खुदा की पनाह। कहां गई इन्सानीयत? यह वह इंसानीयत है जिस पर हैवानीयत भी लअ़नत करे और शैतान उछले कूदे और नाचे।

आफ़िस आया फ़ोन की घन्टी बजी, हलौ! अस्सलामु अ़लैकुम ।

व अ़लैकुमुस्लाम

कौन?

मैं आप के क़रीब में रहता हूं, आपके मदरसे का पड़ोसी हूं। कल आप के मदरसे में बारात ठहराना है।

नदवे में कोई बारात तो नहीं ठहरती, यहां आप बारात कैसे ठहरा सकते हैं?

मैं ख़ालिद पूर (फ़र्ज़ी नाम) से बोल रहा हूं। जहां आप का मदरसा है।

तो वहां मदरसे में तो पढ़ाई चल रही है। मदरसा कोई शादी घर तो नहीं है।

हां मगर मेरी बारात ठहरेगी।

अल्लाह के बन्दे मदरसे में पढ़ाई हो रही है बारात कैसे ठहरेगी?

मदरसे की बुन्याद रखी गई तो फ़ुलां के साथ मैं ने भी ईंट रखी थी।

हां आप ने ईंट रखी थी, आप के पड़ोस में जब मदरसा क़ाइम हो रहा था तो आप को ईंट रखनी ही थी, मदरसा आप का है, लेकिन क्या आप तअ़लीम रोक कर बारात ठहराएंगे? ऐसा नहीं होना चाहिए।

अगर मेरी बारात न ठहरी और किसी की बारात ठहरी तो बुरा होगा, बुरा होगा, तब मैं बताऊंगा।

मेरे भाई ! ख़फ़ा न हों मदरसा आप का है। बच्चों की तअ़लीम के लिए है छुट्टी के औक़ात में आप बारात ठहरा सकते हैं।

नहीं मुझे तो सुब्ह् से चाहिए।

मदरसा बन्द तो नहीं किया जा सकता।

अच्छा तो मैं उस वक़्त बताऊंगा जब कोई बारात ठहरेगी।

भाई मेरे मदरसा आप का है, बारात आ़म तौर से १२ बजे आती है। मदरसा एक बजे तक का है, मैं हिदायत करूंगा कि मदरसे में बारह बजे छुट्टी कर दी जाए और आप की बारात ठहर जाए, मगर उन्हों ने ग़ुस्से से फ़ोन काट दिया।

कभी एक पैसा चन्दा नहीं, कभी कोई तआ़वुन नहीं बुन्याद में एक ईंट उन से भी रखवा ली

गई जिस के बदले में तअ़लीम रोक कर ज़बरदस्ती बारात ठहराना चाहते हैं। यह भी इन्सानों की एक क़िस्म है।

एक इन्सान वह भी हैं जो इन मदारिस को लाखों गिन देते हैं जब कि उन को यह भी नहीं मअ़लूम कि मदरसा पेड़ के साये में हैं या छप्पर के नीचे घर की चौपाल में हैं या अपनी इ़मारत में।

अख़बार में एक ख़बर पढ़ी कि देवरिया में दो बच्चियां बिलक बिलक कर ऐसा रो रही थीं कि देखने वालों का कलेजा फटा जा रहा था। एक बच्ची पांच साल की थी दूसरी लगभग तीन साल की, ढारस दिला कर बहुत पूछने पर बड़ी ने अपना नाम रूबीना और छोटी का नाम शबीना बताया। बताया कि अब्बा हम लोगों को रेल में बिठा कर कहा कि कुछ खाने पीने का सामान ले आएं इतने में गाड़ी छूट गयी हम खिड़की से झांकते रह गये, अब्बा का नाम नबी मियां बताया। उन पर तरस खा कर एक हिन्दू औ़रत की इन्सानीयत जोश में आई और उन बच्चियों को अपने घर ले जा कर परवरिश कर रही है। ख़ुदा करे उन के अब्बा अम्मा उन तक पहुंचें और अपने साथ ले जाएं।

बहुत दिनों पहले अंग्रेज़ी की एक पोयम पढ़ी थी जिस में दिखाया गया था कि एक ज़ालिम स्कूल से निकली एक बच्ची को फुस्ला कर उठा ले गया और ले जाकर दूर के एक जंगल में छोड़ आया। आगे पोएट ने जो उस का ख़याली नक़्शा खींचा था कि किस तरह रोई, मां बाप को पुकारा, फिर भूख प्यास से बे क़रार हो कर रोई, फिर कितनी तकलीफ़ों के बअ़द बेहोश हुई, फिर किस तरह उस की जान निकली पोएट ने तो पोएम कहने में अपनी निपुणता दिखाई और मुझ जैसे पढ़ने वालों का बुरा हाल किया।

एक दरवेश रो रो कर अल्लाह तआ़ला से मुख़ातब था ऐ अल्लाह तू ने इन्सानों को जलाने के लिए जहन्नम को क्यों बनाया यही रट लगाते हुए वह बेहाल हो गया उस पर ऊंध आ गई। स्वप्न में देखा कि एक बुज़ुर्ग (महापुरूष) जो सूरत शक्ल से भी बुज़ुर्ग लग रहे थे। कुछ नवजवान उन पर तीर बरसा रहे थे। दरवेश चीख़े अरे यह कौन हैं और यह ज़ालिम लोग कौन हैं? किसी ने कहा यह फुलां बुज़ुर्ग हैं जिन की बुज़ुर्गी मुसल्लम (मानी हुई) है और यह ज़ालिम दौलत व माल के भूखे हैं। दरवेश चीख़ पड़ा मेरे रब। मैं समझ गया आपने ऐसे ही ज़ालिमों के लिए जहन्नम बनायी है। बेशक कुछ लोग सूरत तो इन्सान की रखते हैं लेकिन अपने करतूतों से शैतान से भी आगे हैं।

इन्सानीयत की दो क़िस्में हैं, उन इन्सानों में भी इन्सानीयत है जो दूसरे की दुख पीड़ा देखकर बे चैन हो जाते हैं और तन मन धन से दूसरों की पीड़ा हरने में लग जाते हैं उन का नअ़रा (नादि) होता है "वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे"

उनका कहना है :

सहानुभूति चाहिए महाविभूति है यही।

वह दूसरे के दुखों और आवश्यकताओं को अपने दुखों और अपनी आवश्यकताओं से पहचानते हैं, यह इन्सानीयत बड़ी क़ाबिले क़द्र है, इस्लाम ने इस को क़द्र की निगाह से देखा है, इस्लाम के पैग़म्बर ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इस तरह़ की इन्सानीयत का साथ दिया था और ह़िल्फ़ुल फ़ुज़ूल में ह़िस्सा लिया था। उसी से सबक़ लेते हुए हमारे मौलाना अ़ली मियां साह़िब (रह़०) ने "पयामे इन्सानीयत" तंज़ीम काइम की जो माशा अल्लाह अपना काम कर रही है जिस में ज़ात पात धर्म मज़हब का लिहाज़ किये बिना हिन्दू मुस्लिम, सिख, ईसाई सब

(शेष पृष्ठ ८ पर)

क़ुर्आन की शिक्षा

मौ० मु० मंजूर नोमानी

ख़ुदावंदी हिदायत की इताअ़त व पैरवी

अगरचे यह ह़क़ीक़त है कि ख़ुदा की ख़ुदाई को जान लेने और बन्दों की हिदायत के लिए उस के क़ायम किये हुए रिसालत के सिलसिले को मान लेने और उस पर ईमान ले आने के बाद ख़ुद ब ख़ुद बन्दे के लिए यह लाज़िम (ज़रूरी) हो जाता है कि वह अपने संबंध में यह उसूली (मूल) फ़ैसला करे कि इस दुन्या में मुझे अल्लाह के हुक्मों और उस की नाज़िल की हुई हिदायत की पैरवी करते हुये और उस के ताबे (अधीन) रह कर अपनी ज़िन्दगी गुज़ारना है। लेकिन क़ुरआने–मजीद सिर्फ़ इस आवश्यकता पर ही बस नहीं करता बल्कि वह मुस्तिक़िल तौर से भी इसकी दावत देता है और पूरी ताकीद के साथ जगह–जगह इस का मुतालबा (मांग) करता है कि इन्सानों को चाहिए कि वे ख़ुदा की हिदायत और उस के हुक्मों की (जो तत्कालीन पैग़म्बर के ज़रिये अल्लाह की तरफ़ से आये उनकी) पैरवी को ज़िन्दगी का उसूल बनायें। नजात (मुक्ति) व फ़लाह (कामयाबी) की यही राह है और इसके अ़लावा हर रास्ता हलाकत व बरबादी का रास्ता है।

सूरए अन्आ़म में फ़र्माया गया :

तर्जमा : ऐ पैग़म्बर! आप मेरे बन्दों को बता दीजिए कि अल्लाह की उतारी हुयी हिदायत ही ज़िन्दगी की सही राह है और हम सब को हुक्म है कि पर्वरदिगारे आ़लम के हुक्मों को मानें। (अनआ़म : ७१)

और सूरए–अ़राफ के बिल्कुल शुरू में फ़र्माया गया :–

तर्जमा : उस हिदायत की पैरवी करो जो उतारी गयी है तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से और उसके सिवा और आक़ाओं की पैरवी न करो। (क्योंकि ह़क़ीक़ी आक़ा और रब सिर्फ़ वही है)। (अ़राफ़ : ३)

तर्जमा : और मुंह करो अपने रब की तरफ़ और उस के हुक्म मानों इस से पहले कि आजाये तुम पर उस का अ़ज़ाब और फिर कोई तुम्हारी मदद न कर सके। और इत्तिबा (पैरवी) करो उस बेहतरीन हिदायत की जो उतारी गयी है तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से, इस से पहले कि आजाये तुम पर अचानक अ़ज़ाब और तुम को ख़बर भी नह हो। (ज़ुमर : ५४, ५५)

यह तो ख़ुदावन्दी हिदायत के इत्तेबा की ताकीद थी (क़ुरआने मजीद में इन आयतों के अ़लावा भी अतीअुल्लाह व अतीअुर्रसूल या इसी अर्थ वाले शब्दों में भी जगह जगह इस का मुतालबा किया गया है।

अब मानने और न मानने वालों का अंजाम भी क़ुरआन ही की ज़बान से सुनिये सूरए फ़त्ह में इर्शाद है :–

तर्जमा: जो लोग हुक्म बरदारी करेंगे अल्लाह और उसके रसूल की और चलेंगे उन की हिदायत पर उन को पहुंचायेगा अल्लाह, बहिश्ती बाग़ात में, जिन के नीचे नहरें जारी हैं। और जो न मानेंगे और ह़क़ की इस राह से मुड़कर चलेंगे, उन को अल्लाह तआ़ला इस जुर्म की दर्दनाक सजा देगा। (अल फ़त्ह : १७)

और दूसरी जगह मानने वालों के बारे में फ़र्माया गया :

तर्जमा : और जो लोग ताबेदारी करें अल्लाह और उसके रसूल की तो उन्होंने बड़ी कामयाबी ह़ासिल की। (अहज़ाब : ७१)

और सूरए निसॉअ में इस 'बड़ी कामयाबी" (फ़ौजुन अ़ज़ीम) की तफ़सीर व तशरीह़ इस तरह़ फ़र्मायी गयी है।

तर्जमा: और जो बन्दे फ़र्माबरदारी करें अल्लाह और उसके रसूल की, तो वे अल्लाह के उन ख़ास बन्दों के साथ होंगे जिन पर उस का ख़ुसूसी इनाम है यानी अम्बिया (नबी) व सिद्दीक़ीन और शुहादाअ (शहीद) व सालिहीन और क्या अच्छे हैं ये रफ़ीक (साथी) यह उन पर फज्ल होगा अल्लाह की तरफ से और अल्लाह काफी है जानने वाला। (अन्निसा : ६९, ७०)

और उन खुशनसीब बन्दों के बारे में जिन्होंने हर तरफ़ से रूख़ मोड़ के और दुन्या के सारे तरीक़ों को छोड़ के अल्लाह की हिदायत की पैरवी ही को अपनी ज़िन्दगी का उसूल बना लिया है, सूरए मुअ्मिन में ज़िक्र फ़र्माया गया

है कि अल्लाह के वे ख़ास ख़ास मुक़र्रब फ़रिश्ते (हामेलीने–अ़र्श व मन् हौलहू) जिन्हें खुदा की बारगाह में हर वक़्त की हाज़िरी नसीब रहती है, वे अल्लाह की हम्द व तसबीह के साथ उन बन्दगाने–ख़ुदा के लिए बल्कि उन के तुफ़ैल में उन के आबा–व–अजदाद (पूर्वज) और बीवी बच्चों के लिए भी हर दम ख़ैर की दुआ करते रहते हैं। क़ुरआने मजीद में उन की दुआ के शब्द भी नक़्ल किये गये हैं। पढ़िये और बार–बार पढ़िये :

तर्जमा: ऐ पर्वरदिगार ! तेरा इल्म और तेरी रहमत हर चीज़ को मुहीत (व्यापत) है। पस तू अपने इन बन्दों की मग़फ़िरत फ़र्मा दे जिन्होंने तेरी तरफ़ रूख़ किया और तेरी हिदायत की पैरवी की और तेरी बताई हुई राह पर चले। और दोज़ख़ के अ़ज़ाब से उन को बचाले। ऐ पर्वरदिगार! और उन ग़ैर–फ़ानी जन्नतों में उनको पहुंचा दे जिन की तू ने उन से वादा किया है। और उनके मां–बाप और उन के बीवी–बच्चों में से, जो भी अच्छे हैं, उनको भी उन के साथ जन्नत में रख। तू ज़बरदस्त हिकमत वाला है और तकलीफ़ों और बुराइयों से उनको बचा और क़ियामत के दिन जिन को तू ने तकलीफ़ों से बचाया तो उन पर तेरी रहमत हुयी और उन की बड़ी कामयाबी है। (मोमिन : ७,८,९)

गोया अल्लाह के ये बुलन्द मर्तबे वाले मुकर्रब फरिश्ते नियुक्त हैं कि अल्लाह की बन्दगी और उसके हुक्म बरदारी वाली ज़िन्दगी गुज़ारने वाले बन्दों के हक़ में यह दुआएं करते रहें और ज़ाहिर है कि जिस अल्लाह ने उन्हें इस दुआ पर मामूर (नियुक्त) फ़र्माया है और अपनी हम्द व तसबीह के साथ इस दुआए–ख़ैर को उन का वज़ीफ़ा (जाप) बनाया है वह उन की इस दुआ को क्यों न क़बूल करेगा, बल्कि कुरआने मजीद में यह दुआ इसी लिये ज़िक्र की गयी है कि लोगों को मालूम हो कि अल्लाह के जो बन्दे अल्लाह की बन्दगी वाली ज़िन्दगी गुज़ारते हैं और इस दुन्या में उस की हिदायत के पाबन्द हो कर रहते हैं अल्लाह के नज़दीक उन का मर्तबा और मक़ाम यह है कि उस ने अपने मुक़र्रब तरीन फ़रिश्तों को इन का दुआ गो (दुआ करने वाले) बना दिया है और उनके लिए दुआए–ख़ैर करना, अपनी हम्द–व–तसबीह की तरह का उन का वज़ीफ़ा (जाप) मुक़र्रर फ़र्माया है।

तर्जमा : और इन से ज़ियादा गुमराह और भटका हुआ कौन है जो अल्लाह की हिदायत से हट कर अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी करें, अल्लाह ऐसे ज़ालिमों को हिदायत नहीं देता। (क़सस : ५०)

और सूरए फ़ुरक़ान में फ़रमाया गया :

तर्जमा : ज़रा इन बदनसीबों को देखो जो (ख़ुदा की बन्दगी और उसकी हिदायत की पैरवी छोड़ कर) अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशों (कामासक्त) के परिस्तार हो गये हैं, क्या तुम उन को संभालने का ज़िम्मा ले सकते हो। (वे हरगिज़ ठीक न होंगे) क्या तुम्हारा ख़्याल है कि उन में से बहुत से कुछ सुनते और समझते हैं? नहीं ! वे तो बस बे अ़क़्ल जानवरों की तरह हैं बल्कि उन से भी ज़ियादा गुमराह हैं। (अलफ़ुर्क़ान : ४३, ४४)

बेटी तस्लीमा के नाम

इदारा

बेटी तस्लीमा वह दिन याद करो जिस दिन तुम इस दुन्या में आई, तुम्हारे कानों में अज़ान व इक़ामत कही गई, तस्लीमा नसरीन नाम रखा गया, मुस्लिम मां ने पाला पोसा बड़ा किया, पढ़ाया लिखाया, उन्होंने सहीह कहा समझो या न समझो क़ुर्आन का पाठ करो पुण्य होगा।

क़ुर्आन अल्लाह का कलाम है, अल्लाह ने इसे अपने अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर उतारा और उनही के द्वारा इस का शाब्दिक तथा व्यवहारिक अर्थ सहाबा को समझाया। क़ुर्आन का वास्तविक अर्थ अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के वास्तविक अनुयायी आ़लिम के द्वारा ही समझा जा सकता है। बेटी तस्लीमा को यदि क़ुर्आन समझना है तो वह अपने पापों की क्षमा याचना कर के किसी अच्छे आ़लिम से क़ुर्आन पढ़ें और अगर उन को अपने ज्ञान पर घमण्ड हो तो हमारे ज़ाकिर नायक साहिब का चैलेंज स्वीकार करें। मगर वह याद रखें उनकी यह सुन्दरता तथा तरूणिमा क्षणिक है बुढ़ापा आएगा मृत्यु होगी यदि तौबा नहीं की है तो दूसरे जीवन में वही होगा जिसकी सूचना क़ुर्आन व हदीस ने दी है। अर्थात जहन्नम में जलना।

अल्लाह को राज़ी करने तथा मोक्ष प्राप्त करने में क़ुर्आन ने औरतों तथा मर्दों में कोई अंतर नहीं रखा है अलबत्ता सामाजिक व्यवहार तथा प्रबन्ध में पुरूषों को श्रेष्ठ बताया है। क्या यह सत्य नहीं है कि मासिक धर्म केवल स्त्रियों को आता है पुरुषों को नहीं, स्त्रीयों को पुरूष ढांकता है स्त्री पुरूष को नहीं, गर्भ का भार स्त्री उठाती है पुरूष नहीं, बच्चा जनने की पीड़ा स्त्री सहन करती है पुरूष नहीं, प्रसव रक्त स्त्री को आता है पुरूष को नहीं, शिशु को दूध स्त्री पिलाती है पुरूष नहीं इसी प्रकार के कारणों से पुरूष को सामाजिक व्यवहार में क़ुर्आन ने श्रेष्ठ घोषित किया है। इस के साथ यह भी सत्य है कि एक स्त्री जब अपने स्वस्थ्य बच्चे को दूध पिला रही होती है तो उस समय उस को जो आनन्द मिलता है वह एक सम्राट को अपने सिंहासन पर नहीं परन्तु खेद है तस्लीमा नसरीन पर कि वह इस आनन्द से वंचित हैं।

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

उम्मे ऐमन (र०) की मुलाक़ात के लिए हज़रत अबू बक्र (र०) व हज़रत उमर (र०) का जाना

हज़रत अनस से रिवायत है कि हज़रत अबू बक्र (र०) ने आं हज़रत (सल्ल०) की वफ़ात के बाद हज़रत उमर (र०) से कहा आओ उम्मे ऐमन (र०) की मुलाक़ात को चलें जैसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उनसे मुलाक़ात को जाया करते थे। जब वह दोनों पहुंचे तो वह रोने लगीं। दोनों हज़रात ने कहा, आप क्यों रोती हैं। क्या आप नहीं जानती कि अल्लाह के पास जो चीज़ है वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लिए ज़ियादः बेहतर है। वह बोलीं इस लिए नहीं रोती, मैं यह जानती हूं कि जो अल्लाह के यहां है वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लिए बेहतर है। लेकिन मुझे इस लिए रोना आता है कि वही का सिलसिला बन्द हो गया। इस बात को सुन कर दोनों का भी दिल भर आया और दोनों उनके साथ रोने लगे। (मुस्लिम)

बूढ़े की अ़िज़्ज़त की वजह से बुढ़ापे की अ़िज़्ज़त

हज़रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जो जवान किसी बूढ़े की अ़िज़्ज़त उसके सिन के लिहाज़ से करेगा तो अल्लाह तआ़ला उसके लिए भी किसी शख़्स को मुक़र्रर करेगा कि जो उसके बुढ़ापे के वक़्त उसकी अ़िज़्ज़त करे। (तिर्मिज़ी)

मुसलमान भाई से मुलाक़ात की फ़ज़ीलत

हज़रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, एक आदमी अपने मुसलमान भाई की मुलाक़ात के लिए दूससी बस्ती रवाना हुआ। अल्लाह तआ़ला ने उसके रास्ते पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर कर दिया। जब उसके पास से गुज़र हुआ तो फ़िरिश्ते ने कहा, कहां का इरादः रखते हो? उसने जवाब दिया मैं फ़ुलां बस्ती में अपने भाई से मिलने जाता हूं। फ़िरिश्ते ने कहा, क्या उसने तुम पर कोई इह्सान किया है जो उस को निभाते हों? उसने कहा नहीं, मुझको उससे लिल्लाही मह्ब्बत है। फ़िरिश्ता बोला, मैं अल्लाह का क़ासिद हूं, बेशक अल्लाह तआ़ला ने तुम से मह्ब्बत की जैसे तुमने उस से अल्लाह के लिए मह्ब्बत की। (मुस्लिम)

मरीज़ की इ़यादत और मुसलमान की ज़ियारत की फ़ज़ीलत

अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जो किसी मरीज़ की इ़यादत करता है या अल्लाह की ख़ुशी की ख़ातिर किसी मुसलमान भाई से मुलाक़ात करने चलता है, तो एक पुकारने वाला पुकारता है, तू मुबारक है। तेरा चलना मुबारक है। तूने जन्नत में एक जगह बना ली।" (तिर्मिज़ी)

अच्छा हमनशीन और बुरा हमनशीन

हज़रत अबू मूसा (र०) अशअ़री से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया अच्छे हमनशीन और बुरे हमनशीन की मिसाल ऐसी है जैसे मुश्क उठानेवाले और धौंकनी फूंकनेवाले की। मुश्क उठाने वाला या तुमको कुछ देगा या तुम उससे खरीदोगे या उसकी खुशबू ही पाओगे और धौंकनी फूंकनेवाला या तो तुम्हारे कपड़े जलायेगा या उससे बुरी बू पाओगे। (बुख़ारी–मुस्लिम)

औ़रत की दीनदारी सबसे बड़ी ख़ुसूसियत है

हज़रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (स०) ने फ़रमाया, औ़रत से चार ख़ुसूसियत की बिना पर निकाह़ किया जाता है। उसके माल, नसब, खूबसूरती या दीन की वजह से। पस तुम दीनदार औ़रत पसन्द करो। ख़ाक–आलूद हों तुम्हारे हाथ। (यह मह्ब्बत में कहा जाता है।)

जिबरील (अ०) से मुलाक़ात की ख़्वाहिश

हज़रत इब्नि अ़ब्बास (र०) से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने ज़िबरील (अ०) से फ़रमाया, हमसे जितना मिलते हो उससे ज़ियादा मिलने में कौन सी चीज़ मानिअ़ है। तो यह आयत उतरी।

व मा नतनज़्ज़लु इ्ल्ला बिअम्रि रब्बिक लहू मा बैन अैदीना व माख़ल्फ़ना ...

हम नहीं उतरते मगर तुम्हारे रब के हुक्म से उसी के लिए जो हमारे

सामने है और जो हमारे पीछे है।

तुम्हारा खाना परहेज़गार आदमी खाये

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (र०) से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया साथ रहो तो मोमिन के रहो और तुम्हारा खाना परहेज़गार ही खाये। (अबूदावूद—तिर्मिजी)

दोस्त का इन्तिख़ाब

हज़रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है। पस आदमी को देख लेना चाहिए कि किस से दोस्ती करता है। (अबू दावूद – तिर्मिज़ी)

जो जिसको चाहता है उसी के साथ होगा

हज़रत अबू मूसा (र०) अशअरी से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया आदमी उसके साथ होगा जिसको चाहता है। (बुख़ारी—मुस्लिम)

एक रिवायत में है कि एक अ़रबी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा, क़ियामत कब आयेगी? आपने फ़रमाया तुमने उसके लिए क्या सामान किया है? उसने कहा, मैं अल्लाह और उसके रसूल से मह़ब्बत करता हूं। आपने फ़रमाया, तुम उसी के साथ होगे जिससे मह़ब्बत करते हो। (बुख़ारी—मुस्लिम)

एक और रिवायत में है कि मैंने उसके लिए कोई सामान नहीं किया, न ज़ियदः रोज़े हैं, न नमाज़, न सदक़ा। लेकिन मुझे अल्लाह और उस के रसूल से मह़ब्बत है।

आ़लमे अरवाह़ में मुलाक़ात

हज़रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, लोग कानें हैं जैसे सोने—चांदी की कानें होती हैं। जो जाहिलियत में शरीफ़ थे वह इस्लाम में भी शरीफ़ हैं। लेकिन जब वह दीन की समझ ह़ासिल करें। और रूहें छावनी वाली फौजें हैं, अगर आ़लमे बाला में एक दूसरे से मुलाक़ात की है तो यहां भी उनसे मानूस होंगी। और जो वहां अनजान थीं वह यहां भी अलग रहेंगी। (मुस्लिम)

(पृष्ठ ४ का शेष)

को इन्सानीयत के नाते से दअ़्वत दी जाती है कि आप इन्सानों के साथ हमदर्दी (सहानुभूति) करें जिस का जी चाहे । "प्यामे इन्सानीयत फ़ोरम" नदवतुल उलमा लखनऊ से सम्बन्ध स्थापित करे।

परन्तु हम मानते हैं कि इस जीवन के समाप्त पर एक दूसरा जीवन आरंभ होने वाला है, जो क़ियामत के पश्चात आरम्भ होगा और फिर कभी समाप्त न होगा उस जीवन में या सदैव के लिए जन्नत का पुरस्कार है या जहन्नम का दंड है। उस से पहले एक लम्बा समय बरज़ख का है वह भी या दुख का है या सुख का हमारा यह मानना कल्पित (ख़याली) नहीं है, यह वास्तविकता है, अल्बत्ता आंखों से ओझल है उसे वही मान सकेगा जो बताने वाले पैग़म्बरों फिर आख़िरी पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर ईमान लाएगा।

अतः वास्तविक मानवता यही है कि जहां इस सांसारिक जीवन में लोगों की पीड़ा हरी जाए लोगों से सहानुभूति की जाए वहीं सदैव के जीवन की पीड़ा और दुखों से बचाने की भी चेष्टा की जाए।

बेशक बड़ी ज़रूरत है कि हम जहां रहें अपने जैसे इन्सानों के दुख दर्द में शरीक हों, एक दूसरे की सेवा करें, लोगों को समझा बुझा कर ऐसे कामों से रोकें जिन से दूसरों की नींद उड़ जाती है जैसे चोरी डकैती लुच्चापन, ख़ास कर दहशत गर्दी जिस में हर वक़्त ख़तरा लगा रहता है कि घर में बाज़ार में, ट्रेन में, बस में, मन्दिर में, मस्जिद में कब धमाका हो और बे गुनाह लोग मारे जाएं, बाहर निकलने वाले की कोई गारन्टी नहीं कि वह वापस आएगा या किसी धमाके का शिकार हो जाएगा, इन्सानीयत का तक़ाज़ा है कि ऐसे ज़ालिमाना (अत्याचार पूर्ण) काम बन्द हों, सारे इन्सान शान्ति पूर्वक जीवन बिताएं परन्तु जब हम को यक़ीन है कि इस क्षणिक जीवन के पश्चात सदैव रहने वाला जीवन आने वाला है तो यह हमारे लिये कैसे सम्भव होगा कि हम अपने इन्सानी भाइयों को उस जीवन के कष्टों और दुखों का परिचय न दें और उन से बचाने की चेष्टा न करें। हमारा काम परिचय देना है और पूरे विश्वास के साथ परिचय देना है परन्तु उस जीवन का विश्वास भाइयों के मनो में उतारना अल्लाह का काम है। अगर हमारे भाई को विश्वास नहीं आ रहा है तब भी हम उस से सहानुभूति रखेंगे तथा उस से मानव जाति के लिए सहानुभूति की मांग करेंगे।

मनुष्य को सोचना चाहिए कि जो पैदा होता है वह मरता है जो आता है वह जाता है, आख़िर वह कहां जाता है, वह रोज़ सोता है नाना प्रकार के स्वप्न देखता है उनका भेद क्या है? इस प्रकार के विचार से मृत्यु के पश्चात आने वाले जीवन को समझने में सहयोग मिलेगा।

आठवीं किस्त

भारत का संक्षिप्त इतिहास

मुस्लिम काल

सय्यिद अबू ज़फर नदवी

भारत की स्वतंत्र रियासतें

तुगलक बादशाह के बाद से अलग अलग प्रान्तों के हाकिम स्वतंत्र हो गये। शेरशाह ने इस बद इंतिजामी को दूर करने की कोशिश की परन्तु उसको बहुत कम मौका मिला और उस के बाद तो सूरी खानदान का पतन ही हो गया। सूरीयों के पतन के समय सिन्ध अरगून खानदान के अधीन था। मुलतान पर लंकाह खानदान, दिल्ली, आगरा और जौनपुर पर आदिल शाह का मंत्री हेमू बक्काल, बिहार और बंगाल में पठानों की हुकूमत थी राजपूताना (राजस्थान) और मारवाड़ पर राजपूतों का कब्जा था जिसमें से राना उदैपुर सब से बड़ा शक्तिशाली राजा था। मालवा का एक अलग इस्लामी राज्य था। गुजरात पर मुजफ्फरशाह हुकूमत कर रहा था। दकिन में बहमनी राज्य समाप्त होकर पांच रियासतों में विभाजित हो गया था। गोलकुन्डा में कुतुबशाही, बीजापुर में आदिलशाही, बेदरमें बरीदशाही, अहमद नगर में निजाम शाही, बरार में अमादशाही खानदान के बादशाह हुकूमत कर रहे थे। इससे दूर दकिन की तरफ हिन्दुओं का बड़ा शक्तिशाली राज्य विजय नगर था। समुद्र तट पर ट्रावंकोर राज्य अपने समुद्री व्यापार के कारण मशहूर था। बहुत दिनों तक यह राज्य काइम रहे। इसमें से विजय नगर राज्य को दकिन की इस्लामी रियासतों ने फतह कर के अपनी अपनी सलतनत में मिला लिया और फिर यह इस्लामी रियासतें धीरे धीरे मुगलों की सलतनत में विलीन (जज्ब) होती गईं। औरंगजेब के काल में दकिन कुल क्षेत्र मुगल सल्तनत में शामिल होकर एक समराट के आधीन हो गया।

बंगाल के बादशाह : शहाबुद्दीन गौरी के समय में मुहम्मद बिन बख्तियार ने धीरे–धीरे बिहार के बाद बंगाल को भी फतह किया, फिर तिब्बत पर फौजकशी की मगर असफल वापस आया और इसी गम में उस का निधन हो गया। उसके मरने पर पहले अली मरावन खां और फिर दूसरे हाकिम एक के बाद एक यहां के शासक होते रहे। सुल्तान ग्यासुद्दीन बलबन के जमाने में उसका लड़का बंगाल का शासक हुआ। उसको यहां की हुकूमत यहां तक पसन्द आई कि उसने दिल्ली की हुकूमत इस पर कुर्बान कर दी। सुल्तान मुहम्मद तुगलक के जमाने में इस खानदान का खातमा हो गया। उस के बाद दिल्ली से बहुत से हाकिम आये मगर आपसी गृह युद्ध (खानाजंगी) के कारण सब मारे गये।

बंगाल में हाजी मलिक इलयास नामी एक जमीन्दार था जो बंगाल के शासक अलाउद्दीन को कत्ल करके सुल्तान शमशुद्दीन के नाम से बंगाल का बादशाह बना। जब उसको इत्मिनान हो गया तो जाज नगर के हाकिम को जो बागी हो गया था, फिर कब्जे में लाया। १३५३ई० (७५४ हि०) फिरोजशाह तुगलक ने बंगाल उस से छीन लेना चाहा। इस इरादे से वह बंगाल तक आया परन्तु सुलह हो गयी १६ वर्ष शासन करके शमशुद्दीन दुन्या से चल बसा। उस का लड़का सिकन्दर उस का उत्तराधिकारी (जानशीन) हुआ। १३५८ ई० (७६०हि०) में फिर फिरोजशाह ने फौजकशी की परन्तु सिकन्दर ने वार्षिक कर अदा करने का वादा कर उसको राजी कर लिया। सिकन्दर ने नौसाल तक हुकूमत की। उसके बाद उस का लड़का ग्यासुद्दीन तख्त पर बैठा। उसी बादशाह ने हाफिज शीराजी को बंगाल बुलाया और उसके निवेदन पर हाफिज ने वह गजल लिखी जिस का एक मिसरा (पंक्ति) है। "ईंकन्द पारसी कि बंगालः रवद"। उसने मक्का और मदीना में मुसाफिर खाने और मदरसे बनवाए। १३६३ ई० (७७५ हि०) में उसका निधन हो गया। फिर सुल्तान अस्सलातीन बादशाह हुआ। उसके रोब के कारण देश में शान्ति रही। १३८३ ई० (७८५ हि०) में वह मर गया।

अब शमशुद्दीन के लकब से उसका छोटा लड़का तख्त पर बैठा लेकिन कंस नामी एक हिन्दू दरबारी अमीर उसको मार कर १३८५ ई० (७८५ हि०) में खुद राजा बन बैठा। यद्यपि वह हिन्दू था मगर मुसलमानों से इतनी महब्बत करता था कि सात वर्ष के बाद

जब वह मरा तो लोग उस को मुसलमान समझ कर दफन करना चाहते थे। फिर उसका लड़का जीतमल मुसलमान होकर जलालुद्दीन के लकब (उपाधि) से तख्त का वारिस हुआ। १७ वर्षों तक बड़े न्याय से उसने हुकूमत की।

१४०८ ई० (८१२ हि०) जब उसका निधन हो गया तो उसका लड़का अहमद शाह तख्त पर बैठा। यह भी १८ वर्ष हुकूमत करके १४२६ई० (८३० हि०) में मर गया। अहमद शाह का गुलाम नासिरुद्दीन मौका पाकर खुद बादशाह बन बैठा। सलतनत के अमीरों ने सात ही रोज के बाद उस को कत्ल कर दिया और हाजी इलियास के खानदान से एक व्यक्ति को नासुरूद्दीन के लकब से तख्त पर बैठा दिया और चूंकि जौनपुर के बादशाह दिल्ली और बंगाल के बीच रूकावट था इस लिए बिना डर ३२ वर्षों तक हुकूमत करके १४५६ ई० (८६२ हि०) में चल बसा।

इसके बाद उसका लड़का बारबक बादशाह हुआ। हिन्दुस्तान में यह पहला बादशाह है जिस ने दरबार में हबशियों का जोर बढ़ाया। उसने आठ हजार हबशियों की फौज इकट्ठा कर ली जिसकी ताकत से दरबार के सरदारों को काबू में रखा। १७ वर्ष के बाद १४७४ ई० (८७६ हि०) में उस का निधन हो गया और यूसुफ शाह तख्त पर बैठा। यह खुद भी योग्य था और उसके दरबार में भी विद्वान भरे रहते थे। वह धार्मिक बातों का बड़ा ख्याल रखता। उसके जमाने में शराब का पीना और बेचना अपराध था। मुकदमों की जो अपील की जाती उस का फैसला खुद करता। १४८१ ई० (८८६ हि०) में उसका निधन हो गया। शाहजादा सिकन्दर चन्द दिनों तक बादशाह रहा। उसके बाद शाहजादा फतह खां तख्त पर बैठा। यह बड़ा होशियार और विद्वान था मगर हबशी सरदारों की अनुशासनहीनता (बेएतदालियों) की रोक थाम करने के कारण हबशीा सरदार उस से नाराज हो गये। इसलिए ख्वाजा सरा ने १४८१ ई० (८८६ हि०) में उस को कत्ल कर डाला और तख्त पर कब्जा करके अपना नाम सुल्तान बारबक रखा संयोग से ख्वाजा जहां वजीर और अमीरूल उमरा (सरदारों का सरदार) मलिक अन्दील हबशी सीमावर्ती क्षेत्र में गये हुए थे जब वापस आए तो मलिक अन्दील ने सुल्तान बारबक को मारडाला और दूसरे दिन अमीरों की सलाह से फीरोज शाह का लकब इख्तियार कर के खुद बादशाह बन बैठा। उसके जमाने में हर तरह की शान्ति रही। संयम और न्यायपूर्वक शासन करता रहा। १४९३ ई० (८९९ हि०) में उसका निधन हो गया। उस के बाद उसका लड़का महमूदशाह हुआ मगर शैदी बद्र ने पहले हबशा खां वजीर को और महीनों बाद महमूदशाह को कत्ल कर डाला और मुजफ्फर खां के लकब से खुद बादशाह बन गया। यह बड़ा जालिम निकला और खून खराबे में बड़ा दिलेर। जनता को उस से नफरत हो गई सख्त लड़ाई के बाद मुजफ्फर मारा गया और सय्यद शरीफ जो पहले वजीर थे अलाउद्दीन के लकब से बादशाह बने। वास्तव में वह बड़े शरीफ निकले, तमाम सरदारों को राजी रखा और देश में अमन व शान्ति का डंका बजाया। इस के बाद हबशियों की खबर ली जो दरबार में फसाद करने लग गये थे। इन बादशाह गरों को देश से निकाल दिया और उनके स्थान पर मुगल और अफगानों की भरती की। यह अपने सदव्यवहार के कारण सब लोगों में प्रिय रहा। १५२३ ई० (९३० हि०) में उसका निधन हो गया।

इसके बाद उसका लड़का नुसरत शाह जब तख्त पर बैठा तो बाबरशाह के डर से बहुत से अफगान सरदार यहां इकट्ठा हो चुके थे। उन्हीं में इब्राहीम का भाई महमूद लोदी भी था। इब्राहीम की लड़की से नुसरत ने निकाह कर लिया और उन सरदारों को उचित जागीरें दीं। आखिरी उम्र में कुछ दिनों बदहवास और कम अक्ल हो गया था। १५३६ ई० (९३३ हि०) में वह इस संसार से चल बसा।

उसके लड़के नसीब शाह को चन्द रोज हुकूमत के बाद सुल्तान महमूद जो सरदारों में से था। सलतनत पाकर न्याय पूर्वक हुकूमत करने लगा आठ वर्ष के बाद शेरशाह ने बंगाल फतह कर लिया।। १५४२ ई० (९४९ हि०) में हुमायूं बादशाह ने बंगाल को अपने राज्य में शामिल कर लिया लेकिन शेरशाह सूरी ने जब दिल्ली की शहंशाही हासिल करली तो बंगाल पर मुहम्मद खां को हाकिम बना दिया। उसके मरजाने के बाद उसका लड़का सलीम खां स्वतंत्र होकर सुल्तान बहादुर के लकब से शासन करने लगा। कुछ ही दिनों के बाद सुलैमान करानी जो सलीमशाह सूरी के सरदारों में से था। बिहार और बंगाल पर काजिब हो गया और उड़ीसा भी फतह कर लिया। २५ वर्ष हुकूमत करके १५७३ ई० (९८१हि०) में उसका निधन हो गया। उसके बाद उस का लड़का बायजीद और कुछ ही

दिनों के बाद उसका भाई दाऊद खां बादशाह हुआ। आखिर १५६४ हि० (१००३ हि०) में अकबर बादशाह ने बंगाल को अपने राज्य में शामिल कर लिया। दाऊद और उसका लड़का दोनों जंग में मारे गये और यह खानदान तबाह हो गया।

बंगाल बादशाहों के काम

बंगाल में २५ वर्षों तक विभिन्न खानदानों की हुकूमत रही। उनमें बाज ३२ वर्ष हाकिम रहे। इन बादशाहों ने बंगाल की उन्नति के लिए बड़ी कोशिश की। सुल्तान ग्यासुद्दीन के जमाने में केवल बंगाल बल्कि बंगाल की तरफ से मक्का और मदीना में भी मुसाफिर खाने और मदरसे काइम किये गये। उसके दरबार में हमेशा इल्मी चरचा रहता। वह कवियों का बहुत सम्मान करता था। इन बादशाहों के जमाने में हिन्दुओं को भी हर काम में शरीक कर लिया गया था। सल्तनत में मंत्री पद तक यह लोग जाते थे। हर प्रकार की स्वतंत्रता उनको उपलब्ध थी।

न्यायालय का प्रबन्ध दिल्ली जैसा था। बाज बादशाहों को न्याय का इतना ख्याल था कि मुकद्दमे खुद सुनते और खुद फैसला देते थे। प्रजा के आचरण का खास ख्याल रखते थे इर प्रकार के बुरे आचरण को दूर करने की कोशिश की जाती। चुनानचि शराब अधिकांश बादशाहों के शासन काल में प्रतिबन्धित थी। फौजी दशा भी बहुत अच्छी थी। आम तौर पर बंगाल या हिन्दुस्तान के लोग फौज में भरती होते थे। हिन्दुस्तान में सबसे पहले बंगाल ही के बादशाह थे, जिन्होंने हबशियों की भरती की और फिर ऊंचे ऊंचे पदों पर उन्हें पहुंचाया आखिर जमाने में पठानों और मुगलों की फौज से बंगाल के बादशाह बड़े ताकतवर हो गये। सैय्यद शरीफ का काल बंगाल में अमन व शान्ति के लिए बहुत महशूर है। उनके काल में मस्जिदें, मकबरें और दूसरी बड़ी बड़ी इमारतों का निर्माण हुआ। बहुत से नगर बसाए गये और बाज बाज किलों के निर्माण में खास प्रबन्ध किया गया। एकदाला का किला बंगाल में बड़ा मशहूर था। औरतें राजनीति में दखल नहीं देती थीं। आखिर जमाने में वहां अजीब रीति हो गयी थी कि जो बादशाह को मार कर तख्त हासिल करे वही बादशाह बन जाए। इस बुरी रीति से देश में खानाजंगी (गृहयुद्ध) बहुत दिनों तक काइम रही। (जारी)

अनुवाद – हबीबुल्लाह आजमी

(पृष्ठ १३ का शेष)

था कि हरे रंग के चान्द के निवासियों ने इशारों से उन्हें वापस जाने को कहा है। रूसी विशेषज्ञ के अनुसार एलियन्स की चान्द पर बस्तियां हैं, शायद उसी कारण से नासा ने १९७२ ई० में भेजे गये अपोलो – १७ के बाद अपने सारे मून मिशन को बन्द किये हुए ३५ वर्ष हो चुके हैं, परन्तु उस सच्चाई को लम्बे काल तक छुपाया गया। मिशन के आडियो विजुअल भी गायब हैं जबकि नासा का कहना है कि यह चोरी हो गये हैं। १९६७ में नासा के कम्यूनिकेशन सिस्टम के चीफ रहे मार्स चीट लाइन के अनुसार नील आर्म स्ट्रांग ने रिपोर्ट की थी कि उन्होंने क्रेयटर केरम के पास दो यूएफ०ओ को देखा था। अपोलो–१४ के अन्तर्गत १९७१ में चान्द पर टहलने वाले छटे अन्तरिक्ष–यात्री एडग्नमचील कहते हैं, मैं एलियन की सच्चाई का पता लगाने के लिए नासा से जुड़ा था, मैंने अपनी जांच में पाया कि दूसरे ग्रहों पर भी जिन्दगी है, हमारे विचार से यह एलियन्स ही हैं पृथ्वी पर जिन्दगी की तलाश में समय–समय पर आते रहते हैं।

१९६३ ई. में मिशन मर्करी के अनुसार चान्द के आस–पास उड़ान भरने वाले जार्डन कपूर बताते हैं कि यात्रा के करते समय हरे रंग की चमकीली गोल चीज हमारे कैप्सूल के करीब पहुंचने की कोशिश कर रही थी। यह चीज कुछ देर पीछा करने के बाद हम से दूर चली गयी। इसी प्रकार मिशन–८ के अन्तरिक्ष यात्री वाल्ट शरा ने १९६८ ई० क्रिसमस के दिन बताया था कि चांद पर सान्ता क्लाज है।

२१, मार्च १९९६ इ० को नासा ने वाशिंगटन में एक प्रेस कान्फ्रेन्स कर दबी जबान में एक्सेप्ट किया गया कि चांद पर इन्सान से मिलते–जुल्ते प्राणी की तलाश की गयी है। नासा ने चांद का मिशन क्यों बन्द किया यह एक पहेली ही बनकर रह गयी है।

MAKKAH CITY

सऊदी राज ने मक्का नगर के लिए इंग्लिश में **MAKKAH** या **MAKKAH AL-MUKARRAMA** लिखना मंजूर किया है अत: यही स्पेलिंग लिखना चाहिए, **MECCA** न लिखना चाहिए। इस लिये कि इस शब्द के मक्का नगर के अतिरिक्त भी अर्थ हैं।

एलियन एवं उड़न तशतरी की सच्चाई ?

अनुवाद : अब्दुर्रहीम सिद्दीकी

एलियन अर्थात दूसरी दुन्या के इन्सान तथा यू०एफ०ओ० (इन आइडेन्टीफाइड फ्लाइंग आबजेक्ट्स) अर्थात उड़न तशतरी के बारे में तरह–तरह के सवालात उठते रहे हैं। जैसे यह कौन हैं? कहां से आते हैं? आदि सुनने को मिलता रहता है। इस विषय से बालीवुड तथा हालीवुड में भी कई फिल्में बन गयी हैं, लेकिन इनकी सच्चाई का अभी तक पूरी तरह से राज नहीं खुल पाया है। फिर भी एलियन तथा यू०एफ०ओ० बहस का विषय बनते रहे हैं। उत्तरी तथा उत्तरी पश्चिमी ईरान के शहरों में भी मई २००४ में लोगों ने इसी तरह की चीजें आसमान पर उड़ती देखीं थीं जो अन्तरिक्ष में तेजी से गुजर जाती थीं एवं जाते–जाते रंगीन किरने छोड़ जाती थीं, उत्तरी ईरान में सम्वाददाता संस्था अरना के एक सम्वाददाता का कहना था कि उसने ६० मिनट तक आकाश पर उड़ने वाली एक चमकदार चीज देखी थी। एक स्थानीय अखबार ने उस सम्वाददाता के उल्लेख से कहा था कि आकाश में देखी जाने वाली यह चीज़ गोल थी तथा उसके दो बाजू भी थे। दुन्या के कई इलाकों में भी लोगों की उसी प्रकार के निरीक्षण भी हुए है, जिस पर अनुमान लगाया जाता रहा है, कि कोई अजनबी या अन्तरिक्षीय प्राणी का अस्तित्व है एवं क्या उड़न तशतरी उसी प्राणी से सम्बन्धित है? कुछ अन्तरिक्ष विशेषज्ञ इसे शंका ही बताते हैं। इनके अनुसार उड़न तशतरी का कोई अस्तित्व नहीं है, परन्तु यहां यह सवाल उठ खड़ा होता है, कि अगर उड़न तशतरी का कोई अस्तित्व नहीं है तो फिर वह क्या हैं जिन्हें दुन्या के कई जगहों पर लोगों ने उड़ती हुई तशतरी की तरह आकाश में कई बार देखा है। अभी पिछले दिनों अमरीकी अन्तरक्षीय एजेन्सी "नासा" ने घोषणा की है कि वह १९६५ ई० में पेन्सिल वेनिया में स्थित लैक्स बर्ग में हुई उड़न तशतरी घटना की दोबारह जांच करेगी। जबकि दूसरी घटना में रूसी अन्तरिक्ष विशेषज्ञ ने यह कहकर हंगामा खड़ा कर दिया है कि एलियन चांद पर रहते तथा १९६९ ई० में सबसे पहले वहां पहुंचने वाले अन्तरिक्ष यात्री अमेरिका के नेल आर्मस्ट्रांग का उन से सामना भी हुआ था। इन दोनों बातों ने अन्तरिक्ष विशेषज्ञ एवं जनता दोनों का ध्यान एक बार फिर उड़न तशतरी एवं ऐलियन की तरफ केन्द्रित कर दी है।

नासा की घोषणा से किसी को भी आश्चर्य हो सकता है क्योंकि ४२ साल पहले जब यह घटना घटी थी तो नासा न खुद उस घटना से जुड़े लेखपत्रों की जांच को रूकवाने के लिए फेड्रला कोर्ट में कानूनी लड़ाई लड़ी थी। दर अस्ल नासा को इसकी जांच के लिए इस लिए तैयार होना पड़ा क्योंकि न्यूयार्क के पत्रकार लेस्लेकीन ने साल २००३ में इससे सम्बन्धित सूचना प्राप्त करने के लिए अदालत का दरवाजा खट खटाया। सोचने वाली बात यह है कि आखिर क्या कारण था कि अमरीकी हुकूमत तथा नासा इस सच को छुपाना चाहते थे जो आज भी एक राज ही है। यह घटना ६ दिसम्बर १९६५ ई० की है, शाम ५ बजे बहुत से लोगों नेपिन्सलवेनिया के आकाश में आग का एक गोला देखा जो सन्तुलन के साथ पृथ्वी पर उतरा और उसे फौज ने अपने कब्जे में ले लिया। पिन्सिल वेनिया की तरफ आने से पहले उसी चीज को कनाडा, मशीनगन एवं आहिउ में भी देखा गया। उस घटना की अपनी आंखों पिट्स बर्ग के दक्षिण–पूर्व में स्थित लैक्सबर्ग नामी गांव के लोगों को एक लड़का जो वहां खेल रहा था, ने बताया था कि उसने एक चीज को जंगल में उतरते देखा, उसी मां ने उस चीज के उतरने के बाद वहां से नीला धुंवा उठते देखा। उसी ने इस बात की सूचना अफसरों तक पहुंचाई। उस घटना के कुछ घन्टों बाद पिट्स बर्ग के आस पास के क्षेत्रों में अखबारों रेडियों एवं टेलीविजन के दफ्तरों में इस बारे में जानने के लिए इतने फोन आए कि सारी लाइन ही जाम हो गयीं।

इस घटना को जिन्होंने अपनी आंखों से देखा उन्होंने बताया था कि जैसे ही आकाश से वह चीज गिरी, उसके कुछ पलों के बाद पेड़ों के बीच से नीला धुआं दिखा जो कुछ देर बाद ही बन्द हो गया। बहुत से लोगों का यह भी कहना था कि उस घटना के कुछ ही घण्टों बाद लैक्स बर्ग गांव को फौज ने चारों ओर से घेर लिया था। शाम होते–होते बड़ी संख्या में मीडिया

के लोग वहां इकट्ठा हो चुके थे, उसी शाम मीडिया से जुड़े सैकड़ों लोग उस घटना की जांच पड़ताल के लिए लैक्स वर्ग पहुंचे। जिस जगह पर आकाश से अनजानी चीज उतरी थी, उसके चारों तरफ रस्सियों की बाढ़ कर दी गयी। उस जगह पर न तो किसी शहरी तथा ना ही किसी रिपोर्टर को जाने दिया गया। हजारों की संख्या में लोग उस जगह से गुजरने वाली सड़क पर इकट्ठा होकर उस घटना को समझने की कोशिश कर रहे थे, शाम तक कोशिश करने के बाद भी लोग यह न जान सके कि आखिर कौन सी चीज वहां गिरी। कुछ लोग रस्सियां फांद कर अन्दर गये भी लेकिन फौज के जवानों ने बाहर कर दिया। उसी रात कई लोगों ने देखा कि फौज के जवान ट्रैक्टर ट्राली में एक चीज को ढक कर तेज रफतार से ले जा रहे हैं, रात के समय फौजियों को उस पूरे क्षेत्र में देखने वालों में दरजनों रिपोर्टर भी थे।

अगले दिन पेन्सिल वेनिया के तमाम अखबारों की पहले पेज की खबर थी लैक्स बर्ग के करीब उड़न तशतरी गिरी तथा फौज ने पूरे क्षेत्र को अपने अन्डर में ले लिया। सरकार की तरफ से घोषणा की गयी कि जंगल में कोई चीज नहीं पायी गयी। ऐसे मान लिया गया कि आकाश से गिरने वाली चमकीली चीज उल्का थी, परन्तु यह बात तेजी से पूरे देश में फैल गयी थी कि उस रात फौज ने जंगल में कोई चीज अपने अन्डर में ले ली थी। अगले कुछ सालों तक यह घटना लगातार रेडियो टाक शो का विषय बना रहा। अभी भी उस बारे में अनुमान लगाना खत्म नहीं हुआ। उस घटना से सीधे जुड़े लोग अपरिचित ही रहना चाहते हैं। कुछ पर हमले भी हुए और कई गवाह अब जिन्दा नहीं हैं। फिर भी कुछ ऐसे लोग हैं जिनका दअवा है कि दिसम्बर १९६५ की उस रात को जब आकाश कोई चीज पृथ्वी पर गिरी थी तब फौज के आने से पहले ही वह भी मौके पर पहुंच गये थे, उन्होंने वहां बेलन की जैसी एक बड़ी धातु की चीज को पृथ्वी में धंसे देखा। कासा तथा सोने के रंग वाली वह चीज किसी ठोस धातु से बनी दिखाई देती थी जो इतनी बड़ी थी कि एक आदमी उसमें आसानी से खड़ा हो सकता था, उसके पीछे कुछ ऐसे चिन्ह थे जो प्राचीन मिस्र के प्रतिलिपि जैसे थे।

१९६० ई० में अमरीकी अन्तरिक्ष के पूर्व अधिकारी ने रहस्यमय अभिव्यक्ति किया कि जब आकाश से गिरी चीज को लॉक बोर्न एयर फोर्स बेस लाया गया था तो वह उस की देख रेख के लिए बनी टीम का मेम्बर था। उसके अनुसार बहुत ही चौकसी में रखी गयी वह चीच बहुत कम समय के लिए वहां रखी गयी, बाद में उसे डेटान के करीब एयर फोर्स के अड्डे पर भेज दिया गया, यहां उसे एक बिल्डिंग के अन्डर ग्राउण्ड फ्लोर में सील बन्द कर दिया गया, वर्षों बाद उस विषय से जुड़े लेखा पत्रों को तलाश किया गया तो एयरफोर्स के आफिस से प्रोजेक्ट ब्लूबुक नाम से सिर्फ एक फाइल मिली।

अन्य गवाह जिन्होंने अपनी आंखों से देखा उन से मिली जानकरी के आधार पर जो एक बात निकल कर आयी उसके अनुसार यकीनी तौर पर आकाश से एक चीज पृथ्वी पर गिरी थी, बल्कि उतरी थी। जिसे कुछ ही समय बाद फौज ने अपने अन्डर में ले लिया था। उस घटना की रात फौज के ही नहीं बल्कि नासा के अफसरान भी वहां मौजूद थे। ऐसे में यह प्रश्न उठ खड़ा होता है कि आखिर वह क्या चीज थी जो उस दिन वहां उतरी थी तथा जो कुछ था उसे क्यों छुपाया गया? सभव है कि अब दोबारा होने वाली जांच से उन तमाम प्रश्नों का उत्तर मिल सके।

दूसरी ओर रूसी संवाददाता एजेंसी प्राउदा ने रूसी अन्तरिक्ष विशेषज्ञ के हवाले से दअवा किया कि चांद पर एलियन मौजूद हैं और यह उन स्थानों पर है जहां पृथ्वी से देख पाना सम्भव नहीं है उसके अनुसार नील आर्मस्ट्रांग ने चांद पर एलियन के अलावा उड़न तशतरियों को भी देखा था। चान्द पर लैन्डिंग के समय चित्रीय भाषा में मिली धमकी और अचम्भे में डालने वाली बातों के बाद नासा को मौन लैन्डिंग मिशन बन्द करना पड़ा था। रूसी विशेषज्ञ यूएफओ ब्लादिमियर अजाजा तथा ऐस्टरोनोमर यूकीनी अरस्यूकन का दअवा है कि १९६९ ई० से १९७२ ई० के बीच मून मिशन पर जितने भी अन्तरिक्षयान गये थे, उनके अन्तरिक्ष यात्रियों का सामना यू०एफ०ओ० से हुआ था। अमरीका के अपोलो द्वितीय के मोडयोल के मून पर लैन्ड करने के फौरन बाद नील आर्म्सस्ट्रांग ने कन्ट्रोल मिशन को एक सूचना भेजी थी। उसमें कहा गया था कि दो अदभुत चीजें हम पर नजर रख रही हैं, "यह अदभुत चीजें यूएफओ० थीं। जो अपोलो का पीछा करके उसके काफी करीब पहुंच गयी थीं। सन्देश में यह भी बतायागया

(शेष पृष्ठ ११ पर)

गाजर विटामिन का बेहतरीन स्टाक

इदारा

नये रेसर्च से यह बात सामने आई है गाजर ऐसी सबजी है जो विटामिन्स से भरपूर है, शरीर के पालन पोषण, स्वास्थ को संवारने के लिए बहुत ही लाभदायक है, सबसे बड़ी बात यह कि बहुत सस्ती सबजी, हिन्दुस्तानी गिजाओं में विटामिन 'ए' की कमी एक अहम गिजाई मसअला (समस्या) है, इस कमी को गाजर पूरी कर देती है, विटामिन्स से पूरा फाइदा उठाने के लिए गाजर कच्ची खानी चाहिए दांतों की मजबूती और मसोढ़ों की हिफाजत के लिए उसका चूसना और चबाना लाभदायक है।

कच्ची गाजर के रस में विटामिन 'ए' 'बी' 'सी' फौलाद, फासफोर्स, निशास्ता और शकर वगैरह के पार्ट होते हैं, यह रस बच्चों बूढ़ों औरतों और कमजोर शिरयान वालों के लिये जिन्हें भूक न लगती हो उनके लिये बहुत ही लाभदायक है। इससे अच्छा खून पैदा होता है बच्चों के लिए गाजर आबे हयात (अमृत) से कम नहीं जो बच्चे आम जिस्मानी कमजोरी (साधारण शारीरिक दुर्बलता) के मरीज हैं या जिनके जिस्म की बढ़ोतरी अच्छी तरह न हो रही हो उन्हें गाजर का रस उम्र के लिहाज से एक तोला से तीन तोला तक सुबह शाम पिलाना चाहिए, गाजर का रस पिलाने से उनका हाजिमा ताकतवर होता है दूध अच्छी तरह हज्म होने लगता है गाजर निगाह के लिए बहुत मुफीद जियादा खाने से निगाह तेज होती है, रतौंधी की शिकायत दूर हो जाती है, खून की खराबी दिल की धड़कन, पथरी, पीलिया के लिये बहुत मुफीद है, कब्ज को दूर करती, खून को साफ करती है, दिमाग की ताकत में इजाफा करती है।

जिगर की खराबी और खून की कमी में गाजर का मुसलसल इस्तेमाल बहुत मुफीद है कच्ची गाजर का रस एक छटाक रोजाना पिया जाए तो मसोढ़ों और दांतों की बीमारियां आसानी से पैदा न होंगी, खून साफ रहेगा मुहासों और खुजली की शिकायत न होगी दिल की कमजोरी और धड़कन की जियादती में गाजर का रस पीना मुफीद है सूखी खांसी में गाजर का रस आधा किलो उसी के वजन में बकरी का दूध मिलाकर धीमी आग पर पकाएं दूध रह जाने पर उसे दिन में दो तीन बार पीना मुफीद है। खास रोगों के लिए गाजर बेहद मुफीद है और ताकतवर है, गाजर का हलवा जाइकेदार बदन में ताकत पहुंचाने के लिए एक बहुत मशहूर चीज है, बदन को मोटा करता है कमर के दर्द, गुर्दे की कमजोरी के लिए मुजर्रब (आजमाई) हुई है, गाजर का मुरब्बह दिल के लिये मुफीद है, भूक न लगना, पेट की बीमारियों, खून की खराबी, सूजन, खांसी पेशाब की जलन, पेशाब का रूक रूक कर आना, दिमागी कमजोरी जैसी बीमारियों में बहुत मुफीद है। उसके खाने से पेशाब खुलकर होता है, मसाने की पथरी टूट कर निकल जाती है, गाजर जिगर, मेदे को ताकत पहुंचाती है, बवासीर की तकलीफ को दूर करती है– जहां तक हो सके कच्ची गाजर खाएं, पकाने से और देर तक पकाने से विटामिन नष्ट हो जाते हैं, अगर पकाना है तो धीमी आंच पर पकाया जाए यहां तक उसका पानी उसी में सूख जाए।

तुख्म गाजर, तुख्म शलजल हर एक तीन तोला एक बड़ी मूली को अन्दर से खोखली कर के यह दोनों तुख्म (बीज) अन्दर रख कर मूली का मुंह बन्द करके आग में इतनी देर पकाएं कि बीजों में मूली का पानी जज्ब (सूख) हो जाए फिर निकाल कर साए में खुश्क कर लें और उसका सुफूफ (चूर्ण) बना लें, छः माशा की मिकदार में यह सुफूफ गाजर के रस पांच तोले के साथ चन्द रोज पीने से गुर्दे और मसाने की पथरी रेजह रेजह होकर पेशाब के रास्ते से खारिज हो जाती है और इस तरह गाजर बतौर दवा बहुत से खवास का हामिल होने के साथ ही विटामिन्स और गिजाई अजजा से भी भरपूर है। सरदियों का मोसम है, गाजर के इस्तेमाल को अपनी गिजा का जुज (हिस्सा) बनाइये।

जाड़ो में ताजा अण्डा हाफ ब्वाइल्ड कर के नाश्ते में काली मिर्च और नमक छिड़क कर खाएं।

हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) के अख़लाक़ (व्यवहार)

इरफान फारूकी नदवी

हजरत अबू बक्र (रजि०) जाहिलियत के जमाने में भी बड़े अख्लाकमन्द थे और सभी भलाइयां आपके अन्दर पाई जाती थीं। आपने उस जमाने में भी शराब को मुंह नहीं लगाया। जुआ कभी नहीं खेला, किसी बुत के आगे सर नहीं झुकाया। जबकि यह तीनों चीजें, अरबों की घुट्टी में पड़ी थीं। इसके साथ–साथ गरीबों की मदद करना, मजबूरों अपहिजों की खबर लेना, मेहमानों को खाना खिलाा, रिश्तेदारों के साथ अच्छा बर्ताव करना यह सारी खूबियां हजरत अबू बक्र में पहले ही पाई जाती थीं। मुसलमान होने से उनकी इन खूबियों में और बढ़ौत्तरी हो गई और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ ने सोने पे सुहागा का काम किया।

हजरत अबू बक्र (रजि०) का तक्वा व परहेजगारी -

जैसे एक तन्दुरुस्त मेअदा (आमाशय) मक्खी या किसी गन्दी चीज को बर्दाश्त नहीं कर सकता उसकी तरह हजरत अबू बक्र का मेअदा (आमाशय) ऐसी चीज को बर्दाश्त नहीं कर सकता था जो कानून की रू० से गन्दी हो। एक बार आपके गुलाम ने आपको कोई चीज लाकर दी हजरत अबूबक्र ने जब उसे खा लिया तो गुलाम बोला आप जानते भी हैं वह क्या चीज थीं? पूछा क्या थी? उसने कहा मैंने जाहिलियत के जमाने में एक आदमी की फाल निकाली थी, मैं फाल खोलना (शकुन, अपशकुन बताना) तो जानता न था, केवल उसको धोखा दिया था, लेकिन जब आज उससे भेंट हुई तो उसने उसके बदले में यह खाने की चीज दी। हजरत अबूबक्र ने यह सुनते ही जो कुछ खाया था उंगली डाल कर उल्टी कर दिया। (बुखारी) फरमाया करते थे जो जिस्म हराम चीज से पला हो जहन्नम उसका बेहतर ठिकाना है।

एक बार हजरत अबू बक्र रजियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और दूसरे लोगों के साथ सफर कर रहे थे। बीच में एक जगह पड़ाव डाला सब लोग अलग अलग जगह ठहरे। हजरत अबू बक्र हजरत अबूसईद खुदरी रजियल्लाहु अन्हु और दूसरे लोगों के साथ एक घर में रुके। उनके साथ एक बद्दू (देहाती) था, और जिसके यहां आप मेहमान थे उसकी बीवी पेट से थी। उस बद्दू (देहाती) ने उसकी बीवी से यह शर्त कर ली कि अगर वह सबको बकरी खिलाएगी तो लड़का होगा। औरत ने यह शर्त मान ली और बकरी को जब्ह किया जिस पर बद्दू ने कुछ उल्टा सीधा पढ़ दिया। बकरी का गोश्त खाने के बाद जब हजरत अबू बक्र को पूरी कहानी पता चली तो आप से रहा न गया। उसी समय उल्टी कर दी। (मुस्नद अहमद)

जिस तरह आपका मेअदा अल्लाह के डर से गन्दी चीजें नहीं खा सकता था उसी तरह आपके पैर भी उस रास्ते की तरफ नहीं उठ सकते थे जिस पर गन्दे टाइप के लोग रहते हों। एक बार एक आदमी आपको एक रास्ते से अपने घर ले जा रहा था, हजरत अबू बक्र उस रास्ते को न जानते थे। हजरत अबू बक्र ने उससे पूछा यह कौन सा रास्ता है? उस ने कहा इस रास्ते में ऐसे लोग रहते हैं जिनके पास से निकलते हुए भी हमें शर्म आती है। हजरत अबूबक्र ने कहा वाह साहब ! जाते हुए शर्म भी आती है और फिर भी उसी रास्ते से जा रहे हो, तुम जाओ मैं नहीं जाऊंगा यह कहकर आप लौट आए। (मुस्नद अहमद)

हजरत अबूबक्र (रजि०) का यह असर उनके घर वालों पर पड़ा था, वह भी हजरत अबूबक्र के रंग में रंग गए थे। आपकी बेटी हजरत अस्मा रजियल्लाहु अन्हा की मां इस्लाम नहीं लाई थीं, इस लिए हजरत अबू बक्र ने उन्हें तलाक दे दी। एक बार मां की ममता ने जोश मारा बेटी के लिए खाने की कुछ चीजें ले कर आईं। चूंकि उन्होंने इस्लाम धर्म नहीं अपनाया था इसलिए उनके खाने के बारे में शक था कि खाना जाइज है या नहीं, इसलिए हजरत अस्मा ने उसे लेने से इन्कार कर दिया, लेकिन बाद में हजरत आइशा ने उनके बारे में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा आपने लेने की इजाजत दे दी।(इब्ने सअ़द)

इन्सान की परहेजगारी यह है कि जिस तरह वह गलत काम करने से रूका रहे और उनसे बचता रहे। उसी तरह उसे अपनी जबान को भी बेहूदा और गलत शब्दों से बचाना चाहिए।

हजरत अबूबक्र रजियल्लाहु अन्हु से कभी गुस्से में इस तरह की कोई बात निकल जाती तो बहुत शर्मिन्दा होते और जब तक उस की तलाफी (क्षतिपूर्ति) न हो जाती चैन न आता। एक बार हजरत उमर से आप की कुछ कहा सुनी हो गई, बात चीत में आप से कुछ सख्त अल्फाज (शब्द निकल) गए। लेकिन बाद को अफसोस हुआ और हजरत उमर से माफी चाही, हजरत उमर ने इन्कार किया तो उनकी परेशानी की कोई हद न रही। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बार–बार इत्मिनान दिलाया कि अबू बक्र अल्लाह तुम्हें माफ कर देगा। तभी हजरत उमर को अपने इन्कार से शर्मिन्दगी हुई और हजरत अबूबक्र को ढूंढते ढूंढते हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के यहां पहुंचे। उन्हें देखकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चेहरे का रंग बदल गया। हजरत अबू बक्र ने यह तेवर देखे तो आप से कहने लगे "अल्लाह की कसम ऐ अल्लाह के रसूल! मैंने ही जुल्म किया था ज्यादती मेरी ही तरफ से हुई है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का गुस्सा कुछ ठण्डा हुआ तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया मैं नबी बन कर तुम्हारे पास आया तो तुमने मुझे झुठलाया लेकिन अबू बक्र ने मुझे सच्चा माना माना और जान माल से मेरी मदद की, क्या तुम मुझको मेरे साथी से छुड़ा दोगे। (बुखारी)

हजरत रबीआ बिन जअ़फर और हजरत अबू बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु में एक पेड़ के बारे में झगड़ा हुआ। हजरत अबू बक्र ने कोई ऐसी बात कह दी जो उन्हें अच्छी न लगी। लेकिन जैसे ही आप का गुस्सा ठण्डा हुआ तो कहने लगे– रबीआ तुम भी मुझे कोई ऐसी सख्त बात कह दो, उन्होंने इन्कार किया। तो हजरत अबूबक्र रसूलुल्लाह के यहां हाजिर हुए रबीआ भी साथ थे। पूरी बात सुनन के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया तुम इन्हें सख्त जवाब न दो लेकिन यह कहो कि अबू बक्र अल्लाह तुम्हें माफ करे। हजरत अबू बक्र पर इसका इतना असर था कि आप फूट फूट कर रो रहे थे। (बुखारी)

आपका अल्लाह से डरना :

सभी नेकियों की जड़ अल्लाह का डर है। हजरत अबू बक्र अल्लाह से डरे सहमे रहते थे यहां तक कि एक बार एक चिड़िया को पेड़ पर बैठे हुए देखा तो कहने लगे। वाह! वाह! रे चिड़िया तू कितनी भाग्यशाली है। ऐ काश! मैं भी तेरे जैसा होता तू पेड़ पर बैठती है, फल खाती है, और फिर उड़ जाती है। न तुझसे कोई हिसाब न किताब। आह! काश मैं एक पेड़ होता ऊंट वहां से निकलता, मुझको पकड़ता, अपना मुंह मुझ में मारता मुझको चबाता, और मुझे अपने पेट से मल बनाकर निकाल देता यह सब कुछ होता मगर मैं इन्सान न होता। (मुस्नद अहमद)

आपकी शर्मिन्दगी :

एक बार आप अपने किसी गुलाम से नाराज होकर उसको बुरा भला कहा। हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मौजूद थे दो तीन बार फरमायाः ऐ अबूबक्र! सिद्दीक और लानत करने वाले एक जगह इकट्ठा नहीं हो सकते मतलब यह था कि तुमको ऐसा नहीं करना चाहिए। हजरत अबू बक्र ने यह सुनते ही कुछ गुलाम आजाद किए और कहा अब मैं कभी ऐसा नहीं करूंगा। (अदबुल मुफ्रद)

हजरत अबूबक्र से चूंकि गुस्से में कभी–कभी सख्त बात निकल जाती थी तो आप उस पर शर्मिन्दगा होते। एक बार हजरत उमर आप के पास आए तो देखा कि आप अपनी जबान पकड़ कर खीच रहे हैं। बोले अल्लाह आप को माफ करे ऐसा न कीजिए। हजरत अबूबक्र ने जवाब दिया इसी ने तो मुझे बर्बाद कर दिया है। (मुवत्ता इमाम मालिक)

जुहद :

आपको सरदार बनने और दुनिया कमाने और जमा करके रखने से सख्त घृणा थी। आप केवल इस लिए खलीफा बने थे कि कहीं मुसलमानों में फूट न पड़ जाए। और आपने ऐलान कर दिया था कि अगर कोई इस भार को उठाने के लिए तैयार हो जाए तो वह खुशी खुशी इसे छोड़ देंगे। (इब्ने सअद)

हजरत राफेअ ताई रजियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि एक बार मैंने कहा आप बड़े बूढ़े हैं, मुझे कुछ नसीहत (उपदेश) कीजिए। बोले अल्लाह तुम पर रहम करे, नमाज पढ़ो, रोजे रखो, जकात दो, हज करो, और सबसे बड़ी बात यह कि कभी सरदार न बनना, दुनिया में सरदार की जिम्मेदारी बढ़ जाती है और कियामत के दिन उससे बड़ी पूछ गछ होगी और उनके सवाल की सूची बड़ी लम्बी होगी।

एक बार आपने पीने के लिए पानी मांगा। लोगों ने पानी और शहद दिया, लेकिन जैसे ही मुंह के पास ले गए आप की आंखें भर आईं और इतना रोए कि आपके साथ बैठे हुए सभी लोग रोने लगे। जब कुछ सुकून हुआ तो लोगों ने रोने की वजह पूछी, बोले "एक दिन मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ था, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी चीज को दूर कर रहे थे। मैंने कहा ऐ अल्लाह

के रसूल! क्या चीज आप दूर कर रहे थे? मैं तो कुछ नहीं देखता। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया दुनिया मेरे सामने रूप घर कर आई थी मैंने उससे कहा मेरे सामने से हट जा वह हट गई लेकिन दोबारा आई और कहा आप मुझसे बचकर निकल जाएं तो निकल जाएं लेकिन आप के बाद जो लोग आएंगे वह बचकर नहीं जा सकते।" उस वक्त मुझे यह बात याद आ गई थी और मुझे डर हुआ कि कहीं वह मुझ से चिमट न जाए। (उसुदुल गाबा)

एक बार आपने हजरत खालिद बिन वलीद को यह नसीहत की "बड़ाई से भागो तो बड़ाई तुम्हारे पीछे आएगी, और मौत चाहोगे तो तुम्हें जिन्दगी दी जाएगी। (इक्दुलफरीद)

हजरत राफेअ और हजरत अबूबक्र एक सफर में साथ थे उनके पास फदक का बना हुआ एक कपड़ा था। जिसे दोनों आदमी जब पड़ाव डालते थे तो काम में लाते थे। (इब्ने अबी शैबः)

तवाजुअ, (नम्रता, झुकाव) और सादगी

खलीफा होने से पहले आप सुन्ह में रहते थे वहीं उनकी बीवी हबीबा बिन्त खारिजः का मकान था जो बहुत छोटा था। ६ महीने तक खलीफा होने के बाद आप उसमें रहते रहे। जिस दिन वहां जाने की बारी होती तो ज्यादातर पैदल और कभी अपने निजी घोड़े पर जाते थे। इशा के बाद जाते सुबह के वक्त आ जाते। आप जब खलीफा न हुए थे तो मुहल्ले की लड़कियां आपके पास बकरियां लातीं थीं और आप दूध निकाल देते थे। जब आप खलीफा होने के बाद मुहल्ले गए तो लड़कियों ने कहा कि अब यह दूध नहीं निकालेंगे। आपने यह सुनकर कहा जरूर निकालूंगा मैं अल्लाह से उम्मीद करता हूं कि जो काम मैं पहले करता था वह मैं करता रहूंगा। आप इतनी मुहब्बत करने वाले थे कि अब आप घर से निकलते थे तो बच्चे आप से बाबा–बाबा कह कर लिपट जाते थे।(इब्ने सअ़द)

मदीना के किनारे एक अन्धी व मुहताज बुढ़िया रहती थी। हजरत उमर उसके यहां यह सोचकर जाते कि चलो कुछ काम कर दें। लेकिन जब वहां पहुंचते तो पता चला कि कोई आदमी उनसे पहले आकर काम कर गया है। एक दिन दरवाजे पर छिपकर खड़े हो गए। वह आदमी अपने समय पर आया तो हजरत उमर क्या देखते हैं कि यह तो अबूबक्र हैं और यह उस वक्त की बात है जब आप खलीफा हो चुके थे।

अगर आप के मुंह पर कोई बड़ाई करता तो आप कहते अल्लाह तआला मुझको ज्यादा जानते हैं। और मैं भी इन प्रशंसा करने वालों से अपने आप को ज्यादा जानता हूं। ऐ अल्लाह! जैसे मुझे यह समझ रहे हैं उससे अच्छा मुझे बना दे। और मेरे वह गुनाह माफ कर दे जो यह नहीं जानते और जो यह कहते हैं उसके बारे में मुझ से पूछ गछ न कीजिएगा। (उसुदुल गाबा)

एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया – जो आदमी तकब्बुर (घमण्ड) से अपना कपड़ा खींचते हुए चलता है कियामत के दिन अल्लाह तआला उसकी तरफ नजर न करेगा। हजरत अबूबक्र ने कहा कि मेरे कपड़ों का कोना भी कभी–कभी लटक जाता है आप ने फरमाया तुम घमण्ड से ऐसा नहीं करते हो। (बुखारी)

आप कपड़े का कारोबार करते थे खलीफा होने के बाद भी आप बराबर व्यापार करते रहे। हर दिन चादरें लादकर अपने कन्धों पर बाजार ले जाते और वहीं बेचते खरीदते ६ महीने तक यूं ही चलता रहा। जब खिलाफत का काम ज्यादा हुआ तो आपने सहाबा रजियल्लाहु अन्हुम को बुला कर कहा कि खिलाफत का काम की वजह से मैं व्यापार नहीं कर सकता और अगर मैं व्यापार न करूं तो अपने घरवालों को खर्च नहीं दे सकता। यह सुनकर सहाबा रजियल्लाहु अन्हुम ने आपके लिए खजाने से वजीफा जारी कर दिया। खजाने से आपको दो चादरें मिलती थीं जब वह पुरानी हो जाती तो उन्हें वापस करके दूसरी ले लेते थे। सफर के लिए सवारी, और आपके खलीफा होने से पहले जो आपका और आपके परिवार का खर्च था वह खजाने से मिलता था। (बुखारी व इब्ने सअ़द)

अगर मदीना से कोई फौज जाती तो हजरत अबू बक्र उसके साथ कुछ दूर पैदल जाते। अगर कोई अफसर अपनी सवारी से उतरना चाहता तो रोक कर कहते "क्या नुकसान है अगर थोड़ी देर अल्लाह के रास्ते में मेरे पैर में धूल मिट्टी लग जाए? अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिन पैरों पर अल्लाह के रास्ते में धूल मिट्टी लगती है अल्लाह तआल उन पर जहन्नम की आग हराम कर देते हैं। (दारमी)

खुद्दारी (स्वाभिमान)

आप दूसरों का छोटा से छोटा काम करने में कोई शर्म महसूस नहीं करते थे और दूसरों से काम लेने से बचते थे। यहां तक कि अगर ऊंट की नकेल आपके हाथ से गिर जाती तो ऊंट से उतर कर नकेल उठाते। एक बार लोगों ने कहा आप हमसे क्यों नहीं

कहते? जवाब दिया मेरे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं किसी से कुछ न मांगूं।(मुस्नद अहमद)

फक्र (दरिद्रता)

हजरत अबू बक्र खजाने से अपने लिए वजीफा लेते थे लेकिन कितना लेते थे इसका अन्दाजा इससे हो सकता है। एक दिन आपकी बीवी ने आपसे मिठाई की फर्माइश की जवाब दिया मेरे पास तो कुछ है नहीं। उनकी बीवी ने कहा अगर आप कहें तो कुछ खर्च से बचालूं। थोड़े दिन में कुछ पैसे बचाने के बाद उन्होंने हजरत अबूबक्र को दिया कि मिठाई ले आएं। आपने वह पैसा खजाने में जमा कर दिया और उतना पैसा आपने वजीफा से कम कर दिया। कहने लगे ऐसा लगता है कि इतना पैसा हम खजाने से ज्यादा लेते थे। (इब्ने असीर) अब हमारे जमाने के नेताओं, प्रधानमंत्रियों का और हजरत अबूबक्र का मुकाबला कीजिए। क्या इतिहास में हमें इस तरह के और भी उदाहरण मिल सकते हैं।

अल्लाह के रास्ते में खर्च करना -

जब आप मुसलमान हुए उस वक़्त आपके पास चालीस हजार दिरहम थे। इन रूपयों को दीन के काम में खर्च करते रहे। जब हिजरत करके मदीना पहुंचे उस वक्त आपके पास पांच हजार दिरहम बचे थे वह भी अपने साथ मदीना ले गए और इस्लाम पर खर्च कर दिया। मौत के वक्त आपके पास एक पैसा न था।

शुरू–शुरू में जो लोग इस्लाम ले आए उनमें से बहुत से गुलाम व लौंडी थे जो मुश्रिक मालिकों के जुल्म सह रहे थे। हजरत अबूबक्र ने जिनमें से ज्यादातर को खरीद कर आजाद किया। (इब्ने सअद) हजरत अबूबक्र हमेशा बढ़ चढ़ कर खर्च करते थे। हजरत उमर आपसे मुकाबला करते लेकिन कभी आगे न निकल सके। एक बार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लोगों को सदका निकालने का हुक्म दिया हजरत उमर के पास उस वक्त कुछ ज्यादा ही माल था। उन्होंने सोचा कि आज हजरत अबू बक्र से बाजी जीती जा सकती है वह अपना आधा माल लेकर रसूल के पास गए। रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा कि कितना माल घर वालों के लिए छोड़ा कहा इतना ही। लेकिन हजरत अबूबक्र ने अपना पूरा माल आपको लाकर दे दिया उनसे जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा कि घर वालों के लिए क्या छोड़ा है तो उन्होंने कहा उनके लिए तो बस अल्लाह और उसके रसूल को छोड़ आया हूं। यह सुनकर हजरत उमर की आंखें खुल गईं बोले मैं कभी उनसे आगे नहीं निकल सकता। (तिर्मिज़ी)

इसी बात को हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यूं फरमाया – कि अबूबक्र के माल से ज्यादा किसी के माल ने मुझे फायदा नहीं पहुंचाया और कभी यूं फरमाते अबूबक्र के जान व माल से ज्यादा मुझ पर किसी का एहसान नहीं। यह सुनकर हजरत अबूबक्र की आंखें डबडबा गई कहते ऐ अल्लाह के रसूल! जान व माल सब आप ही के लिए तो है। (कन्जुल उम्माल)

बहादुरी

मक्का में एक बार कुरैश ने जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को घेरे में ले लिया और सताना शुरू कर दिया। उस वक्त हजरत अबूबक्र अकेले उनकी भीड़ में घुसते चले गए किसी को धक्का दिया, किसी को थप्पड़ रसीद किया, किसी को लात मारी, किसी को पीटा और मारा, और यह कहते हुए कि ऐ जालिमो! तुम ऐसे आदमी को कत्ल करना चाहते हो जो कहता है मेरा पालनहार अल्लाह है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को निकाल लाए। (मुस्नद अहमद)

हजरत अली रजियल्लाहु अन्हु ने खुत्बा देते हुए एक बार पूछा कि बताओ दुनिया का सबसे ज्यादा बहादुर कौन है? लोगों ने कहा आप। फरमाया नहीं इसके बाद बोले दुनिया के सबसे बड़े बहादुर अबूबक्र रजियल्लाहु अन्हु हैं। (मुस्नद अहमद)

आपका हिल्म (सहनशीलता) -

एक बार एक आदमी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और दूसरे सहाबा के सामने आपको बुरा भला कहा। आप सुनकर पी गए। उसने दोबारा यह बदतमीजी की फिर भी आप चुप रहे। लेकिन जब उसने तीसरी बार ऐसा किया तो आप ने उसका जवाब दिया। हजरत अबूबक्र का जवाब सुनते ही आप उठा खड़े हुए। तो हजरत अबूबक्र समझे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नाराज हो गए हैं कहने लगे या रसूलुल्लाह! आपको मुझ पर गुस्सा आ गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया वह जो कुछ तुम को कह रहा था आसमान से एक फरिश्ता उतरकर उसको झुठला रहा था। लेकिन जब तुमने उससे बदला ले लिया तो बीच में शैतान आ धमका, फिर मेरे लिए ठीक न था कि मैं वहां बैठा रहा हूं जहां शैतान हो। (अबूदाऊद)

हजरत अबू बक्र के खलीफा होने के बाद एक आदमी ने उनके मुंह

पर बुरा भला कहा, उस पर एक सहाबी ने आपसे इजाजत चाही कि उसकी गर्दन उड़ा दें। आपने सख्ती से रोक दिया और फरमाया – रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम को जो बुरा भला कहे गाली दे उसको छोड़कर और किसी को बुरा भला कहने वाले की गर्दन उड़ाना सही नहीं। (अबू दाऊद)

आपका हंसी मजाक करना -

एक बार आप मस्जिदे नबवी से नमाज पढ़ कर निकल रहे थे कि हजरत हसन रजियल्लाहु अन्हु जो छोटे बच्चे थे मुहल्ले के लड़कों के साथ खेलते हुए दिखाई दिये। आपने उनको मुहब्बत से गोद में उठा लिया। हजरत अली वहीं थे उनकी तरफ इशारा करके कहने लगे "ऐ वह जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मिलता जुलता है अली जैसा नहीं है" उस पर मेरे मां बाप कुर्बान हों। हजरत अली ने यह सुना तो हंसने लगे। (बुखारी)

लोगों से अच्छे तरीके से मिलना-

हजरत अबू बक्र लोगों से मिलते सलाम में पहल करते और अगर कोई सलाम का जवाब बढ़ चढ़ कर देता तो आप उसमें और लफ्ज बढ़ा देते। हजरत उमर कहते हैं कि एक बार मैं हजरत अबूबक्र के साथ एक ही सवारी पर बैठा हुआ जा रहा था कि रास्ते में कुछ लोग मिले। हजरत अबूबक्र ने कहा – अस्सलामु अलैकुम उन लोगों ने जवाब दिया अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि। अब हजरत अबूबक्र ने कहा अस्लामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि तो लोगों ने कहा अस्सलाम अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु। हजरत अबूबक्र ने कहा आज यह लोग हमसे बाजी ले गए। (अदबुलमुफ्रद)

हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं कि मुझको हजरत अबूबक्र के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक झगड़ा चुकाने के लिए भेजा। रास्ते में जो लोग मिलते थे वह मुझ को सलाम करते थे। हजरत अबूबक्र ने यह देखकर मुझ से कहा क्या तुम नहीं देखते कि लोग तुम को पहले सलाम करते हैं इस तरह उनको सवाब मिलता है। तुम पहल करो ताकि तुमको सवाब मिले। (अदबुलमुफ्रद)

मेहमान नवाजी :

एक बार कुछ लोग आपके मेहमान हुए। रात को हजरत अबूबक्र ने अपने लड़के अब्दुर्रहमान से कहा कि तुम मेरे आने से पहले इन लोगों की मेहमान नवाजी कर देना। मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के यहां जाता हूं। हजरत अब्दुर्रहमान ने जो कुछ था उन्हें खाने के लिए दिया। लेकिन उन लोगों ने इन्कार कर दिया कि अबूबक्र के साथ ही खाएंगे। उस दिन हजरत अबूबक्र बहुत देर में आए और यह जानकर कि मेहमानों ने अब तक खाना नहीं खाया है अब्दुर्रहमान पर बहुत नाराज हुए और बुरा भला कह कर कहा "अल्लाह की कसम! आज मैं इसको खाना नहीं दूंगा। हजरत अब्दुर्रहमान डर से मकान के एक कोने में छुपे बैठे थे हिम्मत करके बाहर आए और बोले अपने मेहमानों से पूछ लीजिए मैंने बार–बार उनसे खाने को कहा है। उन लोगों ने कहा यह सच कहते हैं और अल्लाह की कसम! जब तक आप उन्हें न खिलाएंगे हम भी न खाएंगे। इस तरह आपका गुस्सा ठण्डा हुआ, हजरत अब्दुर्रहमान कहते हैं कि उस दिन खाने में इतनी बरकत हुई कि हम खाते जाते लेकिन खाना कम ही न होता था यहां तक कि उसमें से कुछ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास भेजा गया। (मुस्लिम)

आप की मजहबी ज़िन्दगी

हजरत अबूबक्र रात भर नमाज पढ़ते और बहुत रोते थे। आप गर्मी में ज्यादातर रोजा रहते। आपका दिल बड़ा कोमल था, कुर्आन पढ़ते तो आंसू की झड़ी लग जाती और इस तरह बिलक–बिलक कर रोते कि जो लोग उस वक्त मौजूद होते उनका जीभर आता और रोने लगते थे।

एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा कि आज तुममें से किसने रोजा रखा? हजरत अबूबक्र ने कहा मैंनें। आपने पूछा जनाजा के साथ कौन गया अबूबक्र ने जवाब दिया मैं। आपने पूछा मोहताज व मजबूर को किसने खाना खिलाया हजरत अबूबक्र ने कहा मैंने। फरमया आज किसने बीमार की देखभाल की हजरत अबूबक्र ने कहा मैंने। यह सुनकर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिसने एक दिन में इतनी नेकिया कमाई हों वह जरूर जन्नत में जाएगा। (मुस्लिम)

आपका खाना कपड़ा -

जिन्दगी बहुत ही सादा थी। कपड़े मोटा झोटा पहनते थे और खाना भी सादा खाते कई कई वक्त खाना नहीं मिलता था। एक दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हजरत अबूबक्र व उमर को मस्जिद में भूख से बेचैन पाया, देखकर फरमाया मैं भी तुम्हारी तरह बहुत भूखा हूं। हजरत अयूब अंसारी को पता चला तो आप लोगों की दावत की। (मुवत्ता इमाम मालिक)

हजरत अबूबक्र के वह काम जो

आपके प्रश्नों के उत्तर?

इदारा

प्रश्न : तअ़ज़िया बनाना, तअ़ज़िया रखना कैसा है?

उत्तर : अहले सुन्नत वलजमाअ़त के उलमा चाहे बरेलवी ख़याल के हों चाहे देवबन्दी ख़याल के हों चाहे वह नदवे के पढ़े हों चाहे मज़ाहिरे उलूम सहारनपुर के चाहे वह सलफ़ी (अहले हदीस) हों चाहे हनफ़ी (अर्थात किताब व सुन्नत के समझने में इमाम अबूहनीफ़ा के अनुयायी) हों इस बात में सभी सहमत हैं कि तअ़ज़ियादारी नाजाइज़ है। बअ़ज़ लोग धोखे में हैं कि तअ़ज़िया दारी को वहाबी उलमा रोकते हैं, देवबन्दी और नदवी उलमा रोकते हैं, मज़ाहिरी और सलफ़ी उलमा रोकते हैं। बरेलवी उलमा नहीं रोकते बल्कि जाइज़ बताते हैं यह उनकी अज्ञानता (नावाक़फ़ियत) है बरेलवी मस्लक के बानी अअ़ला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा ख़ां साहिब अल्लाह उन पर रहम फ़रमाए तअ़ज़ियादारी पर एक पुस्तक ही लिख दी है जिस का नाम "रिसाल–ए–तअ़ज़ियादारी है। यह उर्दू में है, यहां उस के पृष्ठ ४,५ से उर्दू इबारत हिन्दी लिपि में नक़्ल की जा रही है –

"अव्वल तो नफ़्स तअ़ज़िया में रौज़–ए–मुबारक की नक़्ल मल्हूज़ न रही, हर जगह नई तराश नई गढ़त जिसे उस अस्ल से कुछ इलाक़ा न निस्बत फिर किसी में परियां, किसी में बुराक़ और बेहूदा तुम्तुराक़, फिर कूचः ब कूचः , व दस्त ब दस्त, इशाअ़ते ग़म के लिए उनका गश्त, और उनके गिर्द सीना ज़नी व मातम साज़ी की शोर अफ़गनी, कोई उन तस्वीरों को झुक झुक कर सलाम कर रहा है, कोई मशग़ूले तवाफ़, कोई सज्दे में गिरा है, कोई इन बिदअ़ात को मअ़ाज़ल्लाह जल्वः गाहे हज़रत इमाम (अ़ला जदिदही व अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम) समझ कर उस अबरक़ पन्नी से मुरादें मांगता, मन्नतें मांगता है, हाजत रवा जानता है, फिर बाक़ी तमाशे बाजे ताशे, मर्दों औरतों का रातों का मेल और तरह तरह के बेहूदा खेल, इन सब पर तुर्रः है। ग़रज़ अ़शर–ए–मुहर्रमुलहराम कि अगली शरीअ़तों से इस शरीअ़ते पाक तक निहायत बा बरकत व महल्ले इबादत ठहरा हुआ था इन बेहूदा रूसूम ने जाहिलाना व फ़ासिक़ाना मेलों का ज़माना कर दिया फिर वह इब्तिदाअ़ (बिदअ़त) का वह जोश हुआ कि ख़ैरात को भी बतौर ख़ैरात न रखा, रिया व तफ़ाख़ुर एअ़लानिया होता है, फिर वह भी यह नहीं कि सीधी तरह मुहताजों को दें, बल्कि छतों पर बैठ कर फेकेंगे। रोटियां ज़मीन पर गिर रही हैं, रिज़्क़े इलाही की बे अदबी होती है, पैसे रेते में गिर कर ग़ाइब होते हैं, माल की इज़ाअ़त (बर्बादी) हो रही है मगर नाम तो हो गया कि फ़ुलां साहिब लंगर लुटा रहे हैं। अब बहारे अ़श्रः के फूल खिले, ताशे बाजे बजते चले, तरह तरह के खेलों की धूम, बाज़ारी औरतों का हर तरफ़ हुजूम, शहवानी मेलों की पूरी रसूम, जश्न यह कुछ और उसके साथ ख़याल वह कुछ कि गोया यह साख़्ता तस्वीरें बिअ़ैनिही शुहदाए किराम रिज़वानुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम के जनाज़े हैं, कुछ नोच उतार बाक़ी तोड़ ताड़ दफ़न कर दिये, यह हर साल इज़ाअ़ते माल का जुर्म व वबाल जुदागाना है। अल्लाह तआ़ला सदक़ा हज़रात शुहदाए करबला अ़लैहिमुर्रिजवान व स्सना का हमारे भाइयों को नेकियों की तौफ़ीक़ बख़्शे और बुरी बातों से तौबा अ़ता फ़रमाए आमीन। अब कि तअ़ज़ियादारी इस ना मर्ज़ीया का नाम है कतअ़न बिदअ़त व नाजाइज़ व हराम है।

फिर पृष्ठ २३ पर लिखा –

तअ़ज़िया राइजा ना जाइज़ व बिदअ़त है और इस का बनाना गुनाह व मअ़सीयत, और उस पर शीरीनी वग़ैरह चढ़ाना महज़ जिहालत है।

पस तअ़ज़िया दारी बड़ा गुनाह है अहले सुन्नत बलजमाअ़त को इससे दूर रहना लाज़िम है।

बड़े खेद की बात है कि हमारे बरेलवी उमला तअ़ज़ियादारी को नाजाइज़ तो लिखते हैं मगर अपने मानने वालों को रोकते नहीं, हमारे इलाक़े में बरेलवी उलमा से अ़क़ीदत रखने वालों में एक भी ऐसा नहीं जो तअ़ज़ियादार न हो। कई गांव तो ऐसे हैं जिन में एक भी देवबंदियों का मानने वाला नहीं वहां खूब धूम धाम से तअ़ज़ियादारी होती है, अ़लम उठाये जाते हैं, पायक बनाये जाते हैं। यह सब शीआ़ हज़रात की हुकूमत और सुहबत के असर से हुआ।

पिछले साल मुहर्रम में मैंने

तअ़ज़ियादारी के रद में उलमाए बरेली व देवबन्दी के फतुओं के हवाले से एक तहरीर हिन्दी उर्दू में तक़्सीम करवाई एक जगह से फ़ोन आया–

तुम ने तअ़ज़ियादारी को नामजाइज़ लिखा है?

हां मैंने तअ़ज़ियादारी को नाजाइज़ लिखा है।

क्या वाक़ई ताज़ियादारी नाजाइज़ है?

हां अहले सुन्नत वल जमाअ़त के नज़दीक नाजाइज़ है। आप सुन्नी हैं या शीआ़?

मैं सुन्नी हूं, मगर तअ़ज़ियादारी नाजाइज़ कैसे है?

दलील उस तहरीर में दर्ज है।

जवाब में वह गालियां और धमकियां शुरूअ़ हुईं कि ख़ुदा की पनाह, मैंने कहा मैं तो हज़रात हस्नैन रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा को अपना पेशवा मानता हूं, उनका पैरो हूं, मगर तुम्हारा यह अ़मल उन के दुश्मनों वाला है। जवाब में फिर गालियां मिलीं मैंने फ़ोन बन्द कर दिया, फिर घन्टी हुई और गालियों की बौछारा आई मैं ने सब्र किया। वह साहिब अगर शीआ़ भी हों तो उन्होंने हज़रत हुसैन की नहीं शैतान की पैरवी की अल्लाह उन्हें हिदायत दे।

प्रश्न : तअ़वीज़ लिखने वाले हिसाबे जमल से क़ुर्आने मजीद की आयतों के हर्फ़ों के नम्बर जोड़ कर तअ़वीज़ लिखते है, इसका क्या हुक्म है? जैसे बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम के बदले ७८६ लिख देते हैं। क्या सहाब–ए–किराम के ज़माने में ऐसा था?

उत्तर : पहली बात तो यह समझें कि तअ़वीज़ लटकाने को हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मना साबित है। सुनने अबी दाऊद और मुसनद अहमद बिन हंबल में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द रज़ि० से रिवायत है कि मंत्र से झाड़ फूंक, तअ़वीज़ और जादू शिर्क हैं।

लेकिन अगर तअ़वीज़ क़ुर्आनी आयात से हो तो अ़ब्दुल्लाह इब्नि मसऊ़द (रज़ि०) जाइज़ समझते थे जबकि बअ़ज़ सहाबा ना पसन्द फ़रमाते थे।

फिर अगर क़ुर्आने मजीद की आयात या हदीस के अलफ़ाज़ का तअ़वीज लिखा जाए तो उसका एहतिराम लाज़िम है, पाख़ाना पेशाब के वक्त इसे हटाना ज़रूरी है। रहा नम्बरों से तअ़वीज़ लिखना शायद इस लिए शुरूअ़ हुआ ताकि आयात की बेहुर्मती से बचा जा सके लेकिन नम्बरों को आयत हरगिज़ नहीं समझा जा सकता, ऐसे ही ७८६ से बिस्मिल्लाह का सवाब नहीं मिल सकता, ना ही ७८६ बिस्मिल्लाह का बदल हो सकता है। चूंकि गिन्तियों से लिखने वाले का मक़्सद आयत होता है इस लिए नाजाइज़ तो ना कहेंगे लेकिन नम्बरों से आयतों का फ़ाइदा हरगिज़ नहीं हो सकता न नम्बर पढ़ लेने से आयत पढ़ने का सवाब मिल सकता है। बेहतर है कि दुआ़ओं का एहतिमाम किया जाए और तअ़वीज़ात से बचा जाए । जिन लोगों को नम्बरों के तअ़वीज़ों से फ़ाइदा पहुंचता है वह उनका तख़य्युल (कल्पना) उन को फ़ाइदा पहुंचाता है।

प्रश्न : अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की क़ब्रे अनवर पर हाज़िरी हो तो अपना सलाम पेश करने के पश्चात क्या ऐसे लोगों का सलाम भी पेश कर सकते हैं जिन्होंने सलाम पेश करने को न कहा हो?

उत्तर : अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की क़ब्रे मुबारक पर हाज़िरी हो तो अपने सलाम के बअ़द उन ही लोगों का सलाम पेश करें जिन्होंने सलाम पेश करने की दरख़्वास्त की हो जिन्होंने दरख़्वास्त नहीं की उनकी तरफ़ से सलाम नहीं पहुंचा सकते।

प्रश्न : एक शख़्स हर माह हज्ज के लिए कुछ पैसा जमा करता है, वह साहिबे निसाब है, या निसाब भर की रक़म जब जमा हो जाए तो क्या साल पूरा होने पर उस हज्ज वाली रक़म की भी ज़कात निकाली जाएगी।

उत्तर : अगर साहिबे निसाब है तो हज्ज के लिए जमा की हुई रक़म की भी ज़कात निकालना है। साहिबे निसाब नहीं है जमा करते करते जब रक़म ६१२ ग्राम चान्दी ख़रीदने भर को हो जाएगी और उस पर साल गुज़रे गा तो हर साल ज़कात देना होगी।

प्रश्न : इस उम्मत में सबसे ऊंचा दर्जा किस का है?

उत्तर : उम्मते हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के तमाम उलमा–ए–उम्मत अहले सुन्नत वलजमाअ़त का इत्तिफ़ाक़ है कि इस उम्मत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बअ़द सब से ऊंचा दर्जा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु का है उसके बअ़द हज़रत उ़मर का फिर हज़रत उ़स्मान का फिर हज़रत अ़ली का (रजियल्लाहु अ़न्हुम)।

और याद रहे कि कम से कम दर्जे का सहाबी बड़े से बड़े बली से जो सहाबी न हो दर्जे में बड़ा है।

हमें खेद है दिसम्बर २००७ अंक के पृष्ठ नं. २५ पर लेखक का नाम कुलदीप नैयर की जगह कुलदीप कौर हो गया। कृपया उसे कुलदीप नैयर पढ़ें।

–सम्पादक

चाय नामा

कमर उस्मानी

कौन ऐसा शख़्स होगा जो चाय के नाम से वाक़िफ़ न हो, पढ़ा लिखा हो, जाहिल हो, बच्चा हो, बड़ा हो, शहरी हो, दीहाती हो, मुलाज़िम हो, मालिक हो, वज़ीर हो, मज़दूर हो, मर्द हो, औरत हो अफ़सर हो, क्लर्क हो, बड़ा हो छोटो हो, आम हो ख़ास हो, लीडर हो, वोटर हो, मुसाफ़िर हो, मुक़ीम हो, शाअ़िर हो, अदीब हो, एडीटर हो या क़ारी हो, रक्शे वाला हो या कार व बस वाला, काश्तकार हो या ज़मीनदार, दुकानदार हो या ख़रीदार, अमीर हो या ग़रीब एम०पी० हो या पी०एम० पढ़ने वाला हो या पढ़ाने वाला, डाक्टर हो या मरीज़ और बीमार बेकार हो या बर सरे कार, वकील हो या मुवक्किल, जज हो या मुद्दअ़ी व मुद्दआ़ अ़लैहि, हाकिम हो या महकूम, ग़रज़ ज़िन्दगी का कोई शुअ़बा हो, आदमियों की कोई क़िस्म चाय हर जगह हर मौक़िअ़ पर कारफ़रमा नज़र आएगी, चाय से चाय नोशों की महब्बत और उससे अ़िश्क़ के दरजे का तअ़ल्लुक़ हर जगह नज़र आएगा।

चाय पीने वाले भी कई तरह के होते हैं, बअ़ज़ एक दो कप रोज़ाना पर इक्तिफ़ा करते हैं, बअ़ज़ दो चार प्याली ही पर क़नाअ़त कर लेते हैं और बअ़ज़ ऐसे बलानोश होते हैं कि योमीया आठ दस प्याली नीचे उतार कर चाय नोशी का हक़ अदा करते हैं। इस तरह के आशिक़ीने चाय वह होते हैं कि उन को रोटी न दो तो उफ़ न करें, पेशानी पर शिकन न लाएं लेकिन मुतअ़य्यिना वक़्त पर मुक़र्ररा चाय उन को न मिले तो इन्तिक़ाल फ़रमा जाएं अल्लाह उन की हालत पर रहम फ़रमाए।

चाय की भी मुख़्तलिफ़ क़िस्में होती हैं। चाय गुड़ की भी होती है और चीनी की भी एक चाय तो नम्कीन भी होती है जिस में चीनी बिल्कुल नहीं होती सिर्फ़ नमक इस्तिअ़माल होता है, कशमीर में यह चाय आ़म तौर से पी जाती है और बहुत पसन्द की जाती है। चाय वह भी होती है जो घर में पकाई जाती है और वह भी होती है जो होटल में दस्तयाब होती है, चाय अ़वामी और इज्तिमाई भी होती है और बक़द्रे ज़रूरत मुख़्तसर यअ़नी दो चार कप। चाय वह भी होती है जो रेल में मिलती है और वह भी होती जो रेलवे प्लेटफ़ार्म के टी स्टाली पर दस्तयाब होती है। चाय वह भी होती है जिसमें ख़ालिस दूध और उम्दा पत्ती इस्तिअ़माल की जाती है और वह भी होती है जिस में दूध नमक पानी और थर्ड क्लास पत्ती इस्तिअ़माल की जाती है। चाय वह भी है जिस का ज़िक्र अ़ल्लामा आज़ाद के ग़ुबारे ख़ातिर में है और चाय वह भी है जो चाय वाले की टंकी से निकलती है।

किसी भी अ़क्ल वाले आदमी पर यह बात पोशीदा नहीं होनी चाहिए कि इन मज़्कूरा चाय में से हर एक का मज़ा उस का ज़ाइक़ा उस का रंग, उस की बू, उसका मिअ़यार, उस की लताफ़त व कसाफ़त, उस का कैफ़ व सुरूर, उस का असर और नतीजा, सब कुछ अलग अलग होता है। एक शाअ़िर को बढ़या सी चाय मिल जाए तो वह ख़ूबसूरत सी ग़ज़ल कह डाले, एक एडीटर को उम्दा सी चाय मिल जाए तो जानदार सा इदारिया लिख डाले, एक क्लर्क को अच्छी सी चाय मिल जाए तो अपने काम में ज़ियादा मुस्तइ़द हो जाए, एक मज़्दूर को चाय मिल जाए तो ताज़ा दम होकर ख़ूब मेहनत से काम करे, एक सियासत दां लीडर को चाय नसीब हो जाए तो दस सियासी दांव पेच उस के ज़ेहन में कुल्बुलाने लगें, एक वकील को बर वक़्त चाय मिल जाए तो न जाने कितने झूट सच उस की तहरीर व बयान में बिला इरादा दाख़िल हो जाएं, एक मुसाफ़िर को चाय किल जाए तो सफर की सारी थकन दूर हो जाए, एक डाक्टर या हकीम को बर वक़्त बढ़िया चाय मुयस्सर हो जाए तो ज़ेहनी तरावट के लिये तशख़ीस व तजवीज़ में मददगार साबित हो, ग़रज़ यह कि ज़िन्दगी के हर शोअ़बे में फ़ैज रसानी और राहत रसानी का जो किरदार है वह बड़ा अहम है।

चाय कड़क भी होती है और हल्की पत्ती वाली भी किसी को यह पसन्द आती है तो किसी को वह चाय सादा भी होती है और वाय (फ़रनीचर) के साथ भी इस का तअ़ल्लुक़ हस्ब मौक़अ़ और हस्ब गुंजाइश होता है। एक वक़्त था कि आने वाले मेहमान की तवाज़ुअ़ पानी और पान से करना काफ़ी होता था अब दौर तरक्क़ी का है, मेहमान की तवाजुअ़ अगर चाय से और अगर कोई ख़ास मेहमान हो जाय

मअ़ फ़रनीचर के न हो तो इस को मेहमान की तौहीन समझा जाता है, मेहमान की तौहीन से बचने के लिये बहर हाल मेज़बान को कुछ न कुछ तकल्लुफ़ से काम लेना ही पड़ता है। यह और बात है कि उस तकल्लुफ में बअ़ज़ औक़ात मीज़बान की जेब का कबाड़ा हो जाता है, बअ़ज़ इज्तिमाअ़ी मवाक़िअ़ पर चाय बड़े बड़े देग्चों और बड़े–बड़े भगोनों में पकाई जाती है और बालटियों में भर–भर कर पिलाई जाती है। इस चाय को जनरल वार्ड की चाय कहा जाता है। इस चाय में इहतियात व इहतिमाम की कोई गुंजाइश नहीं होती, इस में जितनी चाहो पियो और जितनी चाहो पिलाओ वाला मुआ़मला होता है। इस में चाय के अजज़ा बे मुहाबा होते हैं, यह चाय दफ़अ़े ज़रूरत की एक सूरत होती है।

बअ़ज़ लोग चाय में छोटी इलायची लौंग और दारचीनी की लकड़ी वगैरह डाल देते हैं, बअ़ज़ लोग अदरक की चाय पीते हैं, ग़रज़ जितने मुंह उतने किस्म की चाय, ख़याल, अपना अपना पसन्द अपनी अपनी। अब आप से क्या छुपाएं हम ने ऐसी काली सियाह ग़ैर मरग़ूब चाय देखी और पी है कि जिस को पीकर सारे गुनाहे सग़ीरह मुआ़फ़ हो जाएं। फ़िलवक्त चाय का इतना ही तज़किरा काफ़ी है, चाय के इस ज़िक्रे ख़ैर के बअ़द अगर चाय की ख़्वाहिश आप में बेदार हो गई हो तो आप एक कप चाय पी लें और इस मज़मून में अगर आप को कुछ लुत्फ़ आया हो तो हमें दुआए खैर में याद रखें। फ़क़त :

हम हुए तुम हुए कि मीर हुए
हम सभी चाय के असीर हुए।

शरीअ़ते इस्लामी के ख़िलाफ़ फ़ैसला क़बूल नहीं

सुमय्या इम्तियाज़

आब्रू रेज़ी से मतअ़ल्लिक़ आइशा की अपने शौहर मंसूर के ख़िलाफ़ अपील में हाई कोर्ट के जज जसटिस अहमद के हालिया फ़ैसले से फ़िक्रमन्द ख़वातीन का एक जल्सा मदरसा फ़ातिमतुज़्ज़हरा अल इस्लामिया लिल्बनात मोहन गंज ज़िला राय बरेली में हुआ मदरसे की प्रिंसिपल बुशरा इफ़्तिखार ने उस की सदारत की। ख़दीजा इम्तियाज़ की तिलावत से जल्सा शुरू हुआ। जल्से को ख़िताब करते हुए मदरसे की मुअ़ल्लिमा सुमैय्या इम्तियाज़ ने हाई कोर्ट के फ़ैसले को शरीअ़ते मुहम्मदी में सरीह मुदाख़लत क़रार दिया और आल इण्डिया मुस्लिम प्रस्नल ला बोर्ड के मौक़फ़ की ताईद की। उन्होंने कहा कि तीन तलाक़ें एक साथ दी जाएं या अलग अलग वह तलाक़े मुग़ल्लज़ा होती है, उस के बअ़द शौहर से हमबिस्तरी ज़िना के हुक्म में आती है। उन्होंने कहा कि अ़दालतें तीन तलाक़ को चाहे दस बार एक करार दें लेकिन हनफ़ी मस्लक पर अ़मल करने वाली ख़ातून उसे क़बूल नहीं कर सकती, अ़दालतें सिर्फ़ फ़ैसला दे सकती हैं ज़न व शौहर के दर्मियान तअ़ल्लुक़ात को उस्तवार नहीं करा सकतीं। बअ़ज़ मुस्लिम दानिश्वरों की जानिब से हाई कोर्ट के फ़ैसले को ख़वातीन के हुक़ूक़ का तहफ़्फ़ुज़ कहने पर तन्क़ीद करते हुए उन्होंने कहा के यह लोग अ़दालतों के तवस्तुत से हमारे शरअ़ी हक़्क़े विरासत को दिलाने की कोशिश क्यों नहीं करते। उन्होंने दअ़वे से कहा कि अगर हुकूमते हिन्द मुस्लिम ख़ातून के हक़्क़े विरासत की अदाएगी को कानून बना कर लाज़िमी क़रार दे तो तलाक़ के जो चन्द मुआ़मले पेश आते हैं उन में मज़ीद कमी आ जाएगी। (राष्ट्रीय सहारा उर्दू १६.११.०७ से ग्रहीत)

(पृष्ठ २६ का शेष)

अ़लावा अनेक दीनी और मालूमाती किताबें लिखीं।

क़ुरआन मजीद और दीनी किताबों के प्रकाशन पर सालाना बड़ी रक़म स्वयं ख़र्च करते और किताबें मुफ़्त बांटते, भेंट करते। कभी किसी किताब की रायलटी नहीं ली। इस के विपरीत प्रेस वालों ने सहयोग किया और समय पर काम कर दिया तो इनाम देते। दीनी व दावती काम व प्रोग्राम में मुल्क भर का सफ़र करते और कभी सफ़र का ख़र्च किसी से न लेते बल्कि ज़रूरतमन्दों की मदद करते। हमदर्दी व ग़मगुसारी में एकता–ए–रोज़गार, मिल्लत के ग़म में रातों को रोने वाला, बहुतों को रोता छोड़ कर रूखसत हो गया ।

"आसमां तेरी लहद पर शबनम अफ़शानी करे।

मौलाना के साथ लम्बे समय तक रहने में दो बातें देखने में आईं – एक यह कि उन की तक़रीर दिल में उतर जाने वाली होती थी जो हर तबक़: और हर उम्र के लोगों को सन्तुष्ट करती थी। दूसरे यह कि उम्र और अवस्था में अन्तर के बावजूद इकराम व एहतराम (मान सममन) हद दर्जे फ़रमाते अल्लाह तआ़ला उनकी इस विनम्रता (तवाज़ो व इन्केसारी) को आख़िरत में बुलन्दी–ए–मक़ाम व मर्तबत: का जरिय: बनाये।

अल्लाह तआ़ला मौलाना (रह०) की मग़फ़िरत फ़रमाये और हश्र में हम सब को अपने महबूब और परसन्दीद: बन्दों के साथ अ़र्श के साय: में पनाह नसीब फ़रमाये। आमीन।

अनुवाद : एम हसन अंसारी

मौलाना अ़ब्दुल करीम पारेख (रह०)

शाहिद हुसैन, नदवा, लखनऊ

हज़रत मौलाना अ़ब्दुल करीम पारिख़ साहिब (रह०) कुर्आन के टीकाकार, उच्च कोटि के वक्ता, लेखक, चिन्तक, पयामे इन्सानियत के अलमबरदार, कौम व मिल्लत के हमदर्द, सहृदय, दानी, सफ़ल व्यापारी के अ़लावा उन अनगिनत गुणों के साथ याद किये जायेंगे जिन की चर्चा जानकारी और विद्वान लोग अपने तौर पर करेंगे।

लेखक को स्व० मौलाना का सानिध्य घर और बाहर तीस साल प्राप्त रहा और इस लम्बी अवधि में उनके निजी जीवन को जैसा मैंने देखा उस पर रौशनी डालने की कोशिश होगी। मौलाना पारेख साहिब सहृदय और उच्च विचार वाले थे। मुसलमानों को पेश आने वाली समस्याओं से वह बराबर बाख़बर रहते, मिल्लत में आयी गिरावट के प्रति सदैव चिन्तित रहते और उस में सुधार के लिये रणनीति अपनाने का प्रयास करते और तब तक चैन न लेते जब तक उत्पन्न समस्या का कोई समाधान न निकल आता। विद्वानों, बुद्धजीवियों, पदाधिकारियों तथा देशवासियों से बराबर सम्पर्क रखते। और मुसलमानों के बारे में जो ग़लतफ़हमियों (भ्रान्तियों) या साज़िशें की जा रही होतीं, उनकी कोशिश होती कि वह ग़लत फ़हमियां दूर हों।

लेखक के नज़दीक उनका विशिष्ट गुण उम्मत का ग़म था जो उनके तमाम चिन्तन पर हावी था। मिल्लत की ज़िल्लत व रूसवाई (अपमान) वह बर्दाश्त नहीं कर सकते थे वह उनके उपाय के लिय बेचैन हो जाया करते थे।

मौलाना पारिख साहिब का दूसरा विशिष्ट और महत्वपूर्ण पहलू किसी को "अपना बड़ा" तस्लीम करना था। मौलाना पारिख साहिब हज़रत मौलाना सैयद अबुल हसन अ़ली नदवी से बैअ़ते मजाज़ थे। उनको हज़रत मौलाना से हार्दिक सम्बन्ध और लगाव था ख़ाकसार ने हज़रत मौलाना अ़ली मियां को भी मौलाना पारिख साहब पर विश्वास करते और अपनी मिज़ाजी मुनासिबत का इज़हार करते देखा है। हज़रत से मैं ने पारेख साहब को अव्वल तो कभी विरोध करते नहीं देखा, लेकिन कभी कोई बात समझ में न आती तो भी वह उसे मिन व अ़न (ज्यों का त्यों) क़ुबूल फ़रमाते कि अल्लाह ने यह बात हज़रत के दिल में डाली है लेहाज़ा इसी में ख़ैर है।

मेरे दिल में मोलाना पारिख साहब की प्रतिष्ठा और बढ़ी जब हज़रत मौलाना की वफ़ात के बाद उन्होंने हज़रत मौलाना सैयद मुहम्मद राबे साहिब हसनी नदवी, अल्लाह उनका साया क़ायम रखे, को उसी तरह "अपना बड़ा" तस्लीम कर लिया जिस तरह वह हज़रत (रह०) को समझते थे, और अख़ीर तक इस पर क़ायम रहे।

इसके बावजूद कि मौलाना पारिख साहब का दक्षिणी भारत में श्रद्धालुओं (इरादतमन्दों) का एक बड़ा हल्क़ा था, क़ुरआन की शिक्षा और दावती व इल्मी ख़िदमात (प्रचार–प्रसार तथा ज्ञानमयी सेवा) के कारण इलाक़ः के प्रतिष्ठित व्यक्तित्व के मालिक थे, फिर भी मौलाना पारिख साहब हमेशा मौलाना सैयद मुहम्मद राबे साहब हसनी नदवी को अपना बड़ा और स्वयं को छोटा समझते रहे। यह हार्दिक लगाव का एक अ़मली नमूना था। और विनम्रता की एक मिसाल।

मौलाना की ख़ाकसारी की चन्द और मिसालें याद आ रही हैं। बारह–तेरह साल पहले लखनऊ के कृर्षि भवन में हज़रत मौलाना सैयद अबुल हसन अ़ली हसनी नदवी (रह०) की अध्यक्षता में पयामे इन्सानियत का जल्सा हुआ था जिसमें नगर वासियों के अ़लावा अनेक मंत्री व अधिकारी बड़ी संख्या में शामिल व शरीक थे। मौलाना पारिखी साहब की तक़रीर बहुत शानदार अन्दाज़ में शुरू हुई। सुनने वाले प्रभावित हो रहे थे कि अचानक क़ुरआन की आयतों का हवाला देते हुए कुफ़्र व शिर्क के ख़िलाफ़ तक़रीर का रूख़ हो गया और इतना आक्रामक कि हज़रत मौलाना को कुर्सी–ए–सदारत पर बेचैनी से पहलू बदलते देखा गया। इन पंक्तियों के लेखक ने साहस जुटा कर मौलाना पारिख साहब के क़रीब पहुंच कर इशारा किया कि तक़रीर सख़्त और विषय से हट कर हो रही है, मौलाना मरहूम तक़रीर के दौरान दख़ल अन्दाज़ी सहन नहीं कर पाते थे, फिर भी मैंने उस समय देखा कि उन्होंने इसका ज़रा भी बुरा नहीं माना, विषय बदल दिया और तक़रीर मुख़्तसर कर दी। यह मौलाना पारिख साहब की बेनफ़्सी (निःस्वार्थ) और हज़रत मौलाना को बड़ा तस्लीम करने

का अमली नमूना था।

मौलाना मरहूम से ख़ाकसार बेतकल्लुफ़ बातें कर लिया करता था, एक बार मैंने मनोविनोद के तौर पर उन से पूछा कि हज़रत मालूम है दुनिया में सबसे आसान काम क्या है? उन्होंने प्रश्न किया कि .... क्या है? तुम ही बता दो।

मैंने अर्ज़ किया, दुनिया में सबसे आसान काम तनक़ीद (आलोचना) व तकरीर करना है।

मौलाना (रह०) बड़े ज़ोर से हंसे और फ़रमाया, "शाहिद भाई! तुमने मेरी खटिया खड़ी कर दी। लगभग पचास साल से तक़रीरें कर रहा हूं उन सब पर पानी फेर दिया, लेकिन बात तुम्हारी सही है।

दो बातें और याद आ रही हैं। वह अक्सर तनहाई में फ़रमाते, शाहिद भाई! तुम्हारी दो बातें हमेशा याद रहती हैं और मैं अक्सर उन्हें दोहराता हूं। मैंने पूछा, वह क्या हज़रत?

फ़रमाया, पहली बात यह कि . ..... "किब्रयायी (बड़ापन) तो सिर्फ़ अल्लाह की है" ..... और दूसरी ... . अगर हक़ की बुनियाद पर मिलता होता तो हमें कुछ न मिलता।" .... यह दो वाक्य किसी विशेष पृष्ठभूमि में बन्द–ए–आजिज़ की ज़बान से चन्द साल पहले निकले थे जिसे आधिक्य के भय से यहां नक़्ल नहीं किया जा रहा है।

इस का एक अवसर पर अनुभव भी हुआ। हज़रत मौलाना पारिखी साहब गत वर्ष सख़्त बीमार हुए थे। आई०सी०यू०. में दाख़िल थे। हालत निराशाजनक थी। घर वालों की सूचना पर रेक्टर नदवतुल उलमा और साथी लखनऊ से इस हाल में नागपुर रवाना हुए थे कि मुलाकात होना यक़ीनी न था। अल्लाह ने जिन्दगी बाक़ी रखी थी। हम लोगों से आईसीयू में चन्द मिनट की मुलाक़ात हुई तो उस समय मौलाना मरहूम की ज़बान से निकल रहा था, शाहिद भाई तुम आ गये, मुझे तुम्हारी बात याद है, क़िब्रयायी तो सिर्फ़ अल्लाह की है और इस्तेहक़ाक़ की बुनियाद पर मिलना होता तो हमें कुछ भी न मिलता।

ज़ारो क़तार रोने के अलावा मैं और क्या अर्ज़ करता। हज़रत नाज़िम (रेक्टर) साहब भाई ज़ियाउल्लाह शरीफ़ साहिब और मौलाना सय्यिद वाज़ेह रशीद साहिब नदवी व दीगर हाज़िरीन हैरत से सुन रहे थे और उन पर असर था। (इस घटना के बाद मौलाना लगभग डेढ़ साल जीवित रहे)। हज़रत मौलाना अब्दुल करीम पारिख साहब जैसे महान व्यक्तित्व के लिए शब्द बड़ा आदमी का प्रयोग उनके इनहीं बड़प्पन के नमूने से है कि उन्होंने ज़िन्दगी के अख़ीर तक किसी को अपना बड़ा तस्लीम किया हुआ था।

हज़रत मौलाना अब्दुल करीम पारिख साहब (रह०) की दिन चर्या को जिन खुशनसीब लोगों ने देखा है वह इस बात की गवाही देंगे कि मौलाना व्यवहारिक इन्सान थे। जीवन की सच्चाई से न केवल परिचित बल्कि उस को व्यवहार में लाने वाले भी। क़ुर्आन की इस आयत के अनुरूप अपनी ज़िन्दगी बिताई और दूसरों को भी ऐसा करने को कहा, जिसका तर्जमः है, ऐसी बात क्यों कहते हो जो खुद करते नहीं।'

मौलाना मरहूम ने ज़ीरो प्वाइन्ट से ज़िन्दगी शुरू की थी। निरन्तर संघर्ष और दिन रात– की मेहनत व मशक़्क़त से वह कहां तक हपुंचे इसका अन्दाज़ा लगाना दुश्वार है। चूंकि उन्होंने ग़रीबी देखी थी लेहाज़ा ग़ुर्बत की ज़िन्दगी से बख़ूबी वाक़िफ़ थे और जहां तक बन पड़ता था ऐसे लोगों की भरपूर मदद फ़रमाते और ख़ुश होते। न सिर्फ़ नागपुर बल्कि पूरे मुल्क में उन से बेशुमार लोगों को फ़ायदा पहुंचा। अपनों का दर्द तो था ही दूसरे भी महरूम न थे। मैं खुद शाहिद हूं कि ऐसे लोगों का उल्लेख विस्तार में करूं तो एक ज़खीम किताब तैयार हो जाये मदरसे के लोगों और दीनी काम करने वालों के लिये बड़ी फ़िक्रमन्दी फ़रमाते थे। उनकी दिली ख़्वाहिश होती थी कि मदरसों के लोग आर्थिक रूप से निश्चिन्त होंगे तो उन से अधिक से अधिक दीनी फ़ायदा पहुंच सकता है।

एक बार मुझ से फ़रमाया, अल्लाह न करे कोई बुरा या आज़माइश का समय आये लेकिन कभी अगर ऐसा हो तो किसी ग़रीब या परेशान हाल के हाथ में ख़ामोशी से इतनी कसीर रक़म रख दो जिसका वह गुमान न कर सकता हो। फिर देखना उस के दिल से जो दुआयें निकलेंगी वह बे असर नहीं होंगी क्योंकि मज़लूम और परेशान हाल की दुआ सीधे आसमान तक पहुंचती है। मौलाना मरहूम लगभग साठ साल तक क़ुर्आन की शिक्षा देते रहे। क़ुर्आन का पैग़ाम और तर्जमः आम करने की फ़िक्र फ़रमाते। "लुग़ातुल क़ुर्आन" अनेक भाषाओं (उर्दू, हिन्दी, अंग्रेजी, बंगाली, मराठी, गुजराती आदि) में इसी निय्यत से फ़रमाई थी कि अवाम के अन्दर क़ुर्आन फ़हमी आम हो। लोग क़ुर्आन मजीद को समझ कर पढ़ें, इस के पैग़ाम को समझें और अमल करें इस के अलावा तालीमुल हदीस, क़ौमे यहूद क़ुर्आन की रौशनी में, गाय का क़ातिल कौन? और इल्ज़ाम किस पर? के

(शेष पृष्ठ २३ पर)

अंग प्रत्यारोपण और इस्लाम

अंग प्रत्यारोपण के सिलसिले में इस्लाम का क्या दृष्टिकोण है, सविस्तार बताएं?

जवाब : अंग प्रत्यारोपण अर्थात आखें, दिल (हृदय), गुर्दे अथवा शरीर के दूसरे वे अंग जो बीमारी या किसी दुर्घटना का शिकार होने के कारण निष्क्रिय हो गये हों, उनके स्थान पर सर्जरी के द्वारा इन्सान या पशु या कृत्रिम अंग लगाना ताकि रोगी की जिन्दगी बचायी जा सके अथवा उसके निष्क्रिय हो गये हों, उनके स्थान पर सर्जरी के द्वारा इन्सान या पशु का या कृत्रिम अंग लगाना ताकि रोगी की जिन्दगी बचायी जा सके। इस उद्देश्य के लिए निम्नलिखित सूरतें इस्तेमाल में लायी जाती हैं–

१. प्लास्टिक या किसी धातु से निर्मित कृत्रिम अंगों का इस्तेमाल जैसे टूटे हुए दांत या कटी हुई नाक के स्थान पर सोने या किसी दूसरी धातु से पत्थर से बने हुए दांत या नाक का इस्तेमाल या फेफड़े की खराबी को प्लास्टिक आदि के द्वारा दूर करने की कोशिश।

२. ऐसे पशु और जानवर, जिनकी बनावट अथवा कुछ शारीरिक अंग मानव अंग से मिलते जुलते हैं उनके शारीरिक अंग से फायदा और उनके द्वारा विकृत एवं निष्क्रिय मानव अंग का काम लेने की कोशिश, जैसे बन्दर या वनमानुष आदि के बारे में कुछ अनुभव डाक्टरों ने किये हैं।

३. स्वयं रोगी के अपने शरीर के किसी अंग या दूसरे भाग की खराबी दूर करने के लिए इस्तेमाल, जैसे सिर के बाल काट कर ऊपर की होंठ में पैदा होने वाली खराबी दूर करने के लिए इस्तेमाल की जाए या रान (जंघा) की खाल चेहरे पर घाव आदि के कारण पैदा होने वाली कुरूपता दूर करने के लिए इस्तेमाल की जाए।

४. दूसरे जीवित आदमी का दान किया हुआ या खरीदा हुआ कोई अंग इस्तेमाल किया जाए, जैसे–आजकल गुर्दे खरीदना आम होता जा रहा है और सरकारी तौर पर कुछ देशों में मेडिकल संस्थाओं के अन्तर्गत इसे कानून रूप में वैध मान लिया गया है। लोग सहर्ष इस मुहिम में हिस्सा भी लेने लगे हैं।

५. मुर्दे के लिए शरीर से प्राप्त सक्रिय अंग–आंख की पुतली, फेफड़े, दिल आदि का इस्तेमाल और सामान्यतः सही सूरत अधिक प्रचलित है।

इस्लामी शरीअत के दृष्टिकोण से पहली सूरत में कोई हर्ज नजर नहीं आता। चिकित्सा–उपचार के द्वारा बीमारी दूर करने के सिलसिले में शरीअत में जो सामान्य निर्देश हैं उनसे इस सूरत का औचित्य स्वयंमेव समझ में आ जाता है कि यह भी चिकित्सा–उपचार के जायज (वैध) तरीके का ही एक हिस्सा है।

धातुओं में सोने का इस्तेमाल जो कि पुरुषों के लिए आम हालतों में नाजायज करार दिया गया है लेकिन नाक आदि के कट जाने की सूरत में यदि साने के अतिरिक्त कोई दूसरी चीज उपयोगी न हो सकती हो और उसके सड़ने या दुर्गन्ध पैदा होने की संभावना हो, तो सोने के इस्तेमाल की अनुमति दी गयी है।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के जमाने की प्रसिद्धि घटना है कि एक सहाबी हजरत अरफजह (रजि०) जिनकी नाक अज्ञान–काल के युद्ध में कट गयी थी और उन्हें अपनी नाक चांदी की बनवा ली थी, लेकिन जब वह सड़ने लगी, तो अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने उन्हें सोने की बनवा लेने का हुक्म दिया। रिवायत में यह विस्तार से इन शब्दों में बयान की गयी है।

अरफजह बिन असअद (रजि०) से रिवायत है कि अज्ञान काल में होने वाली कलाब की लड़ाई में मेरी नाक निशाना बन गयी थी, तो मैंने चांदी की नाक बनवा ली। फिर जब उसमें मुझे बदबू लगने लगी तो अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने मुझे यह हुक्म दिया कि मैं सोने की नाक बनवा लूं। (मुसनद अहमद, तिरमिजी)

इस रिवायत से स्पष्ट रूप से यह भाव भी निकलता है कि यदि नाक के अतिरिक्त शरीर का कोई दूसरा अंग जिस पर जीवन निर्भर हो और उसमें तब्दीली अनिवार्य हो जाए, तो इसके लिए सोना सहित जिस धातु से भी बना हुआ अंग उपयोगी हो सकता

हो उसका लगाना जायज होगा, क्योंकि केवल चेहरे की कुरूपता दूर करने के मुकाबले में जीवन की सुरक्षा अधिक महत्व रखती है।

अंग प्रत्यारोपण की दूसरी सूरत जिसे पशुओं के अंग इस्तेमाल करने पड़ते हों, वे भी इस्लामी शरीअत की दृष्टि से नाजायज नहीं कहे जा सकते। तमाम पशुओं व जानवरों को अल्लाह ने इन्सान की राहत एवं सुविधा के लिए वशीभूत फरमाया है, अलबत्ता यह सावधानी जरूरी होगी कि जिन जानवरों को शरीअत ने हराम करने के साथ उनके शरीर को नापाक ठहराया है उनके अंगों के इस्तेमाल से पूर्णतः बचा जाए। लेकिन यदि इन्सान जीवन–मृत्यु के संघर्ष में ग्रस्त हो और जीवन बचाने के लिए इसके अतिरिक्त कोई उपाय न रह जाए कि हराम व नापाक जानवर का कोई अंग इस्तेमाल किया जाए तो मजबूरी की हालत होने के कारण इसका इस्तेमाल भी जायज होगा।

कुर्आन पाक में स्वयं ही इसका स्पष्टीकरण किया गया है –

जो चीजें तुम पर हराम की गयी हैं वे खोलकर बयान कर दी गयी हैं किन्तु यह कि उनके इस्तेमाल पर मजबूती हो जाएगी।

(अल–अनआम, ११९)

जहां तक तीसरी सूरत का सवाल है जिसमें स्वयं इन्सान के अपने शरीर के किसी अंग को काट कर दूसरे हिस्से में इलाज की खातिर लगाया जाए, तो यदि वह वास्तव में अनिवार्य आवश्यकता के अन्तर्गत ऐसा किया जाए और इस कांट–छांट से असाधारण कष्ट न पहुचे या जीवन–संकट की संभावना न हो तो शरीअत की नजर में दुरुस्त होगा। बाद की दोनों सूरतों के लिए इस्लाम में कोई गुंजाइश नहीं है।

इन्सानों का शीर दरअस्ल उसके पास अल्लाह की अमानतहै, इस लिए अपने किसी अंग को बेचने का अधिकार किसी को भी प्राप्त नहीं है और न ही इस्लाम किसी दूसरे इन्सान के शरीर का अंग खरीदने की इजाजत देता है। इसी प्रकार मृत व्यक्ति के शरीर का भी कोई अंग नहीं निकाला जा सकता है।

(कान्ति से ग्रहीत)

पथरी का सबब बन सकती है चिकनी गिज़ा

औरतों के मामले में यह बात खुसूसी तौर पर देखी जाती है कि वह मसालेदार और चटपटी चीजों के इस्तेमाल को तरजीह देती है लेकिन वह इस बात से बिल्कुल अनजान होती है कि मसालेदार और चिकनी गिजा का इस्तेमाल पथरी बनने का सबब भी बन सकता है। चालीस से पचास साल की उम्र वाली ख्वातीन इसका ज्यादा शिकार हो सकती है। पित्ता दरअस्ल एक ऐसा हिस्सा है जो जिस्म में पित्त को महफूज करने का जरिया है। यह पित मुख्तलिफ नमकीयात और कोलेस्ट्राल से मिलकर बनता है। यह पित एक नाली के जरिये छोटी आंत में जाता है और चिकनी गिजा को हज्म करने में मदद देता है। इस मरज से ख्वातीन ज्यादा मुतास्सिर होती हैं। फिर चूंकि हमल के दौरान औरतों के जिस्म में एस्ट्रोजन हार्मोन बहुत बढ़ जाता है तो वह पित्ते की हरकत को कम कर देता है। नतीजतन पित्ते में मौजूद नमकीयात और कोलेस्ट्राल जमा होना शुरू हो जाता है और पथरी बनने से इमकानात पैदा हो जाते हैं। औरतों में गोरी रंगत भी एक वजह हो सकती है। क्योंकि ऐसी ख्वातीन में सांवली या स्याह रंगत वाली ख्वातीन की बनिस्बत मेमनीन पिगेट्स कम होते है इस लिए यह पगमेंटस पित के नमकीयात और कोलेस्ट्राल को पथरी में तब्दील होने से महफूज रखते हैं। ज्यादा चिकनी गिजा का इस्तेमाल भी पित्ते की पथरी की वजह बनता है क्योंकि ज्यादा कोलेस्ट्राल भी पित में मौजूद नमक के साथ मिलकर या तो जमा हो जाता है या उससे पथरी बन जाती है। इस मरज की जद में आई ख्वातीन को कंपकपी के साथ बुखार आता है। जो बैक्टिरिया इंफेक्शन की वजह से होता है। यह बात काबिले गौर है कि पित्ते की पथरी की वजह से जो बुखार होता है वह सुबह के वक्त शिद्दत इख्तियार कर जाता है। मरीज को ज्यादातर कब्ज रहता है और इसकी वजह से भूक कम लगती है और आंतों की हरकत में भी कमी आ जाती है। इसके अलावा शदीद किस्म की कमजोरी और चक्कर आना एक आम अलामत है। साथ ही सीने की ऊपरी और दाहिनी तरफ शदीद दर्द भी महसूस होता है। कभी कभी यह दर्द दाहिने कांधे तक फैल जाता है और दर्द के साथ घबराहट और उल्टी की शिकायत भी पैदा हो जाती है। मरीज खून की कमी और रंगत में पीलापन का भी शिकार हो जाता है।

मरज़ अल्लाह ही देता है
शिफ़ा अल्लाह ही देता है

सर्दियों में क्यों हाल बेहाल हो जाता है?

विनय राणा

सर्दियों में आदमी का हाल बेहाल होता है। जिनके पास सर्दियों में बचने के साधन हुए उनके लिए तो सर्दियों में मौसम खुशगवार, लेकिन जिनके पास सर्दी से बचाव के साधन न हुए उनके लिए सर्दियां मुसीबत का पहाड़ लेकर आती हैं और अक्सर जान लेकर जाती हैं। परन्तु हमारा शरीर सर्दियों के आगे यूं ही हथियार नहीं डाल देता। बल्कि पहले वह सर्दी से पूरी लड़ाई लड़ता है तब कहीं जाकर मौत को गले लगाता है।

दुनिया में हर साल हजारों लोग ठंड से अकड़कर जान से हाथ धो बैठते हैं। वैसे तो इन मरने वालों में बच्चे, बूढ़े, जवान, स्त्री व पुरुष सभी होते हैं परन्तु बुढ़ों की संख्या सबसे ज्यादा होती है। भारत के उत्तरी हिस्से में दिसंबर और जनवरी की सर्दी शरीर को कंपकपाने वाली होती है और यदि कहीं साथ में हवा चल जाए तो सर्दी तीर की तरह शरीर में चुभती चली जाती है। जब तक शीत का प्रकोप थमता है तब तक हजारों लोग इसकी भेंट चढ़ चुके होते हैं। परन्तु दूसरी ओर दूसरे जीव सर्दियों में भी नंगे घूमते रहते हैं और सर्दी उनका कुछ भी नहीं बिगाड़ पाती। यह विरोधाभास क्यों? इसका उत्तर पाने तथा यह जानने के लिए कि सर्दी मनुष्य के लिए ही क्यों जानलेवा साबित होती है, हमें मनुष्य के शरीर की मौलिक विशेषताओं और सर्दी में होने वाले परिवर्तनों को जानना होगा।

ठंड से मौत अक्सर उन लोगों की होती है जिनके पास ठंड से बचने के साधन नहीं होते। ठंड के मौसम में अचानक भीग जाने और ठण्डी हवाओं में फंस जाने वालों की मौत और भी निश्चित हो जाती है। मनुष्य गर्म खून वाला जीव है। इसका मतलब यह है कि सामान्य अवस्था में मनुष्य के शरीर का तापमान ३७ डिग्री सेल्सियस अथवा ९७–९९ डिग्री फारेनहाइट पर स्थिर रहता है। घटता–बढ़ता नहीं चाहे वातावरण का तापमान कितना भी हो कम या अधिक। शरीर के भीतर भाग में इसमें थोड़ी भी कमी शरीर के लिए घातक होती है। हां शरीर को ढककर रखने वाली त्वचा का तापमान वातावरण की सर्दी–गर्मी के अनुसार थोड़ा कम या ज्यादा हो सकता है। हमारे शरीर में ऊर्जा का लगातार उत्पादन होता रहता है और आवश्यकता से अधिक सांस के साथ बाहर निकलने वाली वायु के साथ भाप के कणों के रूप में शरीर से बाहर निकलती रहती है।

यदि हम खाली बैठे रहें तब भी शरीर के भीतर चलने वाली चयापचयी गतिविधियों के दौरान होने वाली रासायनिक क्रियाओं में उष्मा पैदा होती है। शरीर के हिलने–डुलने मात्र से ही गर्मी पैदा होती है। शारीरिक श्रम करने पर तो गर्मी पैदा होती ही है। इसीलिए कम ठंडक में हल्की सी कसरत करने पर भी सर्दी नहीं लगती। हमारे खाली बैठे रहने पर शरीर में एक घंटे में ७० किलो कैलोरी, चहल कदमी करने पर १४० किलो कैलोरी, हॉकी या फुटबाल जैसा खेल खेलते समय ५०० किलो कैलोरी तक ऊष्मा पैदा होती है। पर्याप्त पौष्टिक आहार न लेने वाले तथा शारीरिक रूप से बेकार पड़े हुए लोगों का शरीर पर्याप्त ऊर्जा नहीं उत्पन्न कर पाता। इसलिए सर्दियों में ऐसे लोग ही अक्सर शीत लहरों की चपेट में पड़कर मौत का शिकार होते हैं।

हमारे शरीर में हाइपोथैलमस शरीर में ऊर्जा के उत्पादन और अतिरिक्त ऊर्जा के शरीर से निष्कासन पर नियंत्रण रखता है। हाइपोथैलेमस पर नियंत्रण रखता है। हाइपोथैलेमस को वातावरण के तापमान में कमी या वृद्धि की सूचना त्वचा भर में फैली हुई अत्यन्त संवेदी तंत्रिकाओं के माध्यम से प्राप्त होती है। ठंडक से शरीर की रक्षा करने में पहली भूमिका आहार और कपड़ों की होती है। परन्तु प्रकृति न शरीर को भी ठंडक से अपनी रक्षा करने की युक्ति दे रखी है। इस लिए आहार और कपड़ों से पर्याप्त सुरक्षा न मिलने पर शरीर एक–एक करके अपनी सुरक्षा प्रक्रियाओं का उपयोग करता है।

त्वचा में फैली हुई तंत्रिकाओं से त्वचा का तापमान गिरने की सूचना पाते ही मस्तिष्क शरीर की मांसपेशियों को तेजी से फैलने और सिकुड़ने का आदेश देता है। मांसपेशियों के फैलने और सिकुड़ने की क्रिया को ही कंपकपी छूटना कहते हैं। कंपकंपी के दौरान मांसपेशियों में आपस की रगड़ से ऊष्मा पैदा होती है। जो शरीर के भीतरी हिस्से का तापमान गिरने नहीं देती।

इस क्रिरया के दौरान एक घंटे में ६०० किलो कैलोरी से भी अधिक ऊष्मा पैदा हो सकती है।

जब इससे उत्पन्न गर्मी भी शरीर को गर्म रखने में समर्थ नहीं होती तो अगली कार्यवाही प्रारंभ होती है। इस कार्यवाही में त्वचा तक रक्त ले जाने वाली खून की नलियां सिकुड़ जाती हैं। जिससे त्वचा की और रक्त का बहाव कम हो जाता है और इस प्रकार त्वचा के माध्यम से होने वाली ऊष्मा की क्षति रुक जाती है। इस स्थिति में सांस तथा नाड़ी की गति धीमी हो जाती है। जब इससे भी काम नहीं चलता तब शरीर के महत्वपूर्ण अंगों जैसे दिल, मांसपेशियों और फेफड़ों को अपनी गतिविधियों में बदलाव लाने होते हैं। साथ ही इस परिस्थिति में थायरायड और एड्रीनल ग्रंथियां अधिक मात्रा में हार्मोन उत्पन्न करने लगती है। इन हार्मोनों की अधिकता से शरीर की चयापचयी गतिविधियां तेज हो जाती हैं जिससे अधिक ऊष्मा का उत्पादन होकर शरीर को गर्म रखने में सहायता मिलती है।

शरीर के भीतरी अंगों का तापमान गिरने की स्थिति को हाइपोथर्मिया कहते हैं। हाइपो का अर्थ है कम और थर्मिया का मतलब है तापक्रम। तापक्रम ३५ डिग्री सेल्सियत से नीचे गिरने पर हाइपोथर्मिया की स्थिति प्रारंभ हो जाती है। शरीर में कंपकपी इसी अवस्था में प्रारम्भ होती है और रक्त नलियों के सिकुड़ने की नौबत ३२ डिग्री सेंटीग्रेड तापक्रम के बाद आती है। तापक्रम ३० डिग्री सेंटीग्रेड पहुंचते–पहुंचते आदमी थक हार कर बेहोश होने लगता है। लेकिन बेहोशी से पहले शरीर एक आखिरी कोशिश करता है इस कोशिश में रक्त वाहिक्रियाएं एका–एक फिर फैल जाती हैं जिससे त्वाचा की ओर रक्त का बहाव एका–एक फिर तेज हो जाता है। लेकिन इसकी वजह से शरीर में तेजगर्मी का एहसास होता है जिससे आदमी अपने कपड़े उतार कर फेंकने लगता है। इस समय वह बावला होकर आंखें फाड़–फाड़ कर देखता है। इसके बाद आदमी धीरे–धीरे बेहोश हो जाता है।

शरीर का तापमान २८ डिग्री सेंटीग्रेड तक गिरना बहुत खतरनाक होता है। इस अवस्था में मनुष्य वेन्टीकुलर फाइब्रिलेशन नामक स्थिति का शिकार हो जाता है। ऐसा होने पर दिल की तमाम मांसपेशियों बिना किसी आपसी तालमेल के फैलने और सिकुड़ने लगती है जिससे खून का प्रवाह रूक जाता है और व्यक्ति की मौत हो जातती है। पानी में ठंडक का असर तेज होता है क्योंकि पानी में ऊष्मा का बहाव हवा की तुलना में २५ गुना अधिक तेजी से होता है। पानी में भीगने के साथ यदि हवा भी तेज चल रही हो तो शरीर से ऊष्मा का चय और अधिक तेजी से होता है।

बूढ़े व्यक्ति ठंडक का शिकार युवाओं और बच्चों की तुलना में अधिक आसानी से और जल्दी होते हैं। इस की वजह यह है कि इनका शरीर वयस्कों और बच्चों जैसी क्षमता के साथ अपने को गर्म नहीं रख पाता।

अध्ययनों के अनुसार हमारे मस्तिष्क का तापमान ३ डिग्री सेल्सियस कम होने पर व्यक्ति पहले मति भ्रम का शिकार होता है फिर उसकी याद्दाश्त जाती है, फिर मानसिक शक्ति समाप्त होती है। यह धारणा कि शराब व्यक्ति को ठंड से बचाती है नितांत भ्रामक है।

नअ़त

क़ारी हिदायतुल्लाह सिद्दीकी

गुशलन से तुमको प्यार है, रग़बत है फूल से
सम्मानवान हम हुए तैबा की धूल से।।
अभिरूचि बढ़ी है जूं जूं रस्मे फुज़ूल से
होते गये हैं दूर ख़ुदा से रसूल से।।
इ़ल्मो हुनर में आप को माना कमाल है।
कितना अ़मल है देखिये इसको भी भूल से।।
राहे ख़ुदा में सर को कटा कर भी जी उठे
क़ुर्बान होके खिल उठे चेहरे वह फूल से।।
असहा़बो अहले बैत की उलफ़त मिले भी क्या।
दिल में भरी हुई है कुदूरत रसूल से।
कहते हैं कमली वाले के हम सब हैं उम्मती।
मिलती नहीं कहीं से भी सूरत रसूल से
इच्छुक तेरी दया का हिदायत है ऐ ख़ुदा
सत्कर्म कुछ हुआ ना ज़लूमों जहूल से।।

सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम

मानवता की अर्थी

साकिब अब्बासी गाजीपुरी

मानवता बहुत ही छोटी शब्द है किन्तु उसका अर्थ इतना विशाल है कि उसमें धरती व आकाश समा जाये, अजब विडम्बना है कि आज के परिवेश में मानवता का सही अर्थ समझने वालों का अकाल पड़ता जा रहा है। ऐसा नहीं है कि ये संसार मानवतावादियों से बिल्कुल खाली हो गया है परन्तु मानवता उन्हीं तक सीमित होती जा रही है जो कमजोर व लाचार हैं जोकि मानवता को जीवित रखने के लिए अनशन प्रदर्शन और भूख हड़ताल तो करते है किन्तु उनका ये कदम प्रशासन और कथित बलवान लोगों के लिए केवल नौटंकी की हैसियत रखता है जिस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी जाती है।

आज पूरे विश्व में मानवता की अर्थी निकाली जा रही है मानो आभास कराया जा रहा है कि मानवता इस संसार की उपज थी ही नहीं। जिधर देखिये जुल्मो सितम भ्रष्टाचार और दहशत का बाजार गर्म है। कोई देश किसी देश के केवल एक आदमी को सारी दुनिया का खतरा बता कर उस देश के बेकुसूर निरीह जनता पर बमों और मिसाइलों की वर्षा कर रहा है। कोई संगठन अपनेधर्म की रक्षा के नाम पर बजाये शान्ति और प्रेम बांटने के त्रिशूल बांट रहा है। कोई गिरोह अपनी आजादी के नाम पर बेगुनाहों के शरीर को गोलियों से छलनी कर रहा है। सत्य तो ये है कि इन लोगों के लिये मानवता शब्द एक दुर्लभ वस्तु के प्रकार हो गई है जिसे सरकार संग्रहालय में रख कर रक्षा करती है और जनता जनार्दन उसके दर्शन करती है वास्तव में अगर गगन की ऊंचाइयों से धरती, की गोलाइयों से सूर्य की किरणों से चांद के चकोर से, नाचते मोर से, ठण्डी भोर से, सावन की काली मेघों से, पूछा जाये कि बताओ संसार का सबसे सुन्दर व प्रिय शब्द कौन सा है तो वह भी बेझिझक कहेंगे कि मानवता किन्तु मनुष्य आज मानवता का हर शब्दार्थ भूलता जा रहा है।

आज कई देशों के कथित न्यायप्रिय राजाओं और कथित धर्म विद्वानों ने अपने को सर्वोत्तम और अपनी प्रजा व धर्म को सबसे महान मानकर दूसरों के साथ कीड़े मकोड़े जैसा व्यवहार कर रहे हैं जैसे अधिकतर यहूदी व ईसाई, मुसलमानों के साथ कर रहे हैं।

कैसे कैसे दृश्य सामने आने लगे हैं
गाते गाते लोग चिल्लाने लगे हैं
अब तो इस तालाब का पानी बदल दो
इसमें लगे कमल मुर्झाने लगे हैं।

उन मानवता विरोधियों को ज्ञात नहीं कि कुरआन की आयते, इंजील के सरमन, बौद्धों के सुत्त, अवस्ता की गाथाएं, वेद के मंत्र, शेख सादी की सुक्तियां, कबीर के सबद,कन्फ्यूसियस के सुवचन और इकबाल की गजलें सभी एक ही प्यारे रब की ओर इशारा कर रहे हैं सभी मानव को एक ही पिता (आदम) का पुत्र होने का ज्ञान करा रहे हैं और मानवता की मशाल जलाये रखने की अपील कर रहे हैं किन्तु मानव स्वार्थ व कथित कट्टरता की आंधी में अपना अस्तित्व समाप्त करने पर उतारू हैं। प्रसिद्ध इस्लामी चिन्तक हजरत अली मियां नदवी रह० का कथन है कि अगर किसी देश में अमेरिका की दौलत, रूस का शासन तंत्र, अरब देशों के पेट्रोल के कुएं हों और सोने चांदी की गंगा यमुना बहती हो किन्तु उस देश में प्रेम का कुंआ सूख चुका हो वह देश कंगाल है उस देश पर अल्लाह की रहमतें न आएंगी।

आज के परिवेश में आवश्यकता है कि हर कोई धर्मान्धता जातिवाद, भाई–भतीजावाद, क्षेत्रवाद को भूल कर प्रेम व मानवता को बढ़ावा दे अन्यथा ऐसा न हो कि मानव की पहचान मानवता किसी दल दल में फंस कर दफन हो जाये।

●●●

(पृष्ठ ३२ का शेष)

अगर दिल में बात उतर जाये, अगर फ़िक्र हो जाए जिसे फ़िक्र कहते हैं, जहन्नम की आग का यक़ीन हो जाए तो नीन्द ही न आए जब तक बन्दों के हुक़ूक़ न अदा कर दें। फ़िक्र पैदा होना तो बहुत बाद की बात है यक़ीन ही कच्चा है जो यक़ीन कहने के लाइक़ नहीं। इस लिए हुक़ूक़, फ़र्ज़ और वाजिब चीजों को अदा करने और नाजाइज़ चीज़ों से रूकने की तरफ़ तवज्जुह नहीं।

(अनुवाद – इरफ़ान फ़ारूक़ी नदवी)

बन्दों के हुक़ूक़

मौ० आशिक़ इलाही

अल्लाह तआला फ़रमाता है – "औरतों को उनके महर ख़ुशी के साथ दो (निसा)। लेकिन औरतों के महर को पूरी पूरी उम्र गुज़र जाती है नहीं दिया जाता है। कहीं कहीं तो रवाज है कि जब पति की मृत्यु हो जाती है तो कुछ लोग पत्नी के पास जाकर उससे महर माफ़ करवाते हैं। इस तरह के रीति रिवाज के हिसाब से माफ़ कर देने से माफ़ नहीं होता जब तक कि वह अपने नफ़्स (अन्तर्मन) की ख़ुशी से न माफ़ कर दे। अगर उसने यह समझ कर कि माफ़ करूं या न करूं मिलना तो है नहीं कह दिया कि माफ़ करती हूं तो ऐसी माफ़ी का कुछ एतिबार नहीं। कुरआन में है "अगर तुम्हारी बीवियां दिल की ख़ुशी से कुछ महर छोड़ दें तो तुम उसे पसन्दीदा और अच्छा समझ कर खाओ। (निसा) इस लिए इसका भी यही तरीका है कि उनका महर उनके हाथ में दे दें फिर वह ख़ुशी से आप को दे दें तो आप ले सकते हैं।

लड़कियों की शादी कर दी जाती है और उनका महर पिता या और या कोई और रिश्तेदार वसूल कर लेता है। वसूल कर लेना और उस लड़की की अमानत समझते हुए अपने पास सुरक्षित रखना यह तो ठीक है। लेकिन लड़की के माल को बिना उससे पूछे अपने कब्जे में ले लेना और उसे अपनी मर्जी से खर्च करना, उसे अपना माल समझ लेना, फिर उसको कभी न देना या ऊपरी दिल से झूठी–मूठी माफी करा लेना जाइज नहीं है।

कुछ लोग कह देते हैं कि साहब शादी में जो हमने खर्च किया है उसके बदले में यह चीज हमने वसूल कर ली, या दहेज में लगा दी। जब कि पिता या कोई रिश्तेदार जो कुछ करता है केवल रीति रिवाज और दिखावे के लिए करता है और उनमें ज्यादातर खर्च कुरआन व हदीस के खिलाफ होते हैं। गाना बजाना और रंडियों के नाच होते हैं, दहेज भी दिखावे के लिए दिया जाता है और ऐसी ऐसी चीजें दी जाती है जो पूरी उम्र काम नहीं आतीं। सभी जानते हैं कि कुरआन व सुन्नत के खिलाफ खर्च करना और दिखावे के लिए अपना माल भी खर्च करना हराम है। फिर एक कमज़ोर लड़की का माल इस तरह खर्च करना कैसे जाइज़ हो सकता है। जो खर्च करें अपने माल से और वह भी इस्लामी कानून के हिसाब से न कि लड़की के महर से, उसकी इजाजत के बिगैर उसके माल का खर्च करना जुल्म है। उससे पूछते तक नहीं और उसका माल उड़ा देते हैं। अगर कोई यह कहे कि वह चुप रहती है कुछ बोलती नहीं उसका चुप रहना ही इजाज़त है। लेकिन यह बात सही नहीं माल व दौलत के बारे में इस तरह की चुप्पी इजाज़त नहीं बन सकती। उसका माल उसे दे दो, उस पर किसी प्रकार की ज़बरदस्ती, बदनामी और रवाज का डर न हो फिर भी वह खुशी से जो कुछ आपको दे दे उसको अपना समझ सकते हो।

और यह भी समझ लेना चाहिए कि इस्लामी कानून के हिसाब से होने वाली शादी में लड़की का कोई खर्च नहीं। एक की इजाज़त देने और दूसरे कबूल कर लेने से निकाह हो गया। उसके बाद लड़की की ससुराल भेज दो। सवारी का खर्च पति देगा जो अपनी बीवी को ले जाएगा। लड़की या उसके घर परिवार वालों के जिम्मे कुछ खर्च नहीं आता। रवाजी बखेड़ों और दिखावे की कोशिशों ने इस्लामी शिक्षा के विरूद्ध मुसलमानों को लगा रखा है।

यह कहने वाले भी मिलते हैं कि हमने जन्म से लेकर आज तक खर्च किया है वह हमने वसूल कर लिया यह भी जाहिलाना उत्तर है। क्योंकि कानून के तो खिलाफ है ही, महब्बत व हमदर्दी के भी विरूद्ध है। इसका मतलब तो यह हुआ कि जो कुछ आप खर्च करते आए हैं वह एक व्यापार था, और वह भी ऐसी तिजारत जिसका कोई लेखा–जोखा नहीं, पन्द्रह बीस साल खर्च करने के बाद उससे वसूल कर लेंगे, उधार खर्च करके पैसा वसूल कर लेना यह तो पराए भी कर देते हैं आप ने अपनी औलाद के साथ क्या एहसान किया।

आजकल बिना बुलाये लोग दूसरे की विवाह पार्टी आदि की दअवत में चले जाते हैं। ऐसी दअवत का खाना जाइज नहीं, अगर कोई संकोच की वजह से न रोके तो उसका कोई ऐतिबार नहीं। हदीस में है कि जो बिन दअवत के खाना खाते हैं चोर बन कर जाते हैं और लुटेरे बन कर निकलते हैं। (तिर्मिजी)

इसलिए ऐसी चुप्पी को इजाजत समझना खुली हुई गलती और अपने आपको धोके में डालने वाली बात है। अगर कोई आदमी चार लोगों की दअवत करे और पांचवा भी साथ चला जाए और दअवत देने वाला उसे संकोच की वजह से कुछ न कहे तो पांचवे आदमी का खाना जाइज नहीं।

कुछ लोग हंसी मजाक में किसी की चीज लेकर चल देते हैं और फिर सचमुच रख लेते हैं। हालांकि जिसकी चीज होती है वह खुशी खुशी उसको देना नहीं चाहता। इसलिए इस प्रकार लेना हराम है चाहे जिसकी चीज है वह चुप ही क्यों न रहे।

एक गलत रवाज यह पड़ गया है कि किसी के मर जाने पर उसके माल से गरीबों व दरिद्रों की दअवत करते हैं और उसके कपड़े आदि सवाब (पुण्य) की नियत से दे देते हैं। हालांकि उसके छोड़े हुए सामान, माल आदि को बांटने से पहले इस प्रकार खर्च करना सहीं नहीं। क्योंकि पहले तो सभी वारिस (हिस्सा पानेवाले) बालिग (व्यस्क) नहीं होते और जो होते हैं तो सभी उस समय उपस्थित नहीं होते उनमें से बहुत से सफर पर था अपनी रोजी रोटी के चक्र में कहीं दूर होते हैं। सबकी अनुमति लिए बगैर ऐसे माल को खर्च करना ठीक नहीं। रस्म व रवाज का कोई ऐतिबार नहीं। माल को बांट कर हिस्सेदार को दे दो। फिर वह अपनी खुशी से मुर्दे को सवाब पहुंचाने के लिए इस्लामी कानून के हिसाब से खर्च सकता है, वह भी दिखावे के लिए न हो। और यह भी भलीभांति समझ लेना चाहिए कि नाबालिग (अव्यस्क) की इजाजत तक कोई एतिबार नहीं चाहे वह खुशी से ही क्यों न दे।

एक तहसीलदार साहब हजरत मौलाना अशरफ अली थानवी रह० से बैअत हुए और उनकी दीनी हालत सुधरने लगी और आखिरत की फिक्र व डर ने उन्हें बन्दों के हुकूक अदा करने की तरफ मुतवज्जेह किया। तो उन्होंने पोस्टिंग के जमाने में जो रिश्वतें ली थीं उनको याद किया और उन्हें जोड़ा, ज्यादातर वह पंजाब के तहसीलों में तहसीलदार रहे थे और जिन लोगों से रिश्वतें ली थीं उनमें ज्यादातर सिख कौम के लोग थे। उन्होंने तहसीलों में जाकर मुकद्दिमात के फाइलें निकलवाईं और उनके द्वारा मुकद्दिमे वालों के पते लिए फिर गांव गांव घर–घर उनसे मिलने गए। बहुतों से माफी मांगी और बहुतों को नकद रकम दे कर छुटकारा प्राप्त किया। उन तहसीलदार साहब ने अपनी यह कहानी स्वयं एक साहब को सुनाई थी।

यह प्रश्न पूछा जा सकता है कि कुछ लोग ऐसे हैं जिन्होंने हुकूक तो मार लिए और जो होना था हो चुका अब उनके पास पैसे नहीं, इस लिए वह अब हक कैसे अदा करें और बहुत लोगों के पास पैसा तो है लेकिन किन–किन लोगों का हक मारा है वह याद नहीं और ढूंढने से भी नहीं मिलता सकते, उनको पहुंचाने का कोई रास्ता नहीं अब यह लोग क्या करें?

इसका उत्तर यह है कि अल्लाह तआला के कानून में इसका भी हल है वह यह कि जो हक वाले मालूम हैं उनसे मिलकर या पत्र के द्वारा माफी मांगे और बिल्कुल खुश कर दे जिससे अन्दाजा हो जाए कि उन्होंने हुकूक माफ कर दिए और अगर वह माफ न करें तो उनसे मोहलत ले लें कि थोड़ा–थोड़ा कमा कर अदा कर देंगे और अपने आय से बचाकर अदा कर दे और अगर हक अदा होने से पहले वह मर जाए तो उनकी औलाद को हक पहुंचा दें।

और जिन लोगों को पता नहीं कि किन किन के हुकूक उन्होंने मार रखे हैं लेकिन यह पता है कि इतना माल दूसरे का तो उतना माल इस नियत से कि जिसका हक है उसको सवाब (पुण्य) पहुंच जाए गरीबों में बांट दें। इसके साथ ही जिनके हुकूक उसके जिम्मे हैं उनके लिए अल्लाह तआला से दुआ और इस्तिगफार करते रहें।

हजरत शेखुलहदीस मौलाना ज़करिया साहब ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि हजरत अशरफ अली थानवी के पिता की दो बीवियां थीं। पिता को मौत के बाद उन्हें खयाल आया कि उनके माताओं के महर उनके पिता ने नहीं दिए थे। उनकी दोनों बीवियों का भी देहान्त हो चुका था। हजरत थानवी ने उनके रिश्तेदारों को ढूंढा और उनमें से जिस–जिस को मां के मरने के बाद उनके छोड़े हुए माल से हिस्सा मिल सकता था सब को दिया, उनमें से जो लोग चल बसे थे उनकी औलाद को दिया। उनमें से एक बीवी कांधला (हजरत शेखुल हदीस के शहर) की थीं। उनके किसी रिश्तेदार के दो पैसे निकलते थे तो हजरत थानवी ने हजरत शेखुल हदीस को इस बात का जिम्मेदार बनाया कि उनके दो पैसे उन्हें दिए जाएं।

सच्ची बात तो यह है कि हम लोगों को आखिरत की कोई फिक्र नहीं

(शेष पृष्ठ ३० पर)

गणतन्त्र दिवस

(२६ जनवरी २००८)

मो० हसन अन्सारी

हमारे देश भारत का गणतंत्र दिवस जिसे रिपब्लिक डे या यौमे जमहूरिया कहते हैं, २६ जनवरी को राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाया जाता है। आजाद भारत के आजाद भारतवासियों के द्वारा चुने गये विद्वानों द्वारा हमारे देश का जो संविधान (दस्तूरे हिन्द) लगभग दो साल में बड़ी मेहनत से तैयार किया गया था उसे २६ जनवरी १९५० को लागू किया गया। यह दिन हमारी सम्पूर्ण प्रभुसत्ता का दिन है। हमारे संविधान को संक्षिप्त इतिहास यह है कि १५ अगस्त १९४७ को आजादी मिलने के बाद २९ अगस्त १९४७ को कान्स्टीटयन्ट असेम्बली ने संविधान तैयार करने के लिए एक ड्राफ्टिंग कमेटी बनाई जिस के चेयरमैन डॉ० भीमराव अम्बेडकर थे। कमेटी ने संविधान का ड्राफ्ट तैयार करके कांस्टीट्यन्ट असेम्बली (**Constituent Assembly**) के सम्मुख ४ नवम्बर १९४८ को प्रस्तुत किया। तैयार संविधान पर कान्स्टीटयून्ट असेम्बली के सदस्यों ने २६ नवम्बर १९४९ को हस्ताक्षर किये और २६ जनवरी १९५० को हमारा अपना संविधान लागू हो गया। जिसकी रोशनी में १९५१ तक जन प्रतिनिधि ऐक्ट बना और देश में पहला आम चुनाव १९५२ में सम्पन्न हुआ।

भारत के संविधान की प्रस्तावना (**Preamble**) में जिन उद्देश्यों का उल्लेख है उसमें प्रमुख ये हैं। हम भारत के लोग अपने देश के शासक हैं। हम इसके मालिक हैं। हमारा मुल्क सावरेन (**Sovereign**) हैं। हमारा लोकतांत्रिक राज्य है। हम अपना प्रतिनिधि चुनते हैं जो हमारे लिये कानून बनाते हैं। हमारा देश एक रिपब्लिक है अर्थात हमारा राष्ट्राध्यक्ष पुश्तैनी नहीं होता, वह चुना जाता है। हम भारत के लोग एक ऐसा समाज बनाने का संकल्प लेते हैं जिस में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय हो। इजहारे ख्याल (विचारों की अभिव्यक्ति) की आजादी हो। (अभिव्यक्ति की आजादी का मतलब बेलगाम नहीं)। और जिसमें सभी नागरिक जाति,धर्म, रंग अथवा दौलत के आधार पर बिना किसी भेद–भाव के समान हों।

जमहूरियत एक खास शासन प्रणाली है जिसमें अवाम का बहुत से लोग सियासी कन्ट्रोल का इस्तेमाल करते हैं। अब्राहम लिंकन के अनुसार "जमहूरियत अवाम की हुकूमत है, अवाम के लिये है और आवाम के जरिये चलाई जाती है। राजनीतिक, समाजी और आर्थिक आजादी और बराबरी की मांग जमहूरी (लोकतान्त्रिक) तरक्की की बुनियाद है। जब तक नाबराबरी कायम है तब तक आजादी और इन्साफ का वजूद (अस्तित्व) मुम्किन नहीं। सियासी जमहूरियत समाजी जमहूरियत के बिना बे मअ़ना है। मीनिंग लेस है। लोकतंत्र की विशिष्ट विशेषताएं निम्नवत हैं।

(१) सामान्य मताधिकार और प्रतिनिधि सरकार का शासन।

(२) दस्तूर की बालादस्ती।

(३) जवाबदेह (उत्तरदायी) हुकूमत।

(४) कानून की हुक्म रानी और अदलिया (न्यायपालिका) की आजादी।

(५) इजहारे ख्याल (अभिव्यक्ति) की आजादी।

(६) सियासी जमाअत (राजनीतिक पार्टी) बनाने और सरकार कीं आलोचना (तनकीद) करने की आजादी

(७) मतभेद होने की दशा में संवाद (बातचीत) तथा समझौता के साथ शान्ति तरीकः से समस्या हल करने की आजादी और बुनियादी हुकूक की रक्षा

(८) अल्पसंख्यकों के हितो की रक्षा।

(९) व्यक्तिगत आजादी और बुनियादी हुकूक की रक्षा।

(१०) जनकल्याणकारी लक्ष्य।

गणतंत्र दिवस की पावन बेला पर बुद्धिजीवी वर्ग को जमहूरियत (लोक तन्त्र) की इन विशेषताओं पर ध्यान देने, इन्हें आम करने और सामान्य नागरिकों द्वारा कितना व्यवहार में लाया जाता रहा है। कितना अमल किया जा रहा है? यह हर एक के लिये आत्म चिन्तन का विषय है। हमारे अपने बनाये हुए कानून को देश में लागू हुए ५८ साल हो गये। इसमें सौ से अधिक संशोधन किये जा चुके हैं, फिर भी कानून तोड़ने की कितनी घटनाएं प्रतिदिन घटित होती रहती है? कानून की निगाह में अनभिज्ञता (**Ignorance**) क्षम्य नहीं है। गैर जानकार लोग कानून

तोड़ें तो उतना चौंकाने वाली बात नहीं जितना जानकार और खुद कानून बनाने वालों द्वारा कानून तोड़ने की बात है। इस पर हर भारतवासी को बेचैन हो जाना चाहिए। हम यह न देखें कि कानून तोड़ने वाला हमारी पार्टी का है जाति–बिरादरी का है, असरदार है। हम यह देखें कि कानून की बालादस्ती हो उस के वजूद पर आंच आ रही है। उसे तोड़ा जा रहा है। ऐसा न हो। हम इस के लिये क्या कर सकते हैं? जब आग लगती है तो लूला लंगड़ा भी उसे बुझाने के लिये अपने तौर पर दौड़ पड़ता है। हम जागें और जगायें।

भौतिकवाद के इस युग में कम से कम समय में अधिक से अधिक दौलत और शुहरत (ख्याति) बटोरने की छोड़ लगी है। नजर लक्ष्य पर है साधन सही कम गलत ज्यादा है। मीन्स (डमंदे) गलत होंगे तो लक्ष्य (म्दक) की प्राप्ति शार्ट कट से तो हो जायेगी परन्तु वह न तो सुख दायक होगी और न ही टिकाऊ। ऊपर से हमारी उलझनें (Tension) बढ़ेंगी, सुख की नींद नहीं आयेगी।

कानून तोड़ने से हमारी मान–मर्यादा घटती है, इन्सान मान मर्यादा के लिय जीता है। समाज में तनाव और दूरियां बढ़ती हैं। अदालतों का बोझ बढ़ता है। और न्यायिक प्रक्रिया प्रभावित होती है। किरदार बिगड़ता है आकिबत खराब होती है। जबकि कानून का पालन करने पर सभ्यता संवरती है, समाज सुखी बनता है, फासिले कम होते हैं, व्यक्ति को सुख–चैन की नींद आती है, आकिबत संवरती है, उलझनें कम होती हैं, हमदर्दी बढ़ती है, आत्मीयता बढ़ती है। अन्तःकरण (जमीर) की खुशी हासिल होती है, व्यक्ति की शक्ति (म्द. मतहल) और समय बचता है। अदालतों के चक्कर नहीं लगाने पड़ते, जेल की हवा नहीं खानी पड़ती। जीवन सुखमय बनता है जिस की तलाश हर व्यक्ति को रहती है। सत्यमेवजयते का यही सन्देश है।

गणतन्त्र दिवस को राष्ट्रपति भवन दिल्ली के सामने विशाल आयोजन होता है जिसमें भौतिक विकास की झांकियां निकाली जाती हैं, जल–थल–वायु सेना की उपलब्धियों का प्रदर्शन होता है, इन के करतब दिखाये जाते हैं। यूनिटी इन डाइवरसिटी के मुजाहिरे होते हैं। यही नहीं, गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर भारत के राष्ट्रपति देशवासियों का ध्यान अपने सम्बोधन में अच्छी बातों और नैतिक मूल्यों को रिस्टोर करने की तरफ हर साल आकर्षित करते रहते हैं। परन्तु क्या हमने इन सन्देशों के प्रति बहरे और गूंगे होने का सबूत नहीं दिया? क्या यह हमारी चाल में बदलाव लाने में सफल रहे हैं। समय नहीं बुरा होता। हम बुरे होते हैं। समय बुरा होने पर आये, कुदरत कानून तोड़ने पर आये तो सूरज पूरब के बजाए पच्छिम से निकले, हवा–पानी का रूख बदल जाये और तब नहीं होता। सृष्टि का रचैयता बड़ा दयालु है, वह रहमान है, रहीम है।

रिपब्लिक डे, योमे जमहूरिया हम सब को मुबारक हो। हम बदलें। एक बनें। नेक बनें। हम बदलेंगे जग बदलेगा । बूंद–बूंद घड़ा मरता है। ईश्वर हमें सदबुद्धि दें। हमारे दिलों को निरोग बना दें।

(पृष्ठ ४० का शेष)

हो गयेजिनमें सत्रह अहले बैअत के नौजवान थे। आप का सर और आपके साथियों से बचे हुए लोगों को उबैदुल्लाह के पास लाया गया उसने सबको यजीद के पास भेज दिया। उन लोगों में हजरत हुसैन रजि० के लड़के अली भी थे वह बीमार थे उन्हीं में उनकी फूफी जैनब भी थीं। जब यह लोग यज़ीद के पास पहुंचे तो उसने अपने घर वालों में उन्हें भेज दिया फिर उनको मदीना रवाना किया।

मैं (हाफिज इब्ने हजर) कहता हूं कि हजरत हुसैन के शहीद होने के बारे में बहुत से उलमा ने किताबें लिखी हैं जिसमें झूठ–सच, गलत सही सब कुछ इकट्ठा कर दिया। यह जो कुछ मैंने नकल किया उस सब से बेनियाज़ कर देता है।

हजरत इब्राहीम नखई से सही सनद से साबित है वह कहते हैं कि अगर मैं उन लोगों में होता जिन्होंने हजरत हुसैन से जंग की थी फिर जन्नत में भी मुझे प्रवेश दे दिया जाता तो मैं रसूलुल्लाह (सल्ल०) के चहरे की तरफ देखने से शर्म करता।

हजरत इब्ने अब्बास रजि० कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को सपने में बिखरे हुए बाल और परागन्दा हालत में देखा आपके हाथ में एक शीशी थी जिसमें खून था मैंने कहा ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे मां बाप आप पर न्यौछावर हों यह क्या है? आपने फरमाया यह हुसैन और उनके साथियों का खून है। जिसको मैं बराबर सुबह से इकट्ठा कर रहा हूं। यह उस दिन की बात है जिस दिन आप शहीद हुए हैं।

हजरत उम्मे सलमा कहती हैं कि मैंने जिन्नों को सुना वह हुसैन बिन अली पर शोक कर रहे थे।

जुबैर बिन बक्कार कहते हैं कि हजरत हुसैन ६१ हिजरी में मुहर्रम के दस तारीख को शहीद किए गए। यही ज्यादातर उलमा की राय है। जो लोग इसके खिलाफ कहते हैं, उनकी बात सही नहीं है।

(अनुवाद : इरफान फारूकी नदवी)

१८५७ के १५० वर्ष पूरा होने पर विशेष प्रस्तुति

एक गुमनाम स्वतन्त्रता सेनानी

एम हसन अंसारी

बात १९४२ की है। वही सन् बयालीस जिसे भारतीय इतिहास में भारत छोड़ो आन्दोलन के नाम से जाना जाता है। यही वह साल था जब भारतवासियों ने एक जुट हो कर अंग्रेजो से, जो उस समय हिन्दुस्तान पर शासन कर रहे थे, आंख मिलाकर यह कहने का साहस जुटाया था, "अंग्रेजो ! भारत छोड़ो; और देश के गली कूचों में यह आवाजें गूंज रही थी।

हुक्म हाकिम का है फरियाद जबानी रूक जाये।

दिल में बहती हुई गंगा की रवानी रूक जाये।

कौम कहती है हवा बन्द हो पानी रूक जाये।

पर यह मुमकिन नहीं यह जोशे जवानी रूक जाये।।

हों खबरदार जिन्होंने यह अजीयत दी है।।

कुछ तमाश नहीं यह कौम ने करवट ली है।

(पं० ब्रजनारायण चकबस्त)

सर कटाने की तमन्ना अब हमारे दिल में है।

देखना है जोर कितना बाजु–ए–कातिल में है।।

(बिस्मिल आजमी)

आजमगढ़ के लोग अपने नाम के साथ आजमी लिखते आये हैं जैसे लखनऊ के लोग लखनवी। मेरे एक दोस्त और मेरे सीनियर्स में हबीबुल्लाह आजमी साहब हैं, जिन्हें उर्फेआम में आजमी साहब के नाम से जाना जाता है। आजमी साहब की पैदाइश जनवरी १९२८ की है। और जन्मस्थान मऊनाथ भंजन है। इन्होंने उत्तर प्रदेश के शिक्षा विभाग में चौंतीस साल सेवा की है और १९८६ में प्रधानाचार्य राजकीय इण्टर कालेज, हुसैना बाद लखनऊ के पद से रिटायर हुए। और उसके बाद दीनी तालीमी कौंसिल उत्तर प्रदेश के कार्यालय अध्यक्ष रहे। और पढ़ने–लिखने के काम में अपने को व्यस्त रखते हुए किताबें लिखीं, सरकारी स्कूलों में चल रही किताबों का जायजः लिया, इस्लामी लिट्रेचर का हिन्दी में तर्जमः किया और कर रहे हैं। और लखनऊ से निकलने वाली हिन्दी मासिक पत्रिका "सच्चा राही" के सह–सम्पादक का कार्य निष्ठा और लगन के साथ अंजाम दे रहे हैं।

आजमी साहब बड़ी हिम्मत वाले इन्सान हैं और न सताइश की तमन्ना न सिले की परवाह पर अमल पैरा रहते हुए खामोशी से अपना काम करते रहते हैं। वह कलम के सिपाही हैं।

एक दिन मैं ने आजमी साहब से कहा, "कुछ आप बीती सुनाइये। कुछ न बोले। चन्द दिनों के बाद उन्होंने सन् १९४२ की एक घटना लिख भेजी। मुझे लगा यह तो एक गुमनाम स्वतंत्रता सेनानी हैं। उन्होंने लिखा कि मेरा जन्म एक ऐसे मुस्लिम बाहुल्य कस्बे मऊनाथ भंजन जिला आजमगढ़ में हुआ था जहां जमीअतुल उल्मा–ए–हिन्द का पूरा असर था और इसके अध्यक्ष मौलाना हुसैन अहमद मदनी बराबर मऊ आते रहते थे। बचपन में उनकी तकरीरों को सुनकर मेरे दिल में देश की आजादी के लिए तड़प पैदा हुई और विद्यार्थी जीवन के प्रारम्भिक वर्षों से ही आजादी के मतवालों की जीवनी पढ़नी शुरू कर दी। जब मिडिल पास करके मैंने जीवन राम हाई स्कूल में दाखिला लिया तो वहां मुझे ऐसे अध्यापक और साथी मिले जिन से और अधिक पढ़ने की प्रेरणा मिली। इस का नतीजा यह हुआ कि मेरे मन में अंग्रेजी राज्य से नफरत और अंग्रेजों को देश से निकाल बाहर मुल्क को आजाद कराने की तमन्ना पैदा हुई।

नौ अगस्त १९४२ को कांग्रेस ने भारत छोड़ो आन्दोलन का प्रस्ताव पास किया। उस समय मैं दसवीं क्लास का छात्र था। कांग्रेस के सभी नेता बन्दी बना लिये गये। यह खबर पूरे मुल्क में जंगल की आग की तरह फैल गयी। दसवीं कक्षा के विद्यार्थी ने मऊ कस्बा के बाजार और स्कूलों को बन्द कराने के लिए निकल पड़े। इस जुलूस का नेतृत्व मैं कर रहा था। पूरे कस्बः की दुकानें बन्द कराई गयीं। सभी स्कूलों के छात्र और कस्बः के सभी हिन्दू–मुसलमान जुलूस में शरीक हुए जो एक विशाल सभा में तबदील हो गया। वहां छात्रों के जोशीले भाषण हुए और आजादी की नज्में पढ़ी गयीं। रात को आगे की रणनीति बनाने के लिये छात्रावास में मीटिंग हुई। बनारस

हिन्दू यूनिवर्सिटी के छात्र भी मीटिंग में शरीक थे उन्होंने यह प्रस्ताव रखा कि मऊ थाना पर कब्जा कर लिया जाये। इस सिलसिले में स्थानीय कांग्रेसी नेताओं से सम्पर्क किया गया। उन्होंने सलाह दी कि पहले हमें आन्दोलन को तेज करना चाहिए और पूरी जनता को आन्दोलन में शरीक करना चाहिए। दूसरे दिन भी हड़ताल रही। और एक बड़ा जुलूस निकाला गया जिस की मीटिंग में तय पाया कि हम लोगों को आजमगढ़ शहर के छात्रों और वहां के आन्दोलनकारियों से सम्पर्क स्थापित कर के उन का मार्गदर्शन प्राप्त कर अपना आन्दोलन चलाना चाहिए। अतएव एक टोली जिस में कामता प्रसाद सिंह, सुमेर सिह और खाकसार शामिल थे, दोपहर को ट्रेन से आजमगढ़ जाने के लिए स्टेशन पहुंचे। हमारे साथ छात्रों की एक भीड़ भी स्टेशन आ गयी जिस का नेतृत्व अबू बक्र अंसारी और खैरूल बशर कर रहे थे। इसी बीच यह खबर आई कि पब्लिक ने मऊ नोटीफाइड ऐरिया के दफ्तर को फूंक दिया और रौजा चौक में गोली चल गई। स्टेशन पर आई भीड़ यह खबर सुनकर उत्तेजित हो गयी और उसने ट्रेन के शीशे तोड़ना शुरू कर दिये। ट्रेन चल दी। खुरहट स्टेशन पर पहुंचे तो वहां एक भीड़ इकट्ठा थी । भीड़ हम लोगों को देखते ही नारे लगाने लगी और स्टेशन को आग लगा दी। हम लोग यह फैसला कर के कि आगे नहीं जाना चाहिए, वहीं स्टेशन पर रूक गये। सुमेर सिंह का गांव वहां से दो तीन मील दूर था। हम लोग वहां चले गये। रात को वहीं रूके और दूसरे दिन आजमगढ़ के लिये रवाना हुए। वहां पहुंच कर पता चला कि यहां के छात्र तथा कांग्रेस के नेता सराय मीर के एक बड़े हाते में टिके हुए हैं और वहीं से आन्दोलन का नेतृत्व कर रहे हैं। उन्हीं में छात्र नेता श्री हरी जो मऊ में मेरे साथी रह चुके थे, और अब सनातन धर्म कालेज आजमगढ़ में पढ़ रहे थे, मौजूद थे। मैं वहां पहुंचा। काफी लोग वहां मिले और रात वहीं गुजारी। दूसरे दिन सूचना मिली कि गोरों की फौज आजमगढ़ पहुंच गई है। और दमनात्मक कार्यवाही बड़े जोर शोर से हो गयी है। राय हुई कि सब को यहां से हट जाना चाहिए। मैं मऊ वापस आ गया। वहां भी फौज पहुंच चुकी थी। और आन्दोलन को कुचल देने की कार्यवाही शुरू हो गई थी। वहां के एक बड़े नेता राधेरमन अग्रवाल गिरफतार हो चुके थे। उनके घर पर फौज ने छापामारा और घर का सारा सामान तथा कपड़ा लत्ता लुटवा दिया।

आन्दोलन को कुचल दिया गया। स्कूल खुल गये। मैं भी स्कूल जाने लगा। एक महीने के बाद मालूम हुआ कि मेर नाम वारन्ट गिरफतारी है। दूसरे दिन स्कूल में लगभग ११ बजे रेलवे पुलिस के एक दारोगा और चार बन्दूकधारी सिपाही हेडमास्टर साबह के कमरे में आये। चपरासी मुझे बुलाने आया। स्कूल के सारे छात्र कक्षाओं से बाहर निकल आये, मुझे रोका और पुलिस से लड़ने को तैयार हो गये। मैं ने देखा कि अब तो गोली चल जायेगी और हमारे साथी मारे जायेंगे। मैंने एक संक्षिप्त भाषण दिया और अपने साथियों को समझाया कि यह मौका जोश दिखलाने का नहीं होश से काम लेने का है। हम निहत्थे हैं। मारे जायेंगे। लड़ाई में कभी कभी पीछे हटना पड़ता है। आजादी की लड़ाई छिड़ चुकी है। अन्ततः हम सफल होंगे। विजय हमारी होगी। हम आजादी लेकर रहेंगे। हमें धैर्य से काम लेना चाहिए। मेरे संक्षिप्त सम्बोधन का मजमे ने असर लिया। जब मैं हेडमास्टर साबह के कमरे में पहुंचा तो दो और छात्र खैरूल बशर और सुदामा चौबे को बुलाया गया। हेडमास्टर साहब ने कहा कि आप लोग दारोगा साहब के साथ चले जायें वह कुछ पूछ ताछ करेंगे। हम लोग उनके साथ चले। पूरे स्कूल के छात्र बाहर खड़े देखते रहे, मगर मेरे भाषण का असर था कि उन्होंने कोई विरोध–प्रदर्शन नही किया। पुलिस हम लोगों को स्टेशन और रातभर हवालात में रखा। दूसरे दिन सुबह की ट्रेन से आजमगढ़ जेल भेज दिया गया। एक हफ्ते बाद जेलर ने मुझे अपने कक्ष में बुलाया और कहा तुम माफी मांग लो तो तुम्हें छोड़ दिया जायेगा। मैंने इन्कार कर दिया।

उस समय मां–बाप का मैं एकलौता बेटा था। उनके दिल पर जो गुजरी होगी उसका अन्दाजा आसानी से लगाया जा सकता है। मेरे ताऊ हकीम मुहम्मद सलीम जो मिडिल स्कूल के हेडमास्टर थे, ने अंथक प्रयास किया। वह जिला कलेक्टर तथा पुलिस कप्तान जो अंग्रेज था से मिले। और स्कूल का सर्टीफिकेट, जिस के अनुसार उस समय मेरी उम्र चौदह साल की थी, दिखाकर तर्क दिया कि भला चौदह साल का एक बालक इतने बड़े आन्दोलन का नेतृत्व कैसे कर सकता है? कप्तान ने आदेश किया शिनाख्त कराई जाये। और यदि इन की शिनाख्त नहीं होती और ये पहचाने नहीं जाते तो इन्हें

छोड़ दिया जाये। मेरे ताऊ ने कुछ ऐसे इन्तिजाम किये कि दोनों गवाह ने हम तीनों को नहीं पहचाना और हम को एक माह जेल में रखने के बाद छोड़ दिया गया।

दूसरे दिन जेल से छूटने के बाद हम लोग सीधे स्कूल पहुंचे। हाई स्कूल परीक्षा का फार्म भरा जा रहा था। मेरा नाम कट चुका था। मेरा हाई स्कूल का वजीफा बन्द कर दिया गया था। हेडमास्टर साहब से काफी तर्क–वितर्क के बाद मेरा नाम लिखा गया और परीक्षा फार्म भरवा लिया गया।

१९४३ में हाई स्कूल पास करने के बाद क्रिश्चियन कालेज इलाहाबाद में दाखिला लिया और वहां से इण्टर परीक्षा पास करके अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी से बी०ए० तथा बी०टी० की परीक्षा पास किया। उन दिनों अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी में मुस्लिम लीग का बड़ा जोर था। वहां कुछ छात्रों ने मुस्लिम लीग के समानान्तर नेशनलिस्ट मुस्लिम फेडरेशन बना रखा था। मैं भी उसकी कार्यकारिणी का सदस्य रहा। अलीगढ़ से बीटी करने के बाद मेरी नियुक्ति मजीदिया इस्लामिया कालेज, इलाहाबाद में अध्यापक के पद पर हुई जहां मैंने चार साल पढ़ाया। इस के बाद कमीशन (लोक सेवा आयोग उत्तर प्रदेश) से मेरा सेलेक्शन हो गया और मेरी सरकारी सेवा में प्रथम नियुक्ति भूगोल अध्यापक के पद पर गवर्नमेंट हाई स्कूल हरदोई में की गयी।

आजादी की लड़ाई का मकसद मुल्क को आजाद कराना था। एक ऐसे भारत का सपना था जहां शान्ति और सुख, एकता तथा भाई चारा का बोलबाला होगा। शिक्षा, स्वास्थ्य तथा सामाजिक न्याय का दौर दौरा होगा। भारत एक सावरेन (प्रभुत्ता सम्पन्न) तथा सेकुलर (धर्मनिर्पेक्ष) देश होगा। हमारा अपना संविधान होगा। हम अपने देश और अपनी धरती के मालिक होंगे। सद्भावना, समरसता तथा सद्विचारों व सहृदयता की गंगा बहेगी। मानवता सर उठायेगी। पर ऐसा नहीं हुआ विशेषकर गत दो तीन दशक के दौरान। इस अवधि में भ्रष्टाचार, अनाचार, अत्याचार, रिश्वतखोरी, घोटालों, जातिवाद, क्षेत्रवाद, संकीर्ण विचारों, स्वार्थ तथा अमानवीय मूल्यों का ग्राफ तेजी से ऊपर बढ़ा है। इस का नोटिस लिया जाना चाहिए विशेषकर शिक्षा जगत और बुद्धिजीवी तथा धार्मिक लाग आगे आयें और मुल्क को गर्त में गिरने से बचायें। यही मेरा पैगाम है।''

(पृष्ठ १६ का शेष)

सबसे पहले आपने किए हैं -

१. सबसे पहले मर्दों में आप मुसलमान हुए।

२. कुरआन का नाम सबसे पहले मुस्हफ रखा।

३. कुरआन को आपने सबसे पहले एक जिल्द में इकट्ठा करवाया।

४. सबसे पहले आप ही ने कुरैश के काफिरों से आप की मदद में जंग लड़ी।

५. इस्लाम में सबसे पहले आपने मस्जिद बनवाई।

६. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सबसे पहले आपको हज का जिम्मेदार बना कर भेजा।

७. आप को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बार–बार नमाज पढ़ाने का हुक्म दिया।

८. सबसे पहले खुलफाए राशिदीन में से हैं और सबसे पहले आपको यह नाम मिला।

९. सबसे पहले खलीफा हैं जो बाप की जिन्दगी में खलीफा बने।

१०. सबसे पहले खलीफा हैं जिनका वजीफा प्रजा ने जारी किया।

११. सबसे पहले बैतुलमाल आप ने बनाया।

१२. सबसे पहले जहन्नम से बचने के लिए खुशखबरी आप को रसुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दी इस लिए आपको अतीक कहा गया।

१३. सबसे पहले नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपको लकब दिया।

१४. सबसे पहले उन्होंने खिलाफत का वलीअहद (उत्तराधिकारी) बनाया।

१५. इस उम्मत में सबसे पहले जन्नत में जाएंगे। (तारीखुल खुलफा)

आपका हुलिया -

हजरत आइशा से किसी ने पूछा कि हजरत अबूबक्र का हुलिया क्या था? आपने फरमाया – वह गोरे चिट्टे दुबले पतले आदमी थे। दोनों गाल उभरे हुए थे, कमर थोड़ा झुकी हुई थी, लुंगी कमर तक रुक नहीं सकती थी नीचे खिसक जाती थी, आंखें धंसी हुई, माथा ऊंचा, उंगलियों के जोड़ गोश्त से खली, औसत लम्बाई थी, मेंहदी का खिजाब लगाते थे।

आपकी बीवियां -

हजरत अबूबक्र के कुल चार बीवियों थीं। दो इस्लाम से पहले और दो इस्लाम के बाद। इस्लाम से पहले १. कुतैला बिन अब्दुलउज्जा २. रोमान बिन्त आमिर से और इस्लाम के बाद ३–हजरत अस्मा बिन उमैस ४. हबीबः बिन्त खारिजः से शादी की।

आपके लड़के लड़कियां।

हजरत अबूबक्र के छः लड़के लड़कियां हुईं।

१. हजरत अब्दुर्रहमान– उम्मेरोमान के लड़के थे। २. अब्दुल्लाह–कुतैला के लड़के थें।

३. मुहम्मद – असमा से पैदा हुए। ४. अस्मा – कुतैला की बेटी है। ५.आइशा – उम्मेरोमान से पैदा हुए। ६.. उम्मे कुलसूम – हबीबः बिन्त खारिज की लड़की है।

हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु

हुसैन पुत्र अ़ली (रज़ि०) पुत्र अब्दुलमुत्तलिब पुत्र हाशिम । आपकी कुन्यत अबू अब्दुल्लाह है। आप रसूलुल्लाह (सल्ल०) के नवासे हैं।

ज़ुबैर और दूसरे उलमा कहते हैं कि आपका जन्म शअ़बान ४ हिजरी में हुआ। ६ः और सात हिजरी की बात भी कही गई है लेकिन वह सही नहीं है।

जअ़फ़र बिन मुहम्मद कहते है कि हज़रत हसन के जन्म और हज़रत हुसैन के हम्ल (गर्भ) के बीच केवल एक पाकी का फ़ासला है। मैं (हाफ़िज़ इब्ने हजर) कहता हूं कि जब हज़रत हसन रमज़ान में पैदा हुए और हज़रत हुसैन शअबान के महीना में पैदा हुए तो इसका मतलब यह हुआ कि हज़रत हसन के जन्म के दो महीना बाद हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा पाक हुईं।

हज़रत हसन ने रसूलुल्लाह से हदीसें सुनी हैं और उनसे रिवायत भी किया है। अस्हाबे सुनन (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, नसई, इब्ने माजा) उनकी कुछ हदीसें अपनी किताबों में लाए हैं। इब्ने माजा और अबूयअ़ला ने उनसे यह हदीस रिवायत की है "वह फरमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को फ़रमाते हुए सुना किसी भी मुसलमान को कोई मुसीबत पहुंचती है चाहे वह पुरानी ही क्यों न हो गई हो वह इस पर इन्ना लिल्लाहि .... (हम अल्लाह के हैं और अल्लाह की तरफ लौट कर जाने वाले हैं) पढ़ता है तो अल्लाह तआ़ला उसको उसका सवाब देते हैं। लेकिन इस हदीस की सनद ज़ईफ़ (कमज़ोर) है।

अबू यअ़ला ने हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत नक़्ल की है कि हज़रत हसन और हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा आप (सल्ल०) के सामने कुश्ती लड़ रहे थे तो आप (सल्ल) ने कहा हुसैन पर अफ़सोस हज़रत फ़ातिमा ने कहा कि आप ने ऐसा क्यों कहा तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया हज़रत जिब्राईल ने कहा हुसैन पर अफ़सोस।

सही बुखारी में है कि हज़रत इब्ने उमर से किसी ने हज़रात हसनैन के बारे में सवाल किया तो आपने फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को फ़रमाते हुए सुना "वह दोनों दुन्या में मेरे गुलदस्ते हैं" अर्थात हुसैन व हसन।

सही बुखारी में हजरत अनस की रिवायत है कि वह कहते हैं कि हज़रत हसन व हुसैन आप (सल्ल०) से सबसे ज़ेयादा मुशाबेह (स्वरूप) हैं।

हज़रत हुसैन ने अपने पिता हज़रत अ़ली और अपनी मां हज़रत फ़ातिमा और मामू हाला पुत्र अबी हाला और उमर रजियल्लाहु अन्हुम से हदीसें नक़्ल की हैं। और उनसे हसन उनके लड़के अ़ली जैनुलआबदीन, फ़ातिमा, सुकैना और उनके पोते बाकिर व शअ़बी इकरिमा व सिनान आदि ने हदीसें नक़्ल की हैं।

हज़रत हसन कहते हैं कि मैं एक बार उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आया वह मिम्बर पर ख़ुत्बा दे रहे थे मैं मिम्बर पर चढ़ गया और मैंने कहा मेरे अब्बा के मिम्बर से उतरये और अपने अब्बा के मिम्बर पर जाइये। हज़रत हाफ़िज़ इब्ने हजर उमर ने कहा मेरे बाप का मिम्बर नहीं था। उन्होंने मुझे अपने पास बैठा लिया मैं अपने हाथों से कंकरियां खेल रहा था। जब वह मिम्बर से उतरे तो मुझे अपने घर ले गए तो उन्होंने पूछा कि तुम को किसने सिखाया था। मैंने कहा अल्लाह की क़सम मुझे किसी ने नहीं सिखाया था। हज़रत उ़मर ने कहा तुम पर मेरे बाप निछावर हो तुम हमारे पस आया करो। हज़रत हसन कहते हैं कि मैं एक दिन उनके पास गया वह हज़रत मुआ़विया रज़ि० के साथ एकान्त में बैठे हुए थे और हज़रत उमर के बेटे अ़ब्दुल्ला दरवाज़े पर खड़े थे। इब्ने उमर लौट पड़े तो मैं भी उनके साथ लौट गया। इसके बाद मेरी उनसे भेंट हुई तो उन्होंने मुझ से कहा कि तुम आए नहीं। मैंने कहा ऐ अमीरूल मोमिनीन! मैं आया तो आप हज़रत मुआ़विया के साथ अकेले बैठे हुए थे तो मैं हज़रत इब्ने उमर के साथ लौट गया। हज़रत उमर ने कहा कि तुम उमर के बेटे अ़ब्दुल्लाह से ज़्यादा लाइक़ हो कि तुम्हें (अन्दर आने की) इजाज़त दी जाए। जो कुछ हमें प्राप्त है उसमें अल्लाह तआ़ला का फिर तुम लोगों का एहसान है। इसको ख़तीब ने रिवायत किया है और उसकी सनद सही है।

एक दिन हज़रत अ़ब्दुल्लाह पुत्र अम्र पुत्र आ़स कअ़बे के साए में बैठे हुए थे, उन्होंने हज़रत हुसैन को आते हुए देखकर फ़रमाया – आसमान वालो के यहां यह आदमी ज़मीन वालों में सबसे ज़्यादा महबूब व पसन्दीदा है।

हज़रत हुसैन मदीना मे ठहरे रहे। पहली बार अपने पिता के साथ कूफा गए उनके साथ जंगे जमल फिर जंगे सिफ्फीन और फिर ख़ारजियों के साथ जंग में शामिल रहे अपने पिता के साथ वह लगे रहे यहां तक कि उनको शहीद कर दिया गया, फिर वह अपने बड़े भाई हज़रत हसन के साथ रहे यहां तक कि उन्होंने हज़रत मुआविया से समझौता कर लिया इसके बाद वह अपने भाई के साथ मदीना आ गए हज़रत मुआविया के मृत्यु तक मदीना में रहे। उनके मौत के बाद मक्का चले गए। फिर उनके पास ईराक़ वालों के बहुत से पत्र आए कि उन्होंने हज़रत मुआविया के देहान्त के बाद आपसे बैअत कर ली है। इस पर आपने अपने चचेरे भाई मुस्लिम पुत्र अक़ील को उनके पास भेजा और उन्होंने बैअत ली। बैअत लेने के बाद उन्होंने आपको बुला भेजा और आपका वहां जाना उनके शहीद होने का कारण बना।

अम्मार पुत्र यहया दुहनी कहते हैं कि मैंने अबूजअफर मुहम्मद पुत्र अली पुत्र हसन से कहा कि आप मुझे हज़रत हुसैन के शहीद होने की घटना इस तरह बताइये जैसे कि मैंने अपनी आंखों से स्वयं देखा है। उन्होंने कहा जब हज़रत मुआविया की वफ़ात हुई तो उस समय वलीद पुत्र उत्बा पुत्र अबू सुफ़यान मदीने का गवर्नर था। उसने हज़रत हुसैन को उसी रात बैअत लेने के लिए बुलाया। उन्होंने कहा थोड़ा मुझे समय दो और मेरे साथ नर्मी करो तो उसने आपको मोहलत दे दी। तो हज़रत हुसैन मक्का चले गए वहां उनके पास कूफा वालों के ख़ुतूत आए कि हमने अपने आपको आपके लिए रोके रखा है और हम पूर्व गवर्नर के साथ जुमा की नमाज़ नहीं पढ़ते हैं तो आप हमारे पास आइये। अबूजअफर कहते हैं कि नोअमान पुत्र बशीर अन्सारी उस समय कूफा के गवर्नर थे तो हज़रत हुसैन रज़ि० ने मुस्लिम पुत्र अक़ील को भेजा और उनसे कहा कूफा जाओ और पता लगाओ कि हक़ीक़त क्या है अगर यह बात सही होतो मैं कूफा आऊं।

मुस्लिम वहां से मदीना आए और वहां से दो रास्ता दिखाने वाले लिए वह दोनों उन्हें ख़ुश्की के रास्ते से लेकर चले। उनमें से एक प्यास के कारण मर गया। इस प्रकार मुस्लिम कूफा पहुंचे और औसजा नामक व्यक्ति के यहां ठहरे। जब कूफा वालों को मुस्लिम के आने की सूचना मिली तो वह उनके पास पहुंचे और बारह हज़ार लोगों ने उनके हाथ पर बैअत की। एक व्यक्ति जो यज़ीद पुत्र मुआविया को पसन्द करता था नोअमान बिन बशीर गवर्नर कूफा के पास गया और कहा तुम कमज़ोर हो या कमज़ोरी दिखा रहे हो शहर बर्बाद हो रहा है तो नोअमान ने उससे कहा मैं अल्लाह तआला के हुक्म मानने में कमज़ोर हूं मुझे इससे पसन्दीदा है कि मैं उसकी नाफ़रमानी में ताकतवर हूं मैं पर्दे को फाड़ने वाला नहीं हूं।

उस आदमी ने इसको यज़ीद के पास लिख भेजा तो यज़ीद ने अपने सरहून नामक ग़ुलाम से मश्वरा किया। उसने कहा कूफा को केवल उबैदुल्लाह बिन–ज़ियाद संभाल सकता है। यज़ीद उबैदुल्लाह से नाराज़ था और उसको बसरः से मअज़ूल (पदच्युत) करना चाह रहा था। यज़ीद ने उसके पास लिखा कि मैं तुम से खुश हूं और तुम्हें कूफ़े का भी गवर्नर बनाता हूं और उसको हुक्म दिया कि मुस्लिम को ढूंढे और कामयाब हो जाए तो उन्हें क़त्ल कर दे।

उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद कुछ बसरा के सरदारों के साथ कूफा आया वह चेहरे पर ढांठा बांधे हुए था। वह लोगों के पास गुज़रता और उनको सलाम करता तो सब लोग जवाब में कहते रसूलुल्लाह के बेटे तुम पर सलाम हो। वह लोग समझ रहे थे कि हज़रत हुसैन पुत्र अली आए हुए हैं। जब उबैदुल्लाह महल पहुंचा तो उसने अपने ग़ुलाम को तीन हज़ार दिरहम दे कर कहा कि तुम यह रूपये लेकर जाओ और उस व्यक्ति का पता लगाओ जो बैअत ले रहा है उससे कहना कि मैं हिम्स से आया हूं और उनसे बैअत करके यह रूपये उनके हवाल करो। ग़ुलाम बराबर उनका पता लगाता रहा यहां तक कि लोगों ने उनको एक बूढ़े का पता दिया जो बैअत ले रहा था उसने उनसे अपनी बात रखी। उसने कहा मुझे ख़ुशी हुई कि अल्लाह तआला ने तुझको यहां पहुंचा दिया और मुझे इस बात का दुख है कि हमारा मामला अभी मज़बूत नहीं हुआ। फिर उसको मुस्लिम बिन अक़ील के पास ले गया उसने उनसे बैअत की और उन्हें माल दिया। वहां से आकर उस ने उबैदुल्लाह को पूरी बात सुनाई। मुस्लिम उबैदुल्लाह के कूफा आने के बाद दूसरे मुहल्ले चले गए और हानी पुत्र उरवः मुरादी के यहां ठहरे।

उबैदुल्लाह ने कूफा वालों से कहा क्या बात है हानी पुत्र उरवः मिलने नहीं आए? मुहम्मद पुत्र अशअस कुछ कूफा वालों के साथ हानी के पास गए

वह अपने दरवाज़े पर ही बैठे थे। उनसे उन लोगों ने कहा कि गवर्नर आपको याद कर रहे हैं और वह कह रहे हैं कि आप उनसे मिलने नहीं आए तो आप जल्द ही उनके पास जाइये। इस पर वह इन लोगों के साथ उबैदुल्लाह के पास पहुंचे, उसके पास क़ाज़ी शुरैह भी बैठे हुए थे। उबैदुल्लाह ने हानी को देखकर शुरैह से कहा कि हलाक होने वाला व्यक्ति अपने पैरों पर चल कर आया है।

जब हानी ने सलाम किया तो उसने पूछा कि ऐ हानी ! मुस्लिम बिन अक़ील कहाँ हैं? उन्होंने कहा मुझे नहीं पता। तो उसने उस ग़ुलाम को बुलाया जिसने मुस्लिम को माल दिया था। उसको देखते ही हानी भौंचक्का रह गए और उन्होंने कहा गवर्नर साहब मैंने उन्हें अपने घर नहीं बुलाया बल्कि वह खुद हमारे घर आ गए। उसने कहा ठीक है उन्हें बुलाकर लाओ। अब हानी ज़रा ठिठके तो उसने इन्हें अपने निकट बुलाया और डण्डे से उनकी पिटाई की और जेल में बन्द करने हुक्म दिया। हानी की क़ौम को इसकी ख़बर मिली तो उन्होंने महल को घेर लिया। उबैदुल्लाह ने शोर हंगामा सुनकर क़ाज़ी शुरैह से कहा कि उन लोगों से कहो कि मैंने उन्हें केवल मुस्लिम बिन अक़ील के बारे में पता करने के लिए रोक लिया है वरना मुझसे उन्हें कोई तकलीफ़ नहीं पहुंचेगी। यह बात सुनकर लोग चले गए। मुस्लिम बिन अक़ील को जब पूरा हाल मालूम हुआ तो उन्होंने थोड़ी ही देर में उनके पास चालीस हज़ार कूफ़ा वाले इकट्ठा हो गये। इस पर उबैदुल्लाह ने कूफ़ा के रईसों व सरदारों को बुलाया जब वह महल में इकट्ठा हो गए तो उन से उसने कहा कि अपने घर ख़ानदान वालों की निगरानी करें और उनको रोकें उन लोगों ने वहां से जाकर अपने आदमियों से बात की तो वह लोग धीरे–धीरे खिसकने लगे यहां तक कि शाम तक मुस्लिम के साथ थोड़े ही लोग बचे। जब थोड़ा अन्धेरा हुआ तो वह लोग भी निकल लिए। जब वह अकेले रह गए तो रात में गलियों में भटकने लगे। आप एक औरत के दरवाज़े पर पहुंचे और उससे पानी मांगा। पानी पीने के बाद जब आप खड़े रहे तो उसने पूछा कि ऐ अल्लाह के बन्दे तुम परेशान दिख रहे हो क्या बात है? आपने कहा मैं मुस्लिम बिन अक़ील हूं क्या तुम्हारे यहां ठहर सकता हूं। उसने कहा हां अन्दर आइये। उनका एक लड़का मुहम्मद बिन अशअस के आज़ाद किये हुए गुलामों में से था, उसने उसी समय मुहम्मद पुत्र अशअस को सूचना दे दी। मुस्लिम के कुछ समझने से पहले ही घर को घेर लिया गया। यह हालत देखकर वह तलवार लेकर निकल पड़े। उन्हें मुहम्मद पुत्र अशअस ने शरण दे दी तो आपने भी तलवार रख ली। वह उन्हें उबैदुल्लाह के पास लेकर महल पहुंचा। उबैदुल्लाह ने हुक्म दिया कि इन्हें महल के ऊपर ले जाओ फिर उसने उन्हें और हानी पुत्र अरवः को क़त्ल कर दिया और दोनों को फांसी पर लटका दिया। उसी के बारे में शाइर ने यह कहा है – अगर तू नहीं जानता कि मौत किसे कहते हैं तो मुस्लिम और अक़ील को बाज़ार में देख।

हज़रत हुसैन को उस समय इसकी ख़बर मिली जब कि वह क़ादसिया से तीन मील की दूरी पर थे वहाँ आपसे हुई पुत्र यज़ीद तमीमी मिला उसने कहा आप वापस लौट जाइये वहां जाना आपके लिए अच्छा नहीं है। और पूरी बात उसने आपसे बताई। इस पर हज़रत हुसैन ने लौटने का इरादा किया। लेकिन मुस्लिम के भाइयों ने कहा अल्लाह की क़सम! हम वापस नहीं लौटेंगे यहां तक कि भाई के क़त्ल का बदला लें या ख़ुद भी क़त्ल हो जाएं। इस पर वह लोग चल पड़े। उबैदुल्लाह ने उनका मुक़ाबला करने के लिए एक लश्कर तैयार किया था उससे करबला के मैदान में भेंट हो गई। आप करबला के मैदान में उतर पड़े आपके साथ ५४ घुड़सवार और लगभग सौ पैदल थे। उनके सरदार उमर बिन सअ़द बिन अबी बक्क़ास से हज़रत हुसैन ने भेंट की। उबैदुल्लाह ने उनको रै का ज़िम्मेदार बनाया था और उससे कहा था कि जब तुम हुसैन की जंग से लौटोगे तो तुम्हें उस पर बरक़रार रखा जाएगा। हज़रत हुसैन (रज़ि)ने उससे कहा कि तुम मेरी तीन बातों में से एक मान लो। (१) या तो मुझे किसी भी सरहद की तरफ़ चले जाने दो। (२) या मुझे मदीना जाने दो। (३) या मुझे यज़ीद बिन मुआविया के पास भेज दो यहां तक कि मैं अपना हाथ उसके हाथ में रख दूं। उसने आपकी बात मानली और उबैदुल्लाह को उसने लिख भेजा। उसने लिखा कि मैं उनकी बात नहीं मानूंगा यहां तक कि वह मेरे हाथ पर बैअ़त कर लें। हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु इस पर राज़ी न हुए। तो उन लोगों ने हज़रत हुसैन से युद्ध किया यहां तक कि आप अपने साथियों के साथ शहीद

(शेष पृष्ठ ३४ पर)